साहित्योदय-ग्रंथ-माला—पुष्प ६

स्वामी सत्यदेव

साहित्योदय-ग्रंथ-माला पुष्प, ६

स्वतंत्रता की पुकार
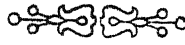
[राष्ट्रीय भावों को जागृत करनेवाली उत्तम कविताओं का सुन्दर संग्रह]

संपादक

भवानीप्रसाद गुप्त

प्रकाशक

साहित्योदय-कार्यालय

इलाहाबाद

प्रथम संस्करण १००० | सर्व-स्वत्व-संरक्षित सं० १९९० | मूल्य १)

प्रकाशक—
साहित्योदय, कार्यालय
प्रयाग

निवेदन

इस पुस्तक के छपकर तैयार होने में अनेक कठिनाइयाँ पड़ीं, किन्तु उद्देश्य यही था कि यह पुस्तक किसी तरह जल्द स्वदेश प्रेमियों के हाथों में विराजमान हो, इस कारण इस पुस्तक में कुछ तो प्रूफ़ संबंधी अशुद्धियाँ रह गई हैं और कुछ प्रेस की असावधानी से छपते समय मात्रायें टूट गयी हैं। पाठकों से निवेदन है कि उसे सुधार कर पढ़ लेने की कृपा करेंगे। अगले संस्करण में यह त्रुटियाँ न रहने पायेंगी।

—संपादक

मुद्रक—
अभ्युदय प्रेस
प्रयाग।

समर्पण

सेवा में—

श्रीमान् स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक

श्रद्धेय स्वामी जी !

मुझे वह दिन कभी नहीं भूलेगा जब कि मैं आपके साथ झूसी (प्रयाग) से गंगापार हो रहा था। उस समय आपने जो हृदय-ग्राही उपदेश मुझे दिये थे वे सब मेरे हृदय पर लिखे हुये हैं। वास्तव में उस गंगा-जल-प्रवाहित नौका में दिये हुये उपदेश मुझे इस गंगा-जल-रूपी संसार में नौका के समान भाषित हो रहे हैं। आपके जीवन-पथ-प्रदर्शक उपदेशों ने मुझे बहुत कुछ सहारा दिया है। इसका मैं आजन्म ऋणी हूँ। आपके उपदेशामृत का पान तो कर लिया किन्तु इसके विपरीत हार्दिक इच्छा रहते हुये भी मैं अपनी सेवाओं से आपको संतुष्ट न कर सका, इसका मुझे खेद है और इसी लिये मुझे भय है कि आप इस सेवक को भूल न जायँ ! इसी भय से भयभीत होकर तथा आपकी स्मृति के लिये यह तुच्छ भेंट आपके कर-कमलों में प्रेम के साथ समर्पण करता हूँ। आशा है यह राष्ट्रीय-पुष्पांजलि स्वीकृत होगी।

सेवक

भवानीप्रसाद गुप्त

स्वामी सत्यदेव परिव्राजक।

स्वतंत्रता का परिचय

ले०—रमाशंकर अवस्थी

आज गुलामों की दुनियां से स्वतंत्रता की पुकार उठी है। ३१ करोड़ गुलाम, जिनके ६२ करोड़ हाथ हैं, व्याकुल हो उठे हैं, और आकुल हो उठे हैं अपने स्वत्वों के संग्राम में बलिदान देने के लिए। परवशता की जंजीरें तोड़ डालने के लिये। पशु-बल के साथ संग्राम छिड़ा हुआ है। आज़ादी के पुजारी झूम झूम कर अपनी बलि चढ़ा रहे हैं। डीवेलरा ने मरमिटने का संदेशा भेजा है। कमाल पाशा ने नंगी तलवार चमका कर थके हुए सिपासियों को ललकारा है। लेनिन ने गुलामी की छूत फैलाने वालों के मुँह पर थप्पड़ मारा है। संसार भर में आज़ादी की लहर उठ खड़ी हुई है।

वह देखो, ख़ून की प्यासी स्वतन्त्रता देवी भारत की ओर आरही है। बढ़ो, अपना अपना बलिदान लेकर आगे बढ़ो! स्वाधीनता के पुजारियो! प्राणों की भेंट चढ़ा कर गुलामी के बंधन काट डालो। ६२ करोड़ भुजाओं के पराक्रम को प्रकट करदो। मर-मिटो, लेकिन, दासता की सन्तान मत कहलाओ!

जगो, उठो, चारों ओर "स्वतंत्रता की पुकार" गूँज रही हैं!

जो काम लाखों सिपाही और उन्हें कमाण्ड देनेवाले बड़े बड़े २ बहादुर सेनापति पूरा नहीं कर सकते; उसे एक सच्चा शहीद, एक मस्ताना फ़कीर सहज ही अपनी बांसुरी बजाकर आन की में बात पूरा कर डालता है। उसकी बांसुरी कहां बजती है? उसके सुरीले सुर, उसकी आरोही-अवरोही कहां से कहां तक जाती है? सुनते हैं, उस शहीद की बांसुरी आधीरात के अंधेरे में किसी एक अन्तस्तल से फूंकी जाती है और देश पर बलि हो जानेवाले नवयुवकों की नाड़ियों में प्रतिध्वनित होकर क्रांतिमय रणस्थल में गूंज उठती है। उसके सुर राज-सत्ता को थरथरा देते हैं, उसकी आरोही-अवरोही जुल्म का अंत करके साम्यवाद में लीन हो जाती है। बैंड बाजे के बड़े बड़े ढोल, तलवारों और संगीनों की खड़खड़ाहट या तोप के गोलों की तड़तड़ाहट आप से आप इस बांसुरी के आगे ख़ामोश हो जाती है। फ्रांस और रूस की राज्यक्राँतियों ने इस सुरीली बांसुरी को सुना था। इसे सुनकर वहां के अन्धे सत्ताधिकारी बहिरे और गूंगे हो गये थे। बाँसुरी के फूंकनेवाले लटकाये गये, जलाये गये, किन्तु उनकी हड्डियों से, उनके ख़ून के क़तरों से, उनके क़बरों से वही आजादी के सुर बराबर निकलते रहे, नवयुवकों की धमनियों में दौड़ते रहे, शांति को क्रांति और क्रांति को शांति बनाते रहे।

भारत के राष्ट्रीय स्टेज पर आज वही सीन दिखाई दे रहा है। हज़ारों बरस की गुलामी क़ाफ़ूर हो रही है। क्यों? इसी बांसुरी की मस्तानी तान से, उसी आरोही-अवरोही से

या राष्ट्रीय ज्वार-भाटे के उतार-चढ़ाव से। भारत की बांसुरी सच्ची बांसुरी है, काल्पनिक नहीं। यहां सुषुप्तावस्था के सन्नाटे में, कुछ ही दिन हुए, मोहन ने बांसुरी फूंकी थी। उसे सुनकर जो जहाँ बैठा था, उठ कर उस मस्त फ़क़ीर के पास दौड़ा गया, तन बदन की किसी को सुध-बुध न रही। बाप ने लड़के को, लड़के ने बाप को छोड़ दिया, किसी ने राजसी ठाट-बाट को ठुकरा दिया, तो किसी ने अपने आलीशान महल में आग लगा दी। बाँसुरी के सुनने के लिये किस मनहूस के दिल में बेकली न होती ? कोई कोई तो परतन्त्रता के पिंजड़े में बैठ कर स्वतन्त्रता की झलक देखते हुए कहने लगा —

मक़्बूलये गवर्न्मेन्ट अकबर अगर न होता।
उसको भी आप पाते गान्धी की गोपियों में॥

फ़क़ीर एक पेड़ के नीचे नङ्ग धुड़ङ्ग खड़ा था। वहीं आस पास ये लोग जा कर खड़े हो गये। बांसुरी बराबर बज रही थी। उसकी मीठी तान ने लोगों को क्या से क्या कर दिया, हम नहीं कह सकते। बांसुरी के सुरों में एक ही गीत था, एक ही राग था, एक ही तान थी, और वह थी—

स्वतंत्रता की पुकार

ख़ासी समा बंध गयी। बड़ा असर हुआ। सबी अपनी अपनी बांसुरी मोहन के साथ फूँकने लगे। सब बांसुरियों में सामंजस्य था, सब की उँगलियाँ एक साथ उठती और एक साथ गिरती थीं। सब में से स्वतन्त्रता की पुकार ही निकलती थी। यह स्वप्न नहीं था, इतना सच्चा था, है और

रहेगा, जितना कि दिन के बाद रात और रात के बाद दिन का होना।

स्वतन्त्रता की पुकार दशों दिशाओं में गूँज उठी। उसने क्या किया, इसे बतलाने की आवश्यकता नहीं। पर इतना कह देना अनावश्यक न होगा कि उसने हम लोगों को आत्म-शुद्धि करके हमें सदा के लिये उस मार्ग का पथिक बना दिया, जहां हम अपने प्राचीन सुसभ्य धनधान्य-सम्पन्न स्वतन्त्र भारत की झलक पा सकते हैं, जहां हम उजड़े हुए चमन को फिर हरा भरा देख सकते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक के संग्रहकार ने उन्हीं मस्त फ़कीरों की बांसुरियों के कुछ बिखरे हुए सुरों को एकत्रित किया है। हमें विश्वास है, इस छोटे से संग्रह से सोते हुए जागेंगे, बैठे हुए खड़े होंगे और भूले-भटके अपने मंज़िले मकसूद – इष्ट स्थान—पर पहुंच जायँगे।
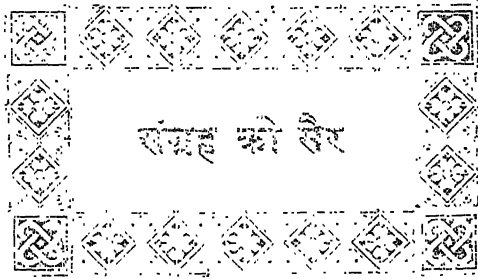
इस संग्रह की सैर कर मुझे जो आनन्द मिला वह अकथनीय है। यों तो आज कल राष्ट्रीय कविताओं के अनेक संग्रह प्रकाशित हुए हैं, किन्तु शायद ही इतना सुन्दर संग्रह और कहीं छपा हो।

इस "संग्रह" में क्या है ? भारत माता के सच्चे सपूतों की, कृष्णागार नामक तपोभूमि के तपस्वियों की, गगन-भेदी पुकार है उनके दग्ध हृदय का अग्निमय उद्गार है, या यों कहिये कि उनके हृदयरूपी ज्वालामुखी पर्वत का भयङ्कर ध्वंशकारी अग्निस्फुलिंग है।

आज कल "राष्ट्रीय-कविताओं" का जिस तीव्रतापूर्वक विकास हो रहा है वह देश के लिये बड़ा ही लाभदायक है। लेखों और व्याख्यानों से एक सोये हुए देश की जितनी जागर्त्ति नहीं हो सकती उतनी फड़कती हुई कविताओं से होना सम्भव है। यह सभी मानने को तैयार हैं।

पहिले ज़माने में युद्ध के समय सैनिकों को उत्साह दिखाने के लिये "करखा" गाये जाते थे। उस वीर-रस

पूर्ण करखे को सुनते ही हतोत्साह हृदय उत्साहित होकर फड़क उठता था और सैनिक आगे बढ़ बीरता के साथ सिर कटाने लग जाते थे।

हमारे पाठकों से "आल्हा" नामक ग्रन्थ का नाम छिपा न होगा। साहित्य की दृष्टि से चाहे इस ग्रन्थ के पद्य अच्छे न हों पर "बीर-साहित्य" की दृष्टि से यह बिना संकोच के एक उत्तम ग्रन्थ कहा जा सकता है। आल्हा में अपूर्व ओज भरा हुआ है। ऐसा कोई मनुष्य न होगा जो इसको सुनते ही या पढ़ते ही उत्तेजित न हो जाता हो।

कहना न होगा कि, इस समय भी, इस अहिंसात्मक जंग में राष्ट्रीय कविताओं ने जनता में जैसा उथल-पुथल मचा दी है वह वर्णनातीत है। अनेक बार देखा गया है कि ऐसी कविताओं को सुनत-सुनते जनता उत्तेजित हो उठो है और अपने मस्त हृदय को न रोक सकने के कारण अपने राष्ट्रीय सैनिकों के साथ जेल जाने को तैयार हो गयी है।

राष्ट्रीय-कविता करना केवल "महाकवि" या "कवि-सम्राट्" के हिस्से में नहीं है। एक सच्चा देश भक्त जिसके हृदय में देश भक्ति की मधुर झंकार गूँज रही हो, और जिसको देश की सच्ची स्थिति का भरपूर ज्ञान हो वही अपने हृदय का उद्‌गार व्यक्त करने में सिद्धहस्त कवियों की अपेक्षा कहीं अधिक सफलता पा सकता है। वह उद्‌गार चाहे गद्य के रूप में हो या पद्य के। गद्दीदारकुरसी पर महल या बंगले में बैठे हुए कविसम्राट् को जेल का पूरा पूरा अनुभव कहां? उनको रामबाँस कूटने के समय होनेवाले स्वर्गीय सुखों का पता कहां? फिर उन्होंने यदि अपनी

कल्पना शक्ति को कष्ट देकर कुछ लिख मारा तो वह लिखना धूप से तप्त दोपहर में गायी हुई भैरवी के समान होगा। अधिक क्या कहें "बाँझ की जान प्रसव की पीरा" मात्र कह कर ही चुप रहना पड़ता है। अतएव राष्ट्रीय कविता करने के सर्वथा अधिकारी वे ही हैं और रहेंगे, जिनका हृदय राष्ट्रीयता के रंग में सराबोर होगा। कहने का तात्पर्य यह है कि इस "स्वतन्त्रता की पुकार" में कविसम्राट् की "मधुर कोमल-कान्त-पदावली नहीं; अलङ्कारों की मधुर झंकार नहीं; बल्कि इसमें देशभक्त वीरों के गगन-भेदो कर्कश चीत्कार हैं। जिसमें न लय है, न लोच है! पर है क्या, हृदयतल-स्पर्शी, किन्तु ओजपूर्ण भाव। आशा है, ऐसे अमूल्य 'संग्रह' को जनता प्यार की दृष्टि से देखेगी।

यह "स्वतन्त्रता की पुकार" हमारे सहृदय मित्र भवानी-प्रसादजी गुप्त के परिश्रम का फलस्वरूप है। गुप्त जी अपने परिश्रम में सफल हुए हैं यह बिना किसी हिच-किचाहट के कहा जा सकता है।

गुप्तजी का एक मात्र उद्देश इस पुस्तक द्वारा जनता में जागर्त्ति फैलाना है। हमें आशा है कि इस पुस्तक का प्रचार प्रत्येक देशभक्त में अवश्य होगा। पुस्तक की छपाई, सफ़ाई आपकी सुरुचिता के अनुसार ही होगी।

प्रार्थी—

ऊपरडीह, गया। मोहनलाल महत्तो गयावाल 'वियोगी'

सम्पादकीय
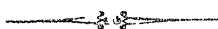
सर्व शक्तिमान परमात्मा के अचल राज्य में भी मनुष्य जाति की रचना बिलकुल स्वतंत्र है। अर्थात् मानवीय समाज के सम्राट, न्यायकारी ईश्वर ने मनुष्यों को स्वाधीन बनाया है। हां, कुछ कर्म बन्धन अवश्य हैं परन्तु उसमें भी मनुष्य पूर्णतया स्वतंत्र ही है। ज्ञात हुआ कि स्वाधीनता मनुष्य का जीवनसिद्ध अधिकार है। इसको भगवान् तिलक ने भी स्पष्ट शब्दों में कहा है।

यह प्रायः सभी लोग जानते हैं कि जो मनुष्य-समाज जिस देश का वासी है, जहां पर उसकी जन्मभूमि है, जहां के अन्न जल से उसके जीवन की रक्षा हुई है, वह मनुष्य-समाज उसी देश का राज्याधिकारी बन सकता है। किसी दूसरे देश के शाशन करने का अधिकार उसे कदापि नहीं है। इसके विपरीत कार्य करनेवाला मनुष्य-समाज ईश्वरीय नियम का बाधक-स्वरूप है।

जिस समय विदेशियों ने भारतवर्ष पर अधिकार जमा कर भारतीय जनता को अपंग बनाया है, वह समय भारत के मानवीय समाज के लिये बड़ा ही अनिष्टकारी था, तभी तो स्वदेश वासी जलते हुये दिए में पतिंगे के समान भस्म हो गये। इनके अक़्ल पर ऐसा पत्थर पड़ा कि ये अपने को

भी भूल गये। धर्म कर्म सब सत्यानाश हो गया, कला कौशल का तो ठिकाना ही क्या, इसका जी तो इतना घबड़ाया कि इसने अपना साम्राज्य सात समुद्र पार जा जमाया। नई सभ्यता ने अपना आतंक ऐसा जमाया कि पुरानी सभ्यता का दिवाला निकल गया। कहने का तात्पर्य यह कि, इस मोहनी मंत्र ने ऐसी सफ़ाई के साथ असर डाला कि हृदय में अनुभव करने के सिवा कहते नहीं बनता, भाग्यहीन भारतवासियों ने अज्ञानवश क्षणिक सुख के लोभ में पड़कर अपने तन, मन और धन को नाश कर दिया और ऐसे मतवाले हुये कि अपनी जगह को त्याग कर पीछे खिसक पड़े तथा अपनी मान-मर्यादा को भ्रष्ट करते हुये पराधीनता के पिंजड़े में पूर्णतया फंस कर भली भांति परतन्त्र बन बैठे।

सच कहा है—

पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं।

वास्तव में, यही वाक्य चरितार्थ हुआ। उधर विदेशियों ने भी अपनी प्यास ख़ूब बुझाई। भोले भाले भारतवासियों को सिर से पैर तक अपने ही सा बना लिया और अपने अन्यायपूर्ण अधिकारों द्वारा भारतीय जनता के कोमल हृदय को विह्वल कर डाला तथा विध्वंशकारी कानूनों द्वारा कठिन वेदना देकर अपने अधर्म और अन्याय का परिचय सारे संसार को दे दिया, लेकिन, अन्याय की हस्ती ही क्या? समय ने पल्टा खाया। हिन्दुस्तानियों की आंखें खुल पड़ीं। विदेशियों के दिये हुये अन्यायपूर्ण दुखों का भार असह्य हो गया। फिर क्या था; पोल खुल पड़ी, सारे देश में खलबली मच

गयी, लोग अपने पैरों खड़े होने की चेष्टा करने लगे। अन्याय पूर्ण कार्यों की दोहाई देते हुये वर्तमान समय का भयानक दृश्य सामने आकर उपस्थित हो गया, अन्यायियों की धज्जियां उड़ने लगीं, चारों तरफ़ से आज़ादी की छोटें आने लगीं।

संसार में नवीन जागर्त्ति हो गई। सब लोग मातृभूमि की आराधना करने लगे। लाखों सपूतों ने स्वाधीनता के हेतु अपने को बलिदान कर दिया। थोड़े ही काल में सारे संसार में 'स्वतंत्रता की पुकार" मच गयी।

भारतवर्ष की ३२ करोड़ जनता ने अपने भयंकर नाद द्वारा अधिकारियों के कान खड़े कर दिये। अन्याय और अत्याचार का फल उनके सामने रख दिया।

यह ध्वनि जो ३२ करोड़ मुख द्वारा प्रतिध्वनित हुई है जिसको कि देश पर बलि होनेवाले देशभक्तों ने राष्ट्रीय-नाद का रूप देकर मरी हुई जनता में जीवन डाला है। यह कोई साधारण ध्वनि नहीं। यह स्वाधीनता की प्रचंड ध्वनि है। स्वतंत्रता की हृदय-विदारक पुकार है, जिसे कि हम पुस्तक रूप में "स्वतंत्रता की पुकार" के नाम से स्वदेश-प्रेमियों के सम्मुख उपस्थित कर रहे हैं। हम आशा रखते हैं कि हमारे प्रत्येक भाई इसे पढ़कर यथोचित लाभ उठाने से बंचित न रहेंगे।

हम यह भी कह देना चाहते हैं, कि इसका प्रत्येक शब्द हृदय में राष्ट्रीय भावों को जागृत करनेवाला है। इसकी प्रत्येक कड़ियां स्वराज्य पथ पर अग्रसर करनेवाली हैं इसके पद गुलामी की जंजीर को तोड़नेवाले हैं। इसकी ध्वनि निश्चित और सच्चे रास्ते पर चलानेवाली है। इसके भाव तथा उद्देश्य संसार में सच्ची शांति और सुख फैलानेवाले हैं। मेरी

हार्दिक इच्छा यही है कि इस पुस्तक के पाठक इससे उचित लाभ उठावें और तन, मन, धन, से स्वदेश सेवा में निमग्न हों। अपने लक्ष्य को समझें और स्वतंत्रता की पुकार द्वारा गुलामी की कठिन जंजीर को तोड़ते हुये प्रजातंत्र को स्थापित करें।

हमारे बहुत से पाठक इस पुस्तक की राह बहुत दिनों से देख रहे हैं, क्योंकि इसकी सूचना उन्हें पहले ही मिल चुकी है, किन्तु दुःख है कि, अनेक झंझटों से इस पुस्तक की तैयारी में इतना विलंब हुआ। आशा है, पाठक गण मुझे क्षमा प्रदान करेंगे।

भवानीप्रसाद गुप्त

कृतज्ञता

इस राष्ट्रीय उद्यान में जिन महानुभावों के पुष्प चुने गये हैं उनका मैं हृदय से ऋणी और आभारी हूं; साथ ही मैं उन पत्र-पत्रिकाओं के संपादकों का भी कृतज्ञ हूं जिनके सुमन संचय द्वारा यह उद्यान तैयार हुआ है। अतिरिक्त इसके मैं भारत के प्रसिद्ध राष्ट्रीयनेता स्वामी सत्यदेवजी का विशेष आभारी हूं जिन्होंने कि इस सुमन-संग्रह का समर्पण भार स्वीकार किया है। बाद को मैं हिन्दी साहित्य के सुलेखक श्रद्धेय गुरु श्री वियोगीहरि का आजन्म ऋणी हूं जिनकी अत्यंत कृपा से इसकी भावमयी भूमिका लिखी गई है। मैं अपने सहृदय मित्र पं० मोहनलाल जी महतो को बिना धन्य-वाद दिये नहीं रह सकता जिन्होंने कि उद्यान की तैयारी के पूर्व ही सुमन निरीक्षण कर अपनी राय प्रकट की है, जो "संग्रह की सैर" नाम से इस पुस्तक में छपी है। मैं अपने दो मित्रों श्री० सुखदेव प्रसाद जी 'बिसमिल' प्रयाग निवासी (उर्दू के प्रसिद्ध शायर) तथा बा० नवलकिशोरजी गोयल को भी हृदय से धन्यवाद देता हूं, कि जिन लोगों ने समय २ पर राष्ट्रीय फूलों के चुनने में उचित सम्मति प्रकट कर कृतार्थ किया है। बाद को मैं अपने सहृदय मित्र बा० रामपदार्थ जी गुप्त को अनेक धन्यवाद देता हूं जिन्होंने इस सुमन-संग्रह में मेरे साथ विशेष परिश्रम किया है। इसका कुछ श्रेय हमारे मित्र श्रीजगन्नाथ गोस्वामी पर भी है।

कृतज्ञ—

भवानीप्रसाद गुप्त।

वन्देमातरम्

वन्देमातरम् ।

सुजलां सुफलां मलयज शीतलां,

सस्य स्यामलां मातरम् ॥ बन्देमातरम् ॥

शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनीं,

फुल्ल-कुसुमित द्रुमदल शोभिनीं ।

सुहासनीं सुमधुर भाषिणीं,

सुखदां वरदां मातरम् ॥ बन्देमातरम् ॥

त्रिंश कोटि कण्ठ कलकल निनाद कराले ।

द्वित्रिंश कोटिभुजैधृ त खर करवाले ॥

के बले मा, तुमि अबले ?

बहु बल धारिणीं नमामि तारिणीं ।

रिपु दल वारिणीं मातरम् ॥ बन्देमातरम् ॥

तुमि विद्या तुमि धर्म तुमि हृदि तुम मर्म

त्वंहि प्राणा शरीरे;

बाहुते तुमि मा शक्ति,

हृदये तुमि मा भक्ति,

तोमारेई प्रतिमा गड़ि मन्दिरे मन्दिरे

त्वंहि दुर्गा दश प्रहरण धारिणीं,

कमला कमल दल विहारिणीं,
वाणी विद्या दायनीं नमामि त्वाम्
नमामि कमलां अमलां अतुलां सुजलां,
सुफलां मातरम् ॥ बन्देमातरम् ॥
श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषितां,
धरणीं भरणीं मातरम् ॥ बन्देमातरम् ॥

—बंकिमचंद्र चटर्जी

भारतवर्ष

जय जय प्यारा भारत देश।

जय जय प्यारा जग से न्यारा,
शोभित सारा देश हमारा।
जगत-मुकुट जगदीश-दुलारा,
जय सौभाग्य-सुदेश ॥ जय जय०

प्यारादेश जय देशेस,
अजय अशेष सदय विशेष।
जहां न सम्भव अघ का लेश,
सम्भव केवल पुण्य प्रवेश ॥ जय जय०

स्वर्गिक शीश फूल पृथ्वी का,
प्रेम मूल प्रिय लोक त्रयी का।

सुललित प्रकृति-नटी का टीका,
ज्यों निशि का राकेश ॥ जय जय०
जय जय शुभ्र हिमाचल गंगा,
कलरव निरत कलोलिन गंगा ।
भानु प्रताप-चमत्कृत अंगा,
तेज पुञ्ज तप वेश ॥ जय जय०
जग में कोटि कोटि जुग जीवें,
जीवन सुलभ अमी रस पीवें ।
सुखद वितान सुकृत का सीवै,
रहै स्वतन्त्र हमेश ॥ जय जय०

—श्रीधर पाठक

भारत-वन्दना ।

जयति हिन्द ! प्रिय स्वदेश, भारत ! जय जय !!
पावन, जग पूज्य वेश, भारत ! जय जय !!
तेरी भूमि पवित्र सदा है, माता सुख की खान ।
जिसके अञ्चल में पलती है, तीस कोटि संतान ॥
सुजल, सुफल, विपुल अन्न, रत्न राशि से प्रपन्न ।
हिम गिरि शिर छत्र रुचिर, शोभित सुख मय ॥
जयति हिन्द ! प्रिय स्वदेश, भारत ! जय जय !!

लीला मय लीला करते हैं, ले ले कर अवतार।
जब जब तुझ पर आफ़त आती, हरते हैं हरि भार॥
खल दल का कर विनाश, भरते हैं नव प्रकाश।
कर्मयोग ज्ञान भानु का करें उदय॥
जयति हिन्द! प्रिय स्वदेश, भारत! जय जय!!

तेरे अगणित वीर गणों का, गूंज रहा गुणगान।
विविध देवियों ने दुर्गा हो, दिखलाया उत्थान॥
सुत: ध्रुव, प्रहलाद, अटल, जिनकी जग कीर्ति अचल।
विमल, बल, स्वधर्म भरे, प्राप्त की विजय॥
जयति हिन्द! प्रिय स्वदेश, भारत! जय जय!!

गुरुता तेरी प्रगटित जग में, है सब से प्राचीन।
वे सब राष्ट्र पढ़े तुझसे ही, जो अब कहते हीन॥
विदित सरल तव प्रभाव, प्रकट पड़ा तव प्रभाव।
कुटिल काल जाल डाल, हस रहा अदय॥
जयति हिन्द! प्रिय स्वदेश, भारत! जय जय!!

नींद जब कभी तुझको आती हो जाती है भूल।
अवसर पाकर यही भूल हाय! हूलती शूल॥
प्रकटित गति आज यही, व्यथित ग्रसित मातृ मही।
अब तो दृग खोल दैव है सदय॥
जयति हिन्द! प्रिय स्वदेश, भारत! जय जय!!

कौन अधम होगा जो तेरा, बिसरायेगा ध्यान।
साहस, ऐक्य, शांति बल पाकर, सजग हुई सन्तान॥

कर अब बलिदान कठिन, होंगे सब पुत्र उऋण।
दास्य पास काट करेंगे तुझे अभय॥
जयति हिन्द! प्रिय स्वदेश, भारत! जय जय!!
पावन जग पूज्य वेश, भारत! जय जय!!

—द्वारकाप्रसाद गुप्त, 'रसिकेन्द्र'

भारत-वन्दना

जय नर गन मन—मधुर मालती पुहुप सुहावन।
जयति विबुध-मन-विमल सलिल-सरसिज मन भावन॥
जय छित-तल--सुभ-सुमन-विटप-सुन्दर-कुसुमाकर।
जयति सोक दारिद, दुख—तिमिर—सुचण्ड दिवाकर॥
हे विमल—प्रेम- पूरन सुभग, पावन भारत मोद कर।
तुव चरनन महं हम प्रेमसों सीस नवावहिं जोरि कर॥१॥
जय विवेक, गुन—जुत आरज सज्जन मनरंजन।
सुचि आरज—कुल—गंधि सुवासित-सुखद- प्रभंजन॥
जय गत ऋषि—गन—विटप-रहित-आराम-सुऊजर।
जयति सकल सुख, प्रीति, मोद—मय स्वर्ग सु भूपर॥
हे सकल-देस-सिर-मुकुट-मनि, आरज गन सुचि प्रेम धर।
तुव चरनन महँ हम प्रेम सों सीस नवावहिं जोरि कर॥२॥
जयति दुखित आरज सज्जन—होतल सीतल कर।
निज प्रचण्ड प्रताप—प्रकम्पित—धरती—तल कर॥

जयति सत्व सुख कृत प्रदान निज, अपरन रच्छक ।
सुन्दर अन्ननि आरनि दै तृन आपुहिं भच्छक ॥
जय जयति दिवस-प्राचीन-मधि-सुन्दर-भारत-देश-वर ।
तुव चरनन महं हम प्रेमसों सीस नवावहिं जोरि कर ॥३॥
जयति विन्ध्य गिरिवर्य-करधनी—सुन्दर—धारक ।
जयति महा सागर—नागर—कृत—निज परिचारक ॥
जय तृन-मय-नित-ललित-सुकोमल हरित वसन धृत ।
गंगा यमुना जुगल—धार—जिन सुन्दर-सुक कृत ॥
हे अचलमनोहर-दृश्य-मय हिमगिरि-निज-सिर-मुकट कर ।
तुव चरनन महँ हम प्रेम सों सीस नवावहिं जोरि कर ॥४॥
जयति विविध विधि द्रव्य हीर मनि-कंचन--दायक ।
जय निज कृत उत्पन्न दिव्य औषधि सुख दायक ॥
जयति महा रमनीक, मोद, मंगलमय सुभ-थल ।
जय सुचि आरज-गन-मराल-कुल-हित मानस-कल ॥
हे देश सौख्यमय प्रान प्रिय धृत-सुखमा सुन्दर सुघर ।
तुव चरनन महं हम प्रेमसों सीस नवावहिं जोरि कर ॥५॥

—ठाकुरप्रसाद शर्म्मा

भारत वन्दना

जय जय भारत भूमि भवानी ।
जाकी सुयश पताका जग के दसहुँ दिशि फहरानी ।
सब सुख सामग्री पूरित ऋतु सकल समान सोहानी ॥ जय०

जाको श्री सोभा लखि अलका अरु अमरावती खिसानी।
धर्म सूर जित उग्यो नीति जहँ गई प्रथम पहिचानी॥ जय०

सकल कला गुन सहित सभ्यता जहँ सों सबहिं सुझानी।
भये असंख्य जहाँ योगी तापस ऋषिवर मुनि ज्ञानी॥ जय०

विबुध विप्र, विज्ञान सकल विद्या जिन तैं जग जानी।
जग विजयी नृप रहे कबहुं जहँ न्यायनिरत गुन खानी॥ जय०

जिन प्रताप सुर असुरन हू की हिम्मत बिनसि बिलानी।
कालहु सम अरि तृन समझत जहँ के क्षत्री अभिमानी॥ जय०

वीर वधू बुध जननि रहीं लाखन जित सती सयानी;
कोटि कोटि जित कोटि पती रत वनिक वनिज धन दानी॥ जय०

सेवत शिल्प यथोचित सेवा सूद्र समृद्धि बढ़ानी।
जाको अन्न खाय एंड़ति जग जाति अनेक अघानी॥ जय०

जाकी सम्पति लुटत हजारन बरसनहूं न खोटानी।
सहस सहस बरिसन दुख नितनव, जो न ग्लानि उर आनी॥ जय०

धन्य धन्य पूरब सम जग नृपगन मन अजहुं लुभानी।
प्रनमत तीस कोटि जन अजहुं जोरि जुग पानी॥ जय०

जिनमें झलक एकता लखि जगमति सहमि सकानी।
ईस कृपा लहि बहुरि प्रेम घन बनहु सोई छवि छानी॥ जय०
सोई प्रताप गुन जन गर्वित ह्वै भरी पुरी धन धानी॥ जय०

—बदरी नारायण चौधरी

जननी के प्रति।

जननी जन्म भूमि अभिवन्दन।

देवी! कोटि कोटि बालक हम तेरी गोदी में पलते हैं;
तेरा शुचि, शीतल, जल पीकर नित्य फूलते हैं, फलते हैं।
रेंग रेंग कर घुटनों के बल अथवा दौड़ दौड़ चलते हैं;
लेकर तेरी धूल, प्रेम से अपने अंगों में मलते हैं!
हरा भरा तेरा अञ्चल ही है मानों सच्चा नन्दन बन।
जननी जन्म भूमि अभिवन्दन॥

जब हम तेरी याद भूल कर माया में फँस कर सोते हैं;
तब हम तुझको खोकर इतने दीन-हीन व्याकुल होते हैं।
भूखे, प्यासे, नंगे रहकर, हा! हम विलख विलख रोते हैं;
पराधीन होकर अशक्त बन खाकर मार भार ढोते हैं!
अत्याचारों से पीड़ित हो करते हैं हम करुणा-क्रन्दन।
जननी जन्म भूमि अभिवन्दन॥

दुखी देख कर हमें अरी माँ! तू भी मन में दुख पाती है;
अपने पुत्रों की दुर्गति पर तुझे विशेष दया आती है।
यह सब हम भी देख रहे हैं, नहीं, कहीं तू छिप जाती है;
हाय हमें शीतल करने को तू भी आँसू भर लाती है!
तेरी ही इच्छा से होता, जन-मन रञ्जन, दैत्य निकन्दन।
जननी जन्म भूमि अभिवन्दन॥

तू अब भी है पास हमारे, माँ हम क्या तुझसे न्यारे हैं ?
हिन्दू-मुसलमान-ईसाई, सब तुझको समान प्यारे हैं ।
ऊँच-नीच नर-नारी सम हैं, तेरी आँखों के तारे हैं;
तेरी सेवा भूल गये हैं, हाय इसी से मन मारे हैं !
और विवश हो भोग रहे हैं क्रूर कंस—कुल का दुःशासन ।
जननी जन्म भूमि अभिवन्दन ॥

पूर्ण पवित्र हृदय से माता जब हम तेरा ध्यान करेंगे;
अपना निन्दित स्वार्थ छोड़ कर बार बार बलिदान करेंगे,
कारागृह में जाकर तेरा आदर से आह्वान करेंगे;
और एक स्वर से सब मिल कर तेरा ही गुणगान करेंगे ।
कर्म—भूमि में तू वीरों को दर्शन दे काटेगी बन्धन ।
जननी जन्म भूमि अभिवन्दन ॥

यदि हम तुझको पहचानेंगे तो अवश्य तुझको पावेंगे;
पूर्ण स्वतंत्र बनेंगे, तुझको भी जय—माला पहनावेंगे !
तेरी विमल कीर्ति का झंडा देश देश में फहरावेंगे;
तिलकोत्सव में सुर गण तुझ पर फूल खुशी से बरसावेंगे !
तेरे चरणों में सहर्ष हम करते हैं अर्पित तन, मन, धन ।
जननी जन्म भूमि अभिवन्दन ॥

—'एक राष्ट्रीय आत्मा'

मातृ भूमि।

वह मातृभूमि मेरी, वह पितृभूमि मेरी।

पावन परम जहां की, मंजुल महात्मधारा।
पहिले ही पहिले देखा, जिसने प्रभात प्यारा॥
सुरलोक से भी अनुपम, ऋषियों ने जिसको गाया।
देवेश को जहां पर, अवतार लेना भाया॥

वह मातृभूमि मेरी, वह पितृभूमि मेरी॥१॥

ऊँचा ललाट जिसका, हिम गिरि चमक रहा है।
सुवरन किरीट जिस पर; आदित्य रख रहा है॥
साक्षात् शिव की सूरत, जो सब प्रकार उज्वल।
बहता है जिसके सिर से, गंगा का नीर निरमल॥

वह मातृभूमि मेरी, वह पितृभूमि मेरी॥२॥

सर्वोपकार जिसके, जीवन का व्रत रहा है।
प्रकृती पुनीत जिसकी निरभय मृदुल महा है॥
जहां शान्ति अपना करतव, करना न चूकती थी।
कोमल-कलाप-कोकिल कमनीय कूकती थी॥

वह मातृभूमि मेरी, वह पितृभूमि मेरी॥३॥

वर वीरता का वैभव, छाया जहाँ घना था।
छिटका हुआ जहां पर, विद्या का चांदना था॥
पूरी हुई सदा से, जहँ धर्म की पिपासा।
सत्संस्कृत पियारी, जहँ की थी मातृभाषा॥

वह मातृभूमि मेरी, वह पितृभूमि मेरी॥४॥

—सत्य नारायण कविरत्न

राष्ट्रीय प्रार्थना ।*

विमल भूमि जै,
सजल, सफल, सुदल, सबल, अमल, भूमि जै ।
विमल भूमि जै ।
प्रकृति-देवि अंक बसत, जल-निधि नित पद परसत,
हिमगिरि वर मुकुट लसत—धवल भूमि जै ॥ विमल० ॥
जै स-भेद चारु वेद, जै पुरान—वन अभेद,
दर्शन, स्मृति-युत अखेद--नवल भूमि जै ॥ विमल० ॥
सिंध, गंग, यमुन सु-जल अगनित नित फलत सु-फल,
सिक्ख, राजपूत सु-दल—सबल भूमि जै ॥ विमल० ॥
सत्याग्रहि-जननि भूमि, धर्माग्रहि करनि भूमि,
अगजग सुख भरनि भूमि—सरल भूमि जै ॥ विमल० ॥
राम की पवित्र भूमि, श्याम की पवित्र भूमि,
गौतम सु-चरित्र भूमि—सकल भूमि जै ॥ विमल० ॥
जै अशोक अकबर कर, जै प्रताप, शिव सुख घर,
दरशन तव चहत अमर—अचल भूमि जै ॥
विमल भूमि जै ।

—पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'

---

* उपर्युक्त राष्ट्रीय गान परीक्षा में उत्तम कोटि का माना गया, जिसके लिए कानपुर के श्री बेनीमाधव खन्ना ने रचयिता को ५१) का पुरस्कार प्रदान किया ।

भारत।

जन्म-भूमि भारत।

जिस पर गिर कर उदर दरी से जन्म लिया था।
जिसका खाकर अन्न सुधा सम नीर पिया था॥
जिससे हमको प्राप्त हुए सुख साधन सारे।
जिस पर हुये समाप्त हमारे पूर्वज सारे॥
वह पुण्यभूमि भारत यही, हम इसकी सन्तान हैं।
कर इसकी सेवा हृदय से पा सकते सम्मान हैं॥१॥

जिसके तीनों ओर महोदधि रत्नाकर है।
उत्तर में हिमरासि रूप सर्वोच्च शिखर है॥
जिसमें प्रकृति विकास रम्य ऋतु-क्रम उत्तम है।
जीव जन्तु फल-फूल, शस्य अद्भुत अनुपम है॥
पृथ्वी पर कोई देश भी इसके नहीं समान है।
इस दिव्य देशमें जन्म का हमें बहुत अभिमान है॥२॥

सब कुछ है, पर नहीं यहां अब विद्याबल है।
वर व्यवसाय विहीन दीन-दल में हलचल है॥
लुप्त मेल का मन्त्र भूल सी गई सुशिक्षा।
नित्य नया दुर्भिक्ष, रही भिक्षा न तितिक्षा॥
रही नाम को हाय अब भारत की प्राचीनता।
हम हुए तिरस्कृत लोक में, रुला रही है दीनता॥३॥

उठो, त्यागदें द्वेष, एक ही सब के मत हों।
सीख ज्ञान-विज्ञान कला-कौशल उन्नत हों॥
सुख सुधार सम्पत्ति, शान्ति भारत में भर दें।
अपना जीवन इसे सहर्ष समर्पण करदें॥
भारत की उन्नति-सिद्धि से हम सब का कल्याण है।
दृढ़ समझो इस सिद्धांत को हम शरीर यह प्राण है॥४॥

—पं० रामनरेश त्रिपाठी

भारत-प्रशंसा।

जय जय भारत विशाल, झलकत हिम-कीट भाल।
बुधि-बल-दृग-ज्वलित ज्वाल, तेज पुंज धारी॥
सर-धनु-वर-खरग-धार, आयुध खल-दल-प्रहार।
दनुज-कुल-विदार मनुज—गन—अनन्दकारी॥१॥
विद्या-पीयूष-खान, बुध जन नित करत पान।
त्रिभुवन—अमृतोपमान—करन, ताप—हारी॥
गिरवर—भ्रूभंग-धारि, गंग—धार—कंठ हार।
सुर-पुर-अनुहार विश्व—बाटिका—विहारी॥२॥
उपवन-वन-वीथि—जाल, सुन्दर सोई पट दुशाल।
कालिमाल विभ्रमाऽलि लिकाऽलकाऽली॥
अद्भुत आनन्द-कन्द शोभा लखि लज्जत चन्द।
चन्द ते दुचन्द चारु हसनि प्यारि प्यारी॥३॥

सत्य—धर्म कर्म-निष्ठ, धीर—वीर-वर-वरिष्ठ ।
सौम्यता-विशिष्ट, शिष्ट—सादर—सत-कारी ॥
उन्नत-मन अति उदार, साधन-धन सिद्धि-द्वार ।
जतन-रतन-निधि अपार, दीन-दीनताऽरी ॥ ४ ॥
सुर-तरु कै कामधेन, कै हर मुख, मांग दैन ।
धन-पति-भण्डार ऐन, जासु जग भिखारी ॥
यूरप, अफगान पाल, जाचक कीन्हें निहाल ।
विश्व पाल, कै गुपाल, नटवर गिरि धारी ॥ ५ ॥
कै यह कोई कमल-फूल, कोमल आनन्द मूल ।
धूल हेत रूस हूस, भौंर भीर भारी ॥
कै हरि-चरनारविन्द-मोश्रित-मकरन्द-विन्दु ।
सिञ्चित सुख-बाग हिन्द, 'श्रीधर' बलिहारी ॥ ६ ॥

— श्रीधर पाठक

भारत भूमि ।

जय भारत भूमि भवानी,
अमरों तक ने तेरी महिमा बारम्बार बखानी ॥
तेरा चन्द्र बदनवर विकसित शान्ति-सुधा-रस बरसाता है ।
मलयानिल—विश्वास निराला नव जीवन सरसाता है ॥
हृदय हरा कर देता है यह अञ्चल तेरी धानी ।
जय भारत भूमि भवानी ॥ १ ॥

तेरे उच्च हृदय हिमगिरि से गौरव-गंगा बहती है ।
और करुणा कालिन्दी हमको पावन करती रहती है ॥
मौन मग्न हो रही देख कर सरस्वती विधि—वाणी ।
जय भारत भूमि भवानी ॥ २ ॥

तेरे चित्र विचित्र विभूषण हैं फूलों के हारों के ।
उन्नत-अम्बर-आत पत्र में रत्न जड़े हैं तारों के ॥
केशों से मोती झड़ते हैं या मेघों से पानी ।
जय भारत भूमि भवानी ॥ ३ ॥

करके मां, दिग्विजय जिन्होंने विदित विश्वजित याग किया ।
फिर तेरा मृत्पात्र मात्र रख सारे धन का त्याग किया ॥
तेरे तनय हुये हैं ऐसे मानी दानी ज्ञानी ।
जय भारत भूमि भवानी ॥ ४ ॥

वरद हस्त हरता है तेरे शूल-शक्ति की सब शंका ।
रत्नाकर रसने, पैरों में अब भी पड़ी कनक लंका ॥
बृटिश सिंह वाहिनी बनी तू विश्व पालिनी रानी ।
जय भारत भूमि भवानी ॥ ५ ॥

तेरा अतुल अतीतकाल है आराधन के योग्य समर्थ ।
वर्तमान साधन के हित है, और भविष्य सिद्धि के अर्थ ॥
भुक्ति-मुक्ति की युक्ति, हमें तू रख अपना अभिमानी ।
जय भारत भूमि भवानी ॥ ६ ॥

—मैथिली शरण गुप्त

भारत-भूमि ।

जय जय भारत भूमि हमारी
जय जग रंजनि, जय अघ—गंजनि,
सम्पति—सुमति-सुकृति सुख—पुंजनि,
बुध—जन—हृदय—सरोवर—कंजनि ,
सकल सुकर्मन की महतारी ।
जय जय भारत-भूमि हमारी ॥ १ ॥
जय हिमि-शृंगा, सुर-सरि गंगा,
साधु समाज—सुजन सतसंगा,
जय जग—क्लेश—प्रनाश—प्रसंगा ,
सुमिरत भरत मोद मन भारी ।
जय जय भारत-भूमि हमारी ॥ २ ॥
जय भुवि-थम्बिनि, सिन्धु-नितम्बिनि ,
त्रिभुवन-प्रेयसि, प्रेम—प्रलम्बिनि ,
जय जननि निज जन-अवलम्बिनि ,
जय तुअ सुअन तपोवल-धारी ।
जय जय भारत-भूमि हमारी ॥ ३ ॥
जय अति सुन्दरि, जय सुख-कन्दरि ,
सती स्वधर्म—अतीव अनन्दरि ,
जगत—ज्योति, जग—सृष्टि—धुरन्धरि,
'श्रीधर' प्रनत प्रान वलिहारी ।
जय जय भारत-भूमि हमारी ॥ ४ ॥

——

—श्रीधर पाठक

बन्दे भारत।

बन्दे भारतवर्ष मुदारम्।

पावन आर्य भूमि मनभावन सरसावन सुख सारम् ॥ १ ॥
हिम गिरि सेत मुकुट सिर भ्राजत सुर प्रसून बरसावन।
सरन दीप जिमि कमल चरन पर सागर पाद्य दिखावन ॥ २ ॥
धमनी सिरा मनहुं नभ सरिता बहत अमिय की धारा।
तैंतिस कोटि बसत सुर वन तरु रोमावली अपारा ॥ ३ ॥
गो गज वाजि रतन अम्बर धन अन्न अमल जल पूरे।
सुखद सघन वन नगर मनोहर हरित सस्यमय रूरे ॥ ४ ॥
निज व्यवसाय निरत सुचरित जन कलह कलुषते न्यारे।
सत्य सिपाह सनेह की वेड़ि नहिं व्यभिचार निहारे ॥ ५ ॥
देश देश के प्राणी जीवन तेरी ही भुज छाया।
भये कनौड़े राखि सकत नहिं तव सहाय बिन काया ॥ ६ ॥
देश काल अरु पात्र चीन्हि के दान मुक्त कर दीजै।
लुटै न कोष, त्रुटै सम्पति, निज धर्म रहै सोई कीजै ॥ ७ ॥
नीच लुटेरे जो कहुं ताकैं तेरी दिशि तिरछौहैं।
तेंतिश कोटि उठें निसंक भुज, बनै वंक ह्वै भौहैं ॥ ८ ॥
आये धन के लोभ पाप तें विनसे सत्रु घनेरे।
जन पद तेरोइ, तुहि प्रजापति, छत्र सीस इक तेरे ॥ ९ ॥

—रामदास गौड़

हमारा भारतवर्ष

भारतवर्ष हमारा प्यारा, भारतवर्ष हमारा है,
दुनियां भर में प्रकृति देवि की आंखों का यह तारा है।
भारतवर्ष हमारा प्यारा, भारतवर्ष हमारा है ॥१॥
इसका मुकुट किरीट हिमाचल, है यज्ञोपवीत गङ्गाजल,
फल कर इसने विविध फूलफल, सुरभि-सुयश विस्तारा है ॥
भारतवर्ष हमारा प्यारा, भारतवर्ष हमारा है ॥२॥
होने को बलिदान इसी पर, तीस कोटि सिर रहते तत्पर।
कहते हैं जो गर्ज गर्ज कर, भारतवर्ष हमारा है ॥
भारतवर्ष हमारा प्यारा, भारतवर्ष हमारा है ॥३॥

—बदरीनाथ भट्ट
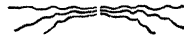
जय जन्म भूमि

जय जन्म भूमि प्यारी।
भय विघ्न दुक्खहारी, स्वर्गीय सौख्यकारी।
बहुबल विशुद्धधारी, गुणज्ञान की पिटारी ॥ जय०
सुन्दर समीर तेरा, हरता कलेश मेरा।
तुझमें किया बसेरा अवतार ले मुरारी ॥ जय०
तेरा पवित्र पानी, आरोग्य की निशानी।
शांति हाथ तब बिकानी, गुण गारहे सुरारी ॥ जय०

दुर्गा तुही भवानी, सब में तुही समानी।
महिमा न जाय जानी, महिमा महा तुम्हारी ॥जय०
सजला, तुही है सफला, कमला तुही है अमला
विमला तुही है प्रबला, अतुला तुही सुखारी ॥ जय०
तेरी हरी लताएं, छिटका रही छटाएँ।
गिरि कन्दरा तटाएं, छबि छा रही अपारी ॥ जय०
जमुना छटा दिखाती, है मन्द मन्द जाती।
गङ्गा हृदय लुभाती, वह पाप ताप हारी ॥ जय०
फल फूल फूल फलते, दुख दैन्य शूल दलते।
सब देश तुझसे पलते, तेरे सभी भिखारी ॥ जय०
सुत तीस कोटि प्यारे, गुण गा रहे तिहारे।
अपराध सब हमारे, माता क्षमो विचारी ॥ जय०
तव पाद पद्म ध्यावें, दुर्गति सभी नसावें।
होवें स्वतंत्र गावें, जय जन्मभूमि प्यारी ॥ जय०

—हरिश्चन्द्र देव वर्मा

—:*:—

तेरी छबि।

हे मेरे प्रभु! व्याप्त हो रही है तेरी छबि त्रिभुवन में!
तेरी ही छबि का विकास है कवि की वाणी में, मन में ॥
माता के निःस्वार्थ नेह में, प्रेम मयी की माया में।
बालक के कोमल अधरों पर, मधुर हास्य की छाया में ॥

पतिव्रता नारी के बल में, वृद्धों के लोलुप मन में।
होनहार युवकों के निर्मल ब्रह्मचर्य मय यौवन में॥
तृण की लघुता में, पर्वत की गर्व-भरी गौरवता में।
तेरी ही छबि का विकाश है रजनी की नीरवता में॥
ऊषा की चंचल समीर में, खेतों में, खलियानों में।
गाते हुये गीत सुख दुख के सरल स्वभाव किसानों में॥
श्रमी किन्तु निर्धन मजूर की अति छोटी अभिलाषा में।
पति की बाट जोहती बैठी गरीबनी की आशा में॥
भूख प्यास से दलित दीन की मर्म भेदिनी आहों में।
दुखियों के निराश आंसू में, प्रेमी जन की राहों में॥
मुग्ध मोर के सरस नृत्य में, कोकिल के पंचम स्वर में।
बन पुष्पों के स्वाभिमान में, कलियों के सुन्दर घर में॥
निर्जनता की व्याकुलता में, संध्या के संकीर्तन में।
तेरी ही छबि का विकास है सन्तत परहित चिन्तन में॥
विलसन के चौदह नियमों में, क़ैसर की दृढ़ आशा में।
लेनिन के उस साम्यवाद में, रीडिंग की मृदुभाषा में॥
गाँधी जी के आत्म-यज्ञ में, भारत की अभिलाषा में।
तेरी ही छबि का विकाश है भिन्न भिन्न परिभाषा में॥
हम हैं अति असहाय, शरण में प्रभुवर! तेरी आये हैं।
पूरे हों मन में स्वराज्य के जो उद्गार समाये हैं॥

—पं० रामनरेश त्रिपाठी

विनीत विनती

रघुनन्द ! दुष्टभंजन !!; सुन लो पुकार स्वामी।
थल मध्य खल बढ़े हैं; पापी, कुवाट-गामी॥
भारत बसुन्धरा की; गति दीन हो रही है।
बीतीं सहस्र वर्षं; अब तक भी रो रही है॥
फल छिद्र, छल, कपट का; दुष्टन प्रत्यक्ष दीजै।
जगदीश ! यह विनय है; भारत स्वतंत्र कीजै॥ १॥

प्रह्लाद भक्त-तारन; नृसिंह रूप धारा।
जग कष्ट से उबारन; दशकन्ध, कंस मारा॥
पापी सुमुक्ति पाते; जब भक्ति आप ! देते।
उद्धार हेतु भक्तन; अवतार आप लेते॥
भगवान ! भक्तरंजन !!; प्याला सुप्रेम पीजै।
जगदीश ! यह विनय है, भारत स्वतंत्र कीजै॥ २॥

संताप-शाप—पीड़ित, पाषाण-नारि तारी।
पापिष्ठ कंस दूती; वह पूतना संहारी॥
जब भक्त ने पुकारा; प्रभु त्राहि त्राहि तारा।
क्या पाप है हमारा ? जो कष्ट नाहिं टारा॥
गहता है आश भारत, तेरे ही रंग भीजै !
जगदीश ! यह विनय है, भारत स्वतंत्र कीजै॥ ३॥

प्रभु ! पूर्व प्रण किया था, कलक्यावतार लूंगा।
भारत के शत्रुओं का, विध्वंश मैं करूंगा॥

ग़ारत है भव्य भारत, आरत-हरन! बचाओ ।
आ करके जन्म भू पर, पूरब छटा दिखाओ ॥
क्या शेष है परीक्षा ?, अवतार नाथ ! लीजै ।
जगदीश ! यह विनय है, भारत स्वतंत्र कीजै ॥ ४ ॥

—प्रो० पन्नालाल वर्मा बांधव

भारतमाता की आह भरी पुकार ।

ग़ैर सूरत है मेरी देखने आये कोई ।
कौन है किस्सये ग़म जिसको सुनाये कोई ॥
कहती है रोके यह हर एक से भारत माता ।
मुझको कमज़ोर समझ के न सताये कोई ॥
दूध बचपन में सपूतों को पिलाया मैंने ।
अब बुढ़ापे में दवा मुझको पिलाये कोई ॥
ज़ौफ़ ऐसा है कि चलने में गिरी जाती हूं ।
दोनों हाथों से मुझे आके उठाये कोई ॥
मैंने बिगड़ी हुई तक़दीर बनाई सब को ।
मेरी बिगड़ी हुई तक़दीर बनाये कोई ॥
बाप को बेटे से है भाई को भाई से मलाल ।
रंज आपस में जो है इसको मिटाये कोई ॥
मैने बचपन में बहुत नाज़ उठाये सब के ।
अब जईफ़ी में मेरा नाज़ उठाये कोई ॥

क्या गिनाने ही को अनफास है यह तीस करोड़।
काम एक मेरी मुसीबत में तो आये कोई॥
यह ज़माने की है ख़ूबी यह मुक़द्दर की है बात।
चैन से सोये कोई चैन न पाये कोई॥
ख़्वाब गफ़लत में पड़े सोते हैं अहले वतन।
होश में लाये कोई इनको जगाये कोई॥
फिर न विस्मिल रहै दुनियां में कोई ऐ बिस्मिल।
फिर ज़माने में न आज़ार उठाये कोई॥

—विस्मिल

महात्मागांधी-गुणगान।

कवित्त

ऐसी अभेद्य उच्च अविचल हिये में शक्ति,
हमने न देखी कहीं विन्ध्य के पहाड़ में।
त्योंही निर्भीक घोर क्रूर कम्पकारी स्वर,
दुर्लभ सिन्धु गर्जन में न सिंह के दहाड़ में॥
सत्यता न देखी ऐसी हरिचन्द दधीच हू में,
देशभक्ति हू न लखी जीवित मेवाड़ में।
कहाँ ते बटोर विश्व शक्ति भरि दीन्ही नाथ,
"माधव" या गाँधी जी के मुट्ठी भर हाड़ में॥१॥

* * * *

तेरे निहारते ही भारत के जागे भाग,
सदियन की सूखी साख बीच प्राण परिगो ।
तेरे निहारते स्वतन्त्रता सचेत भई,
दासता कपूतिनी को मानो पूत मरिगो ।
तेरे पुकारत, हिन्दू मुस्लिम दोउ आन मिले,
सांच्यो स्वर तेरो सप्त सिन्धु पार करिगो ।
"माधव" अनोखे तव जादू भरे खेल देखि,
चोरन छिछोरन उर भारी दाह भरिगो ॥२॥

* * * *

साधु-वृत्ति सूछम-तन सादगी निहार तेरी,
कौन कहेगो तोकू प्रबल महारथो ।
त्याग दियो सर्वस वासो प्राण हिन्द दीनन पै,
जग नाहीं देख्यौ मैंने तोसम पुरुषारथी ।
भारत स्वाधीन हेत सांपन ते बैर ठान्यो,
देव है कि किन्नर ऐसो कौन परमारथी ॥
शंका जो होत "माधव" साँची तो बता दे मोहि,
आयो है कि गाँधी बन पारथ को सारथी ॥३॥

—पं० माधव शुक्ल

जय जयति हिन्दुस्तान की ।

जयति जय भारत भवानी, जय तिलक भगवान की ।
गोखले की हो विजय, जय लाजपत बलवान की ॥
कर्म्मचन्द मोहन की जय हो तीर्थ कारागार में ।
हो विजय संसार में गान्धी के गौरव गान की ॥
शौकत मुहम्मद की विजय जय जयति शौक़त शान की ।
चित्तरञ्जन की विजय जय नेहरू श्रीमान की ॥
जय जवाहिर लाल की जय किचलू औ अरबिन्द की ।
मदनमोहन की विजय हो देश हित बलिदान की ॥
जय रहे हिन्दू औ मुस्लिम एकता की जय रहे ।
आत्म गौरव की विजय जय जयति हिन्दुस्तान की ॥
जय रहे सत्याग्रह अरु सत्य-पथ की जय रहे ।
जय रहे चर्खा सुदर्शन हिन्द की सन्तान की ॥

—पं० उमादत्त शर्मा

पुकार ।

मादरे हिन्द पुकारै है कन्हैया आजा,
आजा २ मेरी बिगड़ी के बनैया आजा ।

लाज अब रख ले ऐ मेरी भी मुरारी प्यारे,
आजा दुखियाओं का दुख दूर करैया आजा।
रंग बदरंग हुआ जाता है मेरा अब तो,
ऐ मेरे कारे! तू गोरों से बचैया आजा।
दुःख से कितनों को तुमने है छुटाया मोहन!
आजा ऐ द्रौपदी की लाज रखैया आजा।
मुझको तेरा ही सहारा है भरोसा तेरा,
आजा २ अब ऐ काली के नथैया आजा।
तेरे भारत को डुबोना चाहते हैं ये ज़ालिम,
आजा ऐ नख पै गिरिवर को उठैया आजा।
जेल में सड़ते हैं पड़े कब से भारतवासी,
देवकी बसुदेव के बंधन के कटैया आजा।
कटती हैं, कलपती हैं तेरी प्यारी ये गाएँ,
आजा गोपाल मेरी गौओं के रखैया आजा।
मैं लुटी जाती हूं, दुनिया से मिटी जाती हूं,
आजा २ मेरी उजड़ी के बसैया आजा।
तेरे बिन देख तड़पते हैं ये भारतवासी,
आके दुख दूर कर बंसी के बजैया आजा।
मैं तड़पती हूं दफ़ा ग्राह के फंदे में फँसी,
आजा पे चक्र सुदर्शन के चलैया आजा।

विजयोत्सव।

सहकर आज कर्मबीरों ने रिपु-दल का पाशविक प्रहार,
असहयोग-उत्कर्ष बढ़ाकर किया चकित सारा संसार।
ठिठकी सी रह गई क्रूरता, पंगुबनी पशुता देखो,
प्रणपर अटल अभय बीरों की आत्म-शक्ति-क्षमता देखो।
रण-भेरी बज उठी आज यह बीरों पर क्या वार हुआ,
क्रूर हृदय भी उठे दहल, क्या शठता का संहार हुआ?
सत्य, धर्म के सिंह-नाद से नवयुग-प्रभा-प्रसार हुआ,
दास्य-पाश से व्यथित देश का आत्मिक बल आधार हुआ।
सप्त महारथियों ने मिलकर चक्रव्यूह-गढ़ भंग किया,
देवासुर—संग्राम कहो या असहयोग रण-रंग किया।
मातृ-भूमि के लिये जिन्होंने मर मिटना स्वीकार किया,
देश-प्रेम-उपहार लोह-लड़ियों का अनुपम हार लिया।
परम कंटकाकीर्ण मार्ग से किंचित पद पीछे न टले,
माता के बाँके वीर, लड़ाके, बलिवेदी की ओर चले।
उत्साह-उमंग हृदय में है, कष्टों की कुछ परवाह नहीं,
हँसते हँसते बलि जायेंगे पर मुंह से निकले आह नहीं।
उठो, बीर गण! आज मातृ-मन्दिर का पुनरुत्थान करें,
सैनिक बनकर असहयोग-रण में सहर्ष बलिदान करें।

आत्मत्याग सब करें, सुखद स्वातंत्र्य-सुधा का पान करें,
विजयी बनकर भारतीय फिर विजयोत्सव का गान करें ।

—सुरेन्द्र शर्मा

वीर प्रतिज्ञा ।

आवें विघ्न अनेकों आवें स्वागत करते जावेंगे ।
आगे पैर बढ़ा कर अपने पीछे नहीं हटावेंगे ॥
मातृदेवि ! की बलिबेदी पर अपना शीश चढ़ावेंगे ।
जीवन दे देकर जीवन की जागृति ज्योति जगावेंगे ॥
मर कर अमर बीज बोवेंगे जीवन मुक्त कहावेंगे ।
निज श्रोणित से समय प्रेत की पूरी प्यास बुझावेंगे ॥
इष्ट सिद्धि हित हँसते २ फाँसी पर चढ़ जावेंगे ।
तोप तीर तलवार तमंचा क्या हमको डर पावेंगे ॥
मंत्र मुग्ध माया मंदिर में विद्युद्दीप जलावेंगे ।
अति अशंक हो मृत्यु अंक को पिय पर्यंक बनावेंगे ॥
निर्वासन योगासन होगा जहाँ समाधि लगावेंगे ।
कारागार कृष्ण का घर है उससे क्या घबड़ावेंगे ॥
मोहन मंत्र जपेंगे जिससे कर्मचन्द्र बन जावेंगे ।

सरस भाव अनरस भोजन कर षटरसभेद मिटावेंगे ॥
जगन्नाथ नगरी में जा कर जाति भेद बिसरावेंगे ।
अपना अहोभाग्य समझेंगे अपनों को अपनावेंगे
चक्की में दुख के दानों को दल २ दाल निकालेंगे ।
सरसों पेलेंगे कोल्हू में खल की खाल निकालेंगे ॥
रामबंश बल बद्धितकरके रावण बंश नसावेंगे ।
ईश्वर की इच्छा पूरी कर मन चाहा फल पावेंगे ॥

—स्वतन्त्र

हमारा अद्भुत संग्राम ।

यह शुभ स्वराज्य के लिये हमारा अद्भुत है संग्राम ।
नाना शस्त्र सजा रही, मदमाती सरकार ।
जनता के है हाथ में, सत्याग्रह हथियार ॥
नहीं है प्रतिहिंसा का काम । हमारा ०॥१॥
उधर प्रकट है अति प्रबल पशु बल दल का कोप ।
इधर शांति के साथ में चरखाही है तोप ॥
रहेगा चलता आठो याम । हमारा ० ॥२॥
अन्यायी अन्याय को रहे बढ़ाते ख़ूब ।
पाप—सिन्धु में आपही कभी जायँगे डूब ॥
सहें हम कष्ट हृदय को थाम । हमारा ०॥३॥
भारत जगत प्रसिद्ध है तपस्वियों का देश ।

तप बल कर देगा बिफल रिपु दल के उद्देश ॥
नहोगा निन्द्यन्याय का काम । हमारा ० ॥४॥

—निश्चल

महात्मा जी का जेल जाना ।

गांधी का जेल जाना हमको बता रहा है ।
सच्चाई औ अहिंसा का रोब छा रहा है ॥
कर के दिखाया जो कुछ मुंह से कहा है उसने ।
कर्तब का इसके भारत डंका बजा रहा है ॥
निस्वार्थ कार्य करना दुःखों पै दुःख सहना ।
पीछे क़दम न रखना गांधी सिखा रहा है ॥
जैकारे उठ रहे हैं संसार यश है गाता ।
भारत सपूत तेरा * मैराज पा रहा है ॥
अब यज्ञ हो चुका है बलिदान हो चुका है ।
होगा स्वराज्य प्यारो ! वह वक़्त आ रहा है ॥

—प्रेम सखा

* परमात्मा से साक्षात्कार ।

भारतमाता से प्रार्थना ।

मादरे हिन्द तू फिर ऐसे बशर पैदा कर ।
कृष्ण अर्जुन की तरह लख़्त जिगर पैदा कर ॥
सत्य के मार्ग से जो पीछे क़दम को न रखें ।
तो हरिश्चन्द्र से फिर नूरनज़र पैदा कर ॥
तुझको आज़ाद बनाने में जो कटिबद्ध रहें ।
गांधी और तिलक से तू पिसर पैदा कर ॥
धर्म को जो न कभी हाथ से छोड़े अपने ।
राणाप्रताप से फिर शेर बबर पैदा कर ॥
जो तेरी लाज का हर वक्त रखें दिल में ध्यान ।
लाजपतराय से भी लाखों बशर पैदा कर ॥
जो विदेशों में भी जा तेरी तरक्क़ी चाहें ।
गोखले जैसे तू अब और भी नर पैदा कर ॥
तेरी आज़ादी का पौधा था लगाया जिसने ।
दादाभाई से तू दो चार पिसर पैदा कर ॥
जो ख़ज़ाने को तेरे माल से भरना चाहें ।
मालवीय जी से तू आराम जिगर पैदा कर ॥
जा के मैदां में जो दुशमन को दिखाये नीचा ।
शिवा जी जैसे तू अब वीर बशर पैदा कर ॥
तेरी उन्नति में जो जां अपनी निछावर करदें ।

तो दयानंद से अब सीना सिपर पैदा कर ॥
प्रार्थना यह है चिरंजीव को तुझसे माता।
हो लगन जिनको तेरी ऐसे बशर पैदा कर ॥

आह्वान
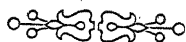
करो अब स्वतंत्र भारतवर्ष।
जवानो रण में आव सहर्ष ॥१॥

हृदय में हो स्वदेश अभिमान, देश पर हो जाओ बलिदान।
सहो नहिं मातृभूमि अपमान, सदा चाहो सब देशोत्थान॥
मिटा दो भारत का अपकर्ष। जवानो० ॥२॥
असहयोग का शस्त्र उठाओ, हिंसा भाव हृदय न लाओ।
क्रोध मोह अरु द्वेष नशाओ, सभी देश सेवक बन जाओ॥
तुम्हारा हो जीवन आदर्श। जवानो० ॥३॥
सूली पड़ो जेल में जाओ, फाँसी चढ़ अरु गोली खाओ।
बन्देमातरम् तब भी गाओ, जलावतन चाहे हो जावो॥
करो 'भवनाथ' देश उत्कर्ष।
जवानो रण में आव सहर्ष ॥४॥

लाजपत।

—:—

कौन कह सकता है कि अब भी बची है लाजपत।
जेल में जाकर पड़ा है जब तुम्हारा 'लाजपत' ॥
इक आँख वाले ने बचाई थी तुम्हारी लाजपत।
किस काम के दो आँख वाले खो दिया जब लाजपत ॥
सच मान लेंगे कौन की तुम पाँच पानीदार हो।
ग़ैर के हाथों पड़ा है जब तुम्हारा 'लाजपत' ॥
ये तुम्हारे ही भरोसे ग़ैर भोगें राजसुख।
वीरता है बस यही अपनी गंवाई लाजपत ?

—भवनाथ

जादू की लकड़ी।

चर्खे से भारत को राजा बनायेंगे।
राजा बनाय महराजा बनायेंगे ॥चर्खे०॥
चर्खा चतुर्भुज के चरण कमल से,
घर घर में सूत की गंगा बहायेंगे ॥चर्खे से० ॥
लन्दन की लोहे की जिन्दा कलों को,
जादू की लकड़ी से मुर्दा बनायेंगे ॥चर्खे से०॥

गर्बीले गोरों के सारे गरब को,
गाँधी की आंधी से छिन में उड़ायेंगे ॥ चर्खे से०॥
महलों झुपड़ियों के नारो नरों को,
चर्खा का कड़खा बजा कर जगायेंगे ॥चर्खे से०॥
"माधो" स्वराज्य के प्यासे जनों को,
चर्खा की वर्षा से तिर्षा बुझायेंगे ॥ चर्खे से०॥

—पं० माधव शुक्ल

भारत सरताज है ।

कवित्त ।

—:—

फटी सी लँगोटी धार देश उपकार किये, गाँधी सो फ़कीर कह लायो महाराज है। कोट, हैट, सूट, टाई, पैंट को जराय धारि खद्दर स्वदेशी राखी भारत की लाज है। देशिन सों प्रेम व बिदेशिन सों डाह नाहिं अहिंसा को धारि लेहु शीघ्र ही स्वराज है। बाह बीर "भूष०" कहां लौं बखान करूं तेरे ही प्रताप आज भारत सरताज है।

—भूषण

स्वराज्य चरखे से।

करेंगे मुल्क में क़ायम स्वराज्य चरखे से।
मिलेगा हिन्द को फिर तख़्त ताज चरखे से॥
बनेंगे बिगड़े हुये काम काज चरखे से।
रहैगी देश की आलम में लाज चरखे से॥
हमें मशीन गनों की वह देता है धमकी।
उदू के पूँछते हम हैं मिजाज चरखे से॥
जिन्होंने लूट के वीरान कर दिया भारत।
वसूल उनसे करेंगे खिराज चरखे से॥
हमें यह चक्र सुदर्शन से कम नहीं 'दिन कर'।
मचाई धूम है दुनियाँ में आज चरखे से॥

—ब्रह्मस्वरूप दिनकर शर्मा

हुब्बे वतन।

हर एक दिल में खुदाया जिस घड़ी दर्दे वतन होगा,
हमीं फिर बागवाँ होंगे हमारा ही चमन होगा।

नया लंदन न अमरीका न होंगी चीन की चीजें,
यहीं की सारी चीज़ें हमको करना जे वतन होगा।
यह कह दो रिश्तेदारों से कि लाशा तब उठावेंगे;
स्वदेशी जिस्म पर जब यह स्वदेशी ही कफ़न होगा।
तो फिर हो जायगा इक साल में हमको स्वराज हासिल,
कि दावेदार आजादी का हर तारे कफ़न होगा।
कभी फिर हिन्द का नामो मुकद्दस चर्ख पर होगा,
कभी ढाके का मलमल फिर से मशहूरे ज़मन होगा।
कभी तो हिन्द वालों की जहाँ में क़द्र फिर होगी,
यहाँ का एक पड़ा ढेला कहीं लाले चमन होगा।
यह सब फ़रहत तभी होगा कि जब आखों से देखेंगे,
कि बाहम इत्तफ़ाक़ो मेल औ हुब्बेवतन होगा।

देश दुलारों को बधाई।

(कांग्रेस की ओर से स्वागत)

आइये देश दुलारो, तुम्हें बधाई है।
देश के दुःख निवारो, तुम्हें बधाई है॥
मादरे हिन्द हो बेताब हाय! रोती है;
याद कर ज़ुल्म सितम हाय; सब्र खोती है।

चौंकती ख़्वाब में भर नींद नहीं सोती है;
फफोले दिल के फ़क़त आसुओं से धोती है।
पोंछने आँसू पधारो, तुम्हें बधाई है।
आइये देश दुलारो, तुम्हें बधाई है॥

भेद हर तौर के भरपूर मिटाओ, आओ;
सभी हैं एक यही भाव दिखाओ, आओ।
देश अनुराग भरा राग सुनाओ, आओ;
प्रेम से हिन्द चमन सब्ज़ बनाओ, आओ।
हृदय में खौफ़ न धारो, तुम्हें बधाई है।
आइये देश दुलारो, तुम्हें बधाई है॥

सिसकता हिन्द अभी यार जान बाक़ी है;
रुक गई और मगर एक तान बाक़ी है।
दिखादो जग को कि इन्सान शान बाक़ी है;
हौसले दिल में भरे हैं, गुमान बाक़ी है।
हिन्द की नाव उबारो, तुम्हें बधाई है।
आइये देश दुलारे, तुम्हें बधाई है॥

साथ देने को समय त्यार खड़ा है देखो;
फ़तह का भी निशान ख़ूब गड़ा है देखो।
क्या हुआ, बीच में जो गोर बड़ा है, देखो
मर्द दिल के लिये पथ साफ़ पड़ा है देखो
बढ़ो हिम्मत नहीं हारो, तुम्हें बधाई है।
आइये देश दुलारो, तुम्हें बधाई है॥

हीन समझे हैं तुम्हें वे ज़रूर भूल रहे;
दिखादो उनको, यहाँ अब न वही 'फूल' रहे।
देखना, जोश ज़वानी न ये फ़िज़ूल रहे;
जिगर में नक्श खिंचा, सिर्फ़ होमरूल रहे।
जय स्वदेशी की पुकारो तुम्हें बधाई है।
आइये देश दुलारो तुम्हें बधाई है॥
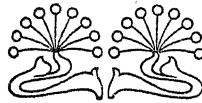
बिदा करो।

भाई बिदा करो जाने दो।
तपस्वियों की तपोभूमि के दर्शन कर आने दो।
जहाँ कृष्ण ने जन्म लिया था, मान कंस का चूर्ण किया था;
वहीं पहुँच जननी का बन्धन, मुझे काट आने दो।
जहाँ तिलक भगवान रहे थे, करते गीता गान रहे थे;
उसी पुण्य-भू में तसले पर, सुखद गान गाने दो।
गाँधी, मोती, लाज, जहाँ हैं, अली, दास, आज़ाद जहाँ हैं;
सनद राष्ट्र-सेवा को उस विद्यालय से पाने दो।
अत्याचार नष्ट करने को, दर्प दम्भियों का हरने को;
कर्मवीर बन कर्मक्षेत्र में, आज उतर जाने दो।

पराधीनता मां की हरने, मणिमय मुकुट शशि पर धरने;
कुछ बलिदान 'प्रेम' का भी वेदी पर चढ़ जाने दो !

—धनीराम 'प्रेम'
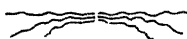
उन्नति होने वाली है ।

सता मत दीनों को ज़ालिम क़यामत होने वाली है ।
उसी भगवान के सन्मुख शहादत होने वाली है ॥
लिया है राज, धन सारा छिनाई सारी आज़ादी ।
उठे हैं सो के अब हम भी हिदायत होने वाली है ॥
प्रण हमने यह ठाना है कि हिन्दू शेख सब भाई ।
करें प्रचार खद्दर का अब उन्नति होने वाली है ॥
तमन्ना है यही दिल में ज़ुबां को बन्द रक्खेंगे ।
शौक़ से जेल जाने को अशाअत होने वाली है ॥

—'राम'
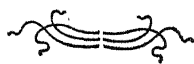
हृदय-हिलोर।

राष्ट्र का होगा पुनरुत्थान।

सपद् कुशासन का भारत से अब ह्वै है अवसान।
फिर प्रचलित प्रति घर में होगा चर्खा चक्र महान ॥१॥
होगा चौदह विद्या संपुत चौसठ कला निधान।
दूषणरहित विश्वभूषण बन, लहिहै बहु सम्मान ॥२॥
वैदिक शिल्प कला वैद्यक अरु, गणित शास्त्र विज्ञान।
जिज्ञासू बन कर आवेगी, अन्य देश सन्तान ॥३॥
व्यर्थ न जायेगा तप करना कारागार स्थान।
अधिक दिवस से हैं जो करते नेता सर्व प्रधान ॥४॥
भार भूमि का शीघ्र हरेंगे, राधावर भगवान।
हाटक, रजत, 'लाल' रत्नाकर बन है हिन्दुस्तान ॥५॥

--श्री० 'लाल'

न होगा

—०—

(१)

मुझ सा जहाँ में कोई क़ैदे-बला न होगा ।

जौरो-सितम किसी पर यों बरमला न होगा ॥

सीना सिपर हूँ हरदम तेग़े जफ़ा पै तेरे ।

धमकी अबस दिखाता 'तेरा गला न होगा' ॥

अब छोड़ कर तअल्लुक़ जाता हूं राह ऐसी ।

जिस राह पुर-ख़तर पर कोई चला न होगा ॥

सौदा वतन का उसको होगा भला कहां से ।

सर ख़ाक बाग-जलियां जिसने मला न होगा ॥

'शर्म्मा' के दिल को नाहक़ बेदादगर दुखाता ।

लेकर किसी का हक़ यों तेरा भला न होगा ॥

(२)

यों बेतरह किसी का ताला फिरा न होगा ।

यों बहरे बेकसी से कोई घिरा न होगा ॥

ढाले सितम जहाँ तक ताक़त हो तुझमें ज़ालिम ।

दामन का तेरे लेकिन हाथों सिरा न होगा ॥

रख याद एक दिन यों पलटेगा यह ज़माना।
मेरा गला न होगा तेरा छुरा न होगा॥
'शर्म्मा' जो तू सहेगा दुनिया की यह ज़फ़ायें।
इसका नतीजा तेरे हक़ में बुरा न होगा॥

—देवकलीदीन शर्मा
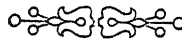
है खुदा लाचार का।

हैं दिखाते डर हमें जो आफ़िसर तलवार का।
कर रहे तैयार क्या ख़ुद मक़बरा सरकार का॥
नीची गर्दन है हमारी वार कर के देख लो।
ख़तम हो जावे तुम्हारा हौसिला हरबार का॥
वतन पर कुर्बान होने को हैं जो आगे बढ़े।
है नहीं कुछ खौफ़ उनको जेल का या दार का॥
आख़िरश को एक दिन आयेगा वह रोज़े जज़ा।
देख लेना तब मज़ा इस हरकते खूंख्वार का॥
फ़क्त उनका है ये बेजा 'चक' इतराते वो क्यों।
है उधर ताक़त इधर तो है खुदा लाचार का॥

—सुदर्शन नारायण पांडे

'कब तक'
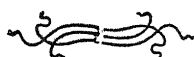
सितम से ग़ैरों के ऐ बिरादर जलोगे मिस्ले कबाब कब तक।
कटा कटा कर सुपूत मादर पियोगे खूं की शराब कब तक॥
बला की गफ़लत ने है दबाया, उरूज गुज़रा जवाल आया।
मगर न तुमको ख़याल आया रहोगे खस्ता ख़राब कब तक॥
ज़रा तो लाज़िम है शर्म खाना गुलाम बनकर कुनाम पाना।
नहीं मुनासिब है मार खाना सहोगे ज़ुल्मो अताब कब तक॥
गुलाम उनके बने रहोगे बला की सख़्ती सभी सहोगे।
ज़बान अपनी से पर कहोगे बजा है जी हाँ जनाब कब तक॥

—श्री० 'बाल'

इज्ज़त पै आ रही है।

—०—

बुलबुल चहक चहक कर तुमको जगा रही है।
तुम नींद के हो माते मदहोशी आ रही है॥
जागो उठो प्यारो मल डालो अपनी आंखें।
घर बार लुट चुका है इज़्ज़त पै आ रही है॥
बस मुँह को बन्द कर लो कलमों को तोड़ डालो।

अब करके वह दिखाओ जो दिल में छा रही है॥
बरहम हुई है महफ़िल परवाने हैं परेशां।
सैयाद की नियत बद आरे चला रही है॥
सीना सपर बना के डट जावो कर के हिम्मत।
सुन लो सरोज़िनी वह क्या सुना रही है॥
छूत और अछूत कैसे भारत के पूत सब हैं।
यह घर की खाना जंगी तुमको मिटा रही है॥
लालच में नौकरी के क्यों ठोकरे हो खाते।
कैसी गुलामी दिल में यारो समा रही है॥
घर को सँभालो अपना डाकू उमड़ रहे हैं।
आराम तलबी तुमको नीचा दिखा रही है॥
सुहबत से अपनी प्यारो रंगाने हो रहे हो।
चर्खा सँभालो चर्खा यह गूँज आ रही है॥

—'श्री प्रेमसखा'

ख़ूं बहाना है अगर फिर यह बहाना है।

तेग़ खींची है ते फिर आँख चुराना कैसा।
वह जो है दिल में करो बात बनाना कैसा॥
तुख़्म नाचीज़ का मिट्टी में मिलाना कैसा।
गुल खिलायेगा वह नादान मिटाना कैसा॥

खामख्वां सैकड़ों इलज़ाम लगाये मुझपर ।
खूं बहाना है अगर फिर यह बहाना कैसा ॥
हो गया रश्के जहां दौरे खिजां से बर्बाद ।
गुल ही जब चुन लिये बुलबुल का तराना कैसा ॥
एक दो होते तो जख़्मों की न करते परवाह ।
हर रगो बन्द का नासूर भुलाना कैसा ॥
शमा पर जल गया परवाना ताज्जुब क्या है ।
वह तो जलने को बना उसको जलाना कैसा ॥
जिसने सर रख दिया क़दमों पै तेरी मादरे हिंद ।
उसकी नज़रों में यगाना व विगाना कैसा ॥
पेशतर आग के जलने से धुआँ उठता है ।
जजबए दिल को जबां बन्द दबाना कैसा ॥
वह तो है मुल्की मुहब्बत की कसौटी 'शादां' ।
खौफ़े जिंदां से भला सर का झुकाना कैसा ॥

—श्री० बनवारीलाल 'शादां'

प्यारा हिन्दुस्तान ।

परम प्राचीन कला का कुंज, बुद्धि बल शील पराक्रम पुंज ।
अनोखी नई निराली शान, हमारा प्यारा हिन्दुस्तान ॥१॥

न पहिली कीर्ति न पहला नाम, नहीं अब रहे यहाँ श्रीराम।
हृदय में अब तक उनका ध्यान, हमारा प्यारा हिन्दुस्तान ॥२॥
बलाबीरों का अब तक अंश, उन्हीं का तीसकोटि यह बंश।
सहा दुख हुआ न अन्तर्धान, हमारा प्यारा हिन्दुस्तान ॥३॥
यहाँ पर आये कितने गैर, लूटने हमको लेने बैर।
मिटा पर उनका नाम निशान, हमारा प्यारा हिन्दुस्तान ॥४॥
सताकर दिखा जुल्म की धूम, बनाकर गये हमें महकूम।
कहां तक उनका करें बयान, हमारा प्यारा हिन्दुस्तान ॥५॥
आज तक रहे दुर्दशा भोग, लगे दिन रात अनगिनत रोग।
दबाते हमको मरी मसान, हमारा प्यारा हिन्दुस्तान ॥६॥
किन्तु अब करते निद्रा त्याग, लगी है देश प्रेम की लाग।
मातृ-पूजा का विमल विधान, हमारा प्यारा हिन्दुस्तान ॥७॥
कलित कश्मीरी केसर रंग, बम्बई अंग बंग सब संग।
चढ़ा देंगे तन मन धन प्रान, हमारा प्यारा हिन्दुस्तान ॥८॥
प्रेम का पुष्प अश्रु का नीर, ताप त्रय तापित शुद्ध शरीर।
उच्च-स्वर भुवन मोहिनी तान, हमारा प्यारा हिन्दुस्तान ॥९॥
विश्व का बन्धु कर्म-पथ पथी, वही फिर होगा भारत रथी।
सिखाने आता गीता ज्ञान, हमारा प्यारा हिन्दुस्तान ॥१०॥
बिलपती माता! आओ नाथ, बाँस की बंशी फिर हो हाथ।
सुनादे कुँवर कन्हैया गान, हमारा प्यारा हिन्दुस्तान ॥११॥
नहीं अब लीला का अवकाश, मचा है कैसा सत्यानाश।
नहीं गो रहे नहीं धन धान, हमारा प्यारा हिन्दुस्तान ॥१२॥

किया है हमने श्रुति पथ त्याग, कलंकित काशीपुरी प्रयाग।
कृष्ण अब कैसे हो उत्थान, हमारा प्यारा हिन्दुस्तान ॥१३॥
हृदय में भक्ति, शक्ति कर में, देश सेवा व्रत घर घर में।
यही दो वासुदेव बरदान, हमारा प्यारा हिन्दुस्तान ॥१४॥

—चक्र सुदर्शन

सितारा गांधी।

मादरे हिन्द की है आँख का तारा गाँधी।
चर्ख पर क़ौम के पुरनूर सितारा गाँधी ॥
जेलख़ाने में भी जाकर के उठाना मैला।
मुल्क के वास्ते करते हैं गवारा गाँधी ॥
हिन्द की बेहतरी के वास्ते दर दर फिर कर।
सख़्तियां झेली बहुत कष्ट सहारा गाँधी ॥
बच्चे बच्चे का सर क़दमोंमें झुका जाता है।
जान हाज़िर है अगर करदे इशारा गाँधी ॥
हाजिकुल मुल्क अजमल खाँ भी यही कहते हैं।
हम हैं गांधी के तरफ़दार हमारा गाँधी ॥

गाढ़ा ।

—o—
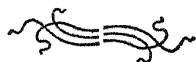
गाढ़ा गाढ़े दिन को मीत ।
दीन देश हित जीवन धन है काहि नाहिं परतीत ।
तन को नित्य बचावत इनते वर्षा घाम अरु शीत ॥गाढ़ा०॥
एक मिरजई पहिरि करत हैं केतिक वर्ष व्यतीत ।
फटत न देह रात दिन रच्छत धोवत होत पुनीत ॥गाढ़ा०॥
बड़े बड़े वैरिस्टर जासों करन लगे हैं प्रीत ।
सब के गुरु महात्मा गाँधी उनकी है यह रीति ॥गाढ़ा०॥
पहिरत खद्दर उन्हें कुटुम सह गये वर्ष बहु बीत ।
उपदेश देत हैं हमहिं तुमहिं अब होउ ना भयभीत ॥गाढ़ा०॥
गाढ़ा पहिरहु चरखा कातहु गावहु गौरव गीत ।
जाके बल से 'निश्चल' निश्चय लेहु स्वराजहिं जीत ॥गाढ़ा०॥
गाढ़ा गाढ़े दिन को मीत ॥

—'निश्चल'

नई रोशनी ।

कवित्त ।

छोड़ि निज चाल ढाल दासता के दास भये,
कोट बूट धारि ख़ूब फैसन बनायो है ।

श्वानन की भांति ठाढ़े २ करै मूत्र त्याग,
पेन्ट और गैलिस अजीब रंग लायो है।
पीवे हैं बरांडी अरु मीट को लगाये भोग,
होटल में जाय सब टोटल गवायो है।
"भूषण" भनत भये ऐसे है कपूत जिन,
पान करि दूध निज मात को लजायो है।

—"भूषण"

रहने दो बस।

सभी तो कहते रहे यही हैं पुरानी बातों को भूल जाओ।
करेंगे भारत की हम भलाई, हमारे ऊपर यक़ीन लाओ॥
हैं नेक नीयत से काम करते लो देखो हाकिम सभी हमारे।
यों भूल होती है आदमी से, क्यों याद उसकी नहीं भुलाओ॥
ये मीठी बातें तो सुनते २ गया हमारा जी ऊब बिलकुल।
न देखें आँखों से न्याय जब तक, हो सब्र क्योंकर तुम्हीं बताओ॥
समान स्वत्वों की बात कहते हैं, काले गोरों में दिल्लगी है।
जा देखो ऊँची अदालतों में तो इसके बिलकुल खिलाफ़ पाओ॥
है ख़ून जारी जिस घात्र में से, क्या दर्द उसका भी भूल सकते।
है कैसे मुमकिन, इलाज उसका, फ़िक्र से जबतक नहीं कराओ॥
हैं बैठे ज़ालिम हमारे सर पर, बढ़ाया उनका गया है रुतबा।
क्या न्याय होगा यही न आगे, तो रहने दो बस हमें बचाओ॥

न कोरी बातों में आयँगे हम, करेंगे अब तो जो दिल में ठाना ।
यही सहारा है एक निश्चल, न झूठी समता के गीत गाओ ॥

—निश्चल

छोड़ दो बहाना ।

—:०:—

भारत के शेर जागो बदला है अब ज़माना ।
प्यारे वतन को इस दम आज़ाद है बनाना ॥
मत बुज़दिली को हर्गिज़ तुम पास दो फटकने ।
आख़िर तो दम अदम को होगा कभी रवाना ॥
स्वातंत्र-देवि के अब जल्दी बनो उपासक ।
निज पूर्वजों का तुमको गर नाम है चलाना ॥
परदेसियों का इस दम जो साथ दे रहे हैं ।
उनको हराम है अब भारत का आबदाना ॥
दृढ़ सत्य पर रहो अरु धारण करो अहिंसा ।
आ करके जोश में तुम हुल्लड़ मती मचाना ॥
माता की कोख नाहक़ करते हो तुम कलंकित ।
वालंटियर बनो अब बस छोड़ दो बहाना ॥
जब देश भर के नेता सब जेल में पड़े हैं ।
तो फिर तुम्हें भी यारो लाज़िम है जेल जाना ॥

दिल में झिझकार लावो आगे क़दम बढ़ाओ।
है स्वर्ग से भी बढ़कर इस वक्त जेलखाना॥
"सरयू" समय यही है कुछ करलो देश-सेवा।
दो दिन की जिन्दगी है इसका नहीं ठिकाना॥

—सरयूनारायण शुक्ल
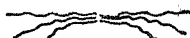
आज़ाद करेगा चर्खा।

मादरे हिन्द को आज़ाद करेगा चर्खा।
हिन्द वालों को तो ज़रदार करेगा चर्खा॥
कातते हम जो रहे सूत स्वदेशी हरदम।
अहले योरुप को ये कंगाल करेगा चर्खा॥
डूबते हिन्द की किश्ती का सहारा ये ही।
शानो शौकत को दुबाला ये करेगा चर्खा॥
बंध रही सारे ज़माने में हवा अब इसकी।
जहां से जुल्म को नाबूद करेगा चर्खा॥
तुम्हें क्या फ़िक्र है 'भवनाथ' चलाओ इसको।
मानचेस्टर को भी बमबार्ड करेगा चर्खा॥

—'भवनाथ'
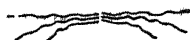
*स्वदेशी।

जियें तो स्वदेशी बदन पर बसन हो,
मरें भी अगर तो स्वदेशी कफ़न हो।

परायां सहारा है अपमान होना,
ज़रूरी है निज-शान का ध्यान होना।

स्वदेशी पै वाजिब है कुर्बान होना,
इसी से है सम्भव समुत्थान होना।

लगन में स्वदेशी की हर मरदो ज़न हो;
मरें भी अगर तो स्वदेशी कफ़न हो।

निछावर स्वदेशी पै कर मालो-ज़र दो;
स्वदेशी से भारत का भंडार भर दो।

रहें चित्र से वह चकाचौंध कर दो,
दिखा पूर्वजों के लहू का असर दो।

स्वदेशी हो सज-धज स्वदेशी चलन हो;
मरें भी अगर तो स्वदेशी कफ़न हो।

चलो इस तरह अपना चर्ख़ा चला दो;
मनों सूत की ढेरियाँ तुम लगा दो।

बुनों इतने कपड़े मिलों को छका दो,
जमा दो स्वदेशी का सिक्का, जमा दो।

स्वदेशी हो गुल और स्वदेशी चमन हो,
मरें भी अगर तो स्वदेशी कफ़न हो।

न अतलस न मख़मल की हो चाह तुमको,
कपट-सिंधु की मिल गई थाह तुमको।

न अब कर सकेंगे वे गुमराह तुमको,
किसी की रही कुछ न परवाह तुमको।

फ़िदाये वतन अपना तन प्राण धन हो,
मरें भी अगर तो स्वदेशी कफ़न हो।

उठो कर्मवीरो तुम्हें कौन भय है,
स्वदेशी का संग्राम भी शांति-मय है।

प्रथा पाप की पाप में आप लय है,
विजय है विजय है तुम्हारी विजय है।

स्वदेशी हो पूजन स्वदेशी भजन हो,
मरें भी अगर तो स्वदेशी कफ़न हो।

समर स्वत्व की बीर वर ठान दो तुम,
किसी के प्रलोभन में मत कान दो तुम।

ख़ुशी से स्वदेशी पै दो जान दो तुम,
बने जिस तरह माँ को सम्मान दो तुम।

स्वदेशी हो जीवन स्वदेशी मरन हो,
मरें भी अगर तो स्वदेशी कफ़न हो।

अहिंसा संग्राम

कभी अन्याय के आगे झुका हम सर नहीं सकते,
किसी के पाशविक बल से कभी हम डर नहीं सकते।
नया जीवन मिला है अब तो मारे मर नहीं सकते,
फ़रिश्ते मौत के भी हम पै क़ाबू कर नहीं सकते॥

भरोसा आत्म-बल का है सहारा अपने ईमाँ का।
नहीं कुछ ख़ौफ़ है दिल में हमारे माल का जाँ का॥

समर है सत्य का जीते नहीं मैदान छोड़ेंगे,
विनय के हो रहेंगे अब वृथा अभिमान छोड़ेंगे।
गिना क़ाबू किये उन पर न अब हम जान छोड़ेंगे,
हमारे हो रहेंगे याकि हिन्दुस्तान छोड़ेंगे॥

सुखद स्वाधीनता की दुन्दुभी जग में बजावेंगे।
ये किश्ती पार अपनी अपने हाथों हम लगावेंगे॥

अगर सरकार को है गर्व अपनी तोप का, गन का,
इधर तुम आत्मज्ञानी हो तुम्हें क्या मोह इस तन का।
उठो वीरोसम्हल जाओ समय आया विकट रण का,
भुलाना ध्यान जीते जी न अपने क़ौल का, प्रण का॥

अहिंसा-युद्ध में मरना भी जीने से सिवा समझो।
शहीदे-क़ौम को तुम मुल्क का एक देवता समझो॥

सहारा दो समर में क़ौम के लख्ते-जिगर तुम हो;
तुम्हारा नाम है आलम में ऐसे वीर वर तुम हो।

उधर हो तेग़ खिंचता और इधर सीना सिपर तुम हो;
न निकले आह चाहे खून ही से तरबतर तुम हो ॥
तुम्हारी आत्म दृढ़ता देख दिल में शत्रु हैरां हो ।
तुम्हारे दर्द-ग़म से चाक फिर उसकी गरेबाँ हो ॥

दमन के दैत्य से अब दोस्तो दिल में न घबराना,
अहिंसा ढाल से तुम वार उसके रोकते जाना ।
फ़िदाये कौम हो तुम क़ौम पर जाँ से गुज़र जाना,
ज़माने में तुम अपनी शूरता की धाक बिठलाना ॥
यही मर्दानगी है जान दो ईमान के बदले ।
नहीं लाज़िम किसी का जान लेना जान के बदले ॥

समर में स्वत्व के वीरत्व का जौहर दिखादो तुम,
प्रवल प्रेमास्त्र से अपने दिले दुश्मन हिला दो तुम ।
दिलों में ज़ालिमों के सिक्कये-उल्फत विठा दो तुम,
निशाँ अन्याय का अब सारे आलम से मिटा दो तुम ॥
मिटे यह मोह की निशि सत्य का सूरज नज़र आये ।
ये ऐसी जंग हो गुमराह राहे—रास्त पर आये ॥

करो सर नज़्र यारो गाँधो ये सिरधरा अपना;
कि जिसके दम से दुनियाँ में शोहरा जावजा अपना ।
कलामे-पाक से उसके हुआ दिल आशना अपना,
बहे ख़ूँ, ख़ूँ न बहने दें, यही है ख़ूँ-बहा अपना ॥
विजय होगी हमारी सत्य का हमको सहारा है ।
बलन्दी पर है 'अख़्तर' दिल उमंगों का हमारा है ॥

—'अख़्तर'

विजय कामना ।
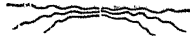
विजय हो भारत की भुवनेश ।
दुरित का नाम रहे नहिं शेष ॥
दुर्योधन से युद्ध छिड़ा है, भारत के संग आज ।
क्रोध शांति का समर समझिये जीत आपके हाथ ॥
मची है हलचल आकुल देश ।
विजय हो भारत की भुवनेश ॥
दुःशासन से परपीड़ित है, सारा सुजन समाज ।
वस्त्र हरण कर इसने नंगा करना चाहा आज ॥
खोल कर बैठो कृष्णा केश ।
विजय हो भारत की भुवनेश ॥
थोड़े नृपति धर्म सुत सँग हैं, बहु दुर्योधन ओर ।
दल बल दुःशासन समीप हैं, इधर कृष्ण की कोर ॥
सुनावो गीता का उपदेश ।
विजय हो भारत की भुवनेश ॥
अश्वत्थामा, कर्ण, कृपा भी, हैं दुर्योधन संग ।
चर्खा सा निज चक्र चलाओ, न हो रंग में भंग ॥
समर का हो मधु सूदन शेष ।
विजय हो भारत की भुवनेश ॥

—पं० काली प्रसाद त्रिपाठी

साहिल को ढूढ़ते हैं ।

(ग़ज़ल)

दिल खो गया हमारा हम दिल को ढूढ़ते हैं ।
बिछड़े है कारवां से मंज़िल को ढूढ़ते हैं ॥
ज़ालिम बफर २ कर सफ्फाकियां हैं करते ।
बिसमिल मचल २ कर क़ातिल को ढूढ़ते हैं ॥
ईमान जो कि बेचें तन परवरी के ख़ातिर ।
ऐसों में भूल कर हम, आदिल को ढूढ़ते हैं ॥
बुज़दिल की ज़िन्दगी क्या दरगोर ज़िन्दा जानो ।
मुशकिल ज़रा सी आई तो बिल को ढूढ़ते हैं ॥
इस बेकसी पै यारब अब तो तरस था खाना ।
तिनका पकड़ २ कर साहिल को ढूढ़ते हैं ॥
आरामो ऐशो राहत, तुमने हमें मिटाया ।
तुमको कुचल के फेंकें उस सिल को ढूढ़ते हैं ॥

—श्री० प्रेम सखा

चक्की चलाते हैं ।

फँसाने को हमें वह नित नये फंदे बनाते हैं ।
वे ज़ालिम हम ग़रीबों को सदा यों ही सताते हैं ॥
मिटा कर हिन्द वालों को जो बन ज़रदार बैठे हैं ।
दिखावट में जबानी ही वह हमदर्दी दिखाते हैं ॥

अगर हम मांगते अपने हक़ूकों को तो कहते हैं।
अभी देते हैं, कल देंगे, वह टाले ही बताते हैं॥
करें मिल करके हम सब जब उदू के ज़ुल्म की चर्चा।
वह भेजें जेलखाने को औ फांसी पर चढ़ाते हैं॥
वह जा करके क्या सीखें मदरसे और कालेज में।
कबूतर, शेर, चिड़ियों के वह क़िस्से ही पढ़ाते हैं॥
किया तर्केतअल्लुक़ है गया घबड़ा सभी यूरप।
मशीनगन तोप गोलों का हमें वह डर दिखाते हैं॥
तशद्दुद चाहते रीडिंग उन्हें भरपूर करने दो।
सुना इस्तीफ़ा दे करके वह अब इंगलैंड जाते हैं॥
ज़रा देखो तो जा करके यहां के जेलखानों में।
हज़ारों मुहब्बाने वतन चक्की चलाते हैं॥
क़लम तू रहने बस दे अब उदू के ज़ुल्म का लिखना।
अली "भवनाथ" गांधी, दास, नेहरू जेल जाते हैं॥

—श्री० 'भवनाथ'

सैयाद को दुआ।

बे ख़बर ग़ाफिल नहीं रहने के अब सैयाद हम।
आ नहीं सकते हैं तेरी घात में सैयाद हम॥
कुछ भी तू बातें बना पर जान ली चालाकियाँ।
होगये हुशियार हैं इन हरकतों के बाद हम॥

दे भुलावा तूने हमको था फँसाया जाल में।
छूटे हैं मुशकिल से पंजे से तेरे सैयाद हम॥
गोलियां बरसा चमन को ख़ून से तर कर दिया।
इस रंग में ही मस्त हैं करते नहीं फरियाद हम॥
कर न अब ज़ुल्मों सितम इन हरकतों से बाज़ आ।
देते हैं तुमको दुआ दिल थाम कर सैयाद हम॥

भस्म हो जाने को है।

जिस्की दिल में थी तमन्ना, वह भी दिन आने को है।
बादे ख़िज़ां जाने को है, फ़स्ले वहार आने को है॥
लूट कर हमको सितमगर जो अकड़ते हैं, उन्हें।
दाने दाने को ये हिन्दुस्तान तरसाने को है॥
भूखों मरते हैं करोड़ों लाल हिन्दुस्तान के।
उनकी आहों से सितमगर भस्म हो जाने को है॥
हम बने हैं शान्तिमय और वो तशद्दुद कर रहे।
इस जहालत से उन्हीं की हस्ती मिट जाने को है॥
जेल में भेजे हज़ारों ही मुहब्बाने वतन।
ये मुसीबत तो जलालत का क़िला ढाने को है॥
मालवी जी आ गये कस कर कमर मैदान में।
गुलशने हिन्दोस्तां में गुन्चा खिल जाने को है॥
उल्लुओं का शोर था जिस गुलशने बरबाद में।
मीठी मीठी तान बुलबुल अब वहां गाने को है॥

बाज़ आ अपने सितम से ऐ सितमगर! अब यहां।
क्योंकि हिन्दुस्तान तो आज़ादी अब पाने को है॥
जेल से छूटेंगे गाँधी, दास, शौकत, लाज, भी।
हिन्द में "भवनाथ" क़ौमी झंडा फहराने को है॥

—प्रो० 'भवनाथ'

—०—

रण में आवाहन।

निकल पड़ो अब बनकर सैनिक भंग करो फर्मानों का।
बिन स्वराज्य के नहीं हटेंगे, क़ौल रहे मर्दानों का॥
अंधी होकर पुलिस चलावे, डण्डे कुछ परवाह नहीं।
घर का माल लूट ले जावे निकले मुंह से आह नहीं॥
जेल यातना हो निर्दयदल करे गोलियों की बौछार।
ईश्वर का सुमरन कर वीरो सहते जाओ अत्याचार॥
धनीदेश, रिपुदास, नपुंसक लखें दृष्य बलिदानों का।
बिन स्वराज्य०॥

भगवन भला करे, रीडिंग का बनें यशस्वी ब्रिटिश निशान।
होय निहत्थों पर मार्शल ला शहरों गावों के दर्म्यान॥
नर नारी, बच्चों को गोरे अत्याचारी ख़ूब हनें।
भारत के कोने २ में जलियांवाला बाग़ बनें॥
चिन्ता नहीं बहे लहराता चहुँदिश ख़ून जवानों का।
बिन स्वराज्य०॥

अचल तुम्हारा धैर्य देखकर गिरवर भी टल जावेगा ।
हिंसा रहित हृदय को लखकर सागर शीश झुकावेगा ॥
देख सत्य व्रत तेज तुम्हारा हो जावेगा मन्द प्रताप ।
सह न सकेगा विधना भी तव शुद्ध शान्तिमय हिय संताप॥
चकरावेगा सिर दुनिया के राजनीति विद्वानों का ।
बिन स्वराज्य० ॥

होगा इस भारत स्वराज्य से जग में नूतन आविष्कार ।
सीखेगा संसार तुम्हीं से करना जाति देश उद्धार ॥
माधव तो कुछ नहीं चाहता सुख स्वराज्य वा रत्नागार ।
केवल हो भारत के घर २ गांधी कासा सुत अवतार ॥
रहो धर्म पर अड़े, करो भय नहीं तुच्छ से प्राणों का ।
बिन स्वराज्य के० ॥

—माधव

—०—

असहयोग—खड्ग ।

अहा ! आजका समाँ अजब कुछ रँग लाया है !
जो हमने निज हृदय एक अब कर पाया है ।
मिला गातसे गात, तातको अपनाया है,
बहुत दिनों के बाद ज़माना यह आया है ।
हृदय मिला तो सब मिला, स्वारथ के पर्दे फटे;
एकहिं पथके पथिक हो, सब पथमें हैं आ डटे ॥१॥

* * * *

मिला गुरू भी हमें, चाहिये होना जैसा,
जो आगे है खड़ा, तेजमय सूरज ऐसा।
आओ, आओ, तात! सभी अब पीछे हो लो,
अन्धकार मिट गया, देख लो, आँखें खोलो।
दुर्गम, कण्टकपूर्ण पथ, यद्यपि है आगे बड़ा;
पर भय खा मत लौटना; वीर जो वह सन्मुख लड़ा ॥२॥

* * * *

गुरु-प्रकाश तजि अगर लौटना जो चाहोगे,
अन्धकारमय विकट गर्त्त में फँस जाओगे।
तड़पोगे पछताय कहीं के नहीं रहोगे,
बुरी तरह हो अवश, अन्त बे-मौत मरोगे।
अतः सभी संकोच तजि, आओ, आगे बढ़ चलो;
गुरुवर के सँग शीघ्रही, उन्नति-गढ़पर चढ़ चलो ॥३॥

* * * *

क्या परवा जब नहीं किसी का लेना देना,
अपनाही है अजी ग़नीमत चना—चबेना।
अपनी सब कुछ भली महा सुन्दर सुखकर है,
यदि न्यामत भी होय दूसरों का बदतर है।
अपनोंकी संगति भली, होय नरकहू वास भी;
पर गैरों के स्वर्ग के जावे कभी न पास भी ॥४॥

* * * *

ग़ैर भले ही चहे हमें जिस तरह सताले,
ज़ालिम अपना ज़ुल्म जोर जितना दिखलाले।
मारे, जिन्दा रखे, क़ैद में चाहे डाले,
शस्त्रों का अरमान भले ही ख़ूब निकाले।
तोप, खड्ग, बन्दूक़ हो, या बमगोले भी गिरें;
तो भी हम बोलें नहीं, मुंह से 'उफ़' तक नहिं करें ॥५॥

* * * *

जलियाँवालाबाग़ देश एकदम बन जावे,
या नहिं कारागार सभी घर घर हो जावे।
शत्रु शस्त्र-भण्डार सभी ख़ाली कर छोड़े,
कर ले अत्याचार, शक्ति भर मुंह नहिं मोड़े।
सभी तरह के उस तरफ़, साधन औ सामान हों;
मगर इधर बस आत्मबल वा केवल मुस्कान हो ॥६॥

* * * *

यद्यपि साधन किसी तरह का हमें नहीं है,
कहते अन्तःकरण, बुद्धि भी, समय नहीं है।
तो भी है यह शक्ति, पतङ्ग हम सब होकर,
कैसा ही हो दीप, बुझा देंगे सब गिरकर।
नहीं रोक सकता इसे, कोई भी संसार में;
मगर न पड़ना चाहिये, इस ना-समझी-धार में ॥७॥

* * * *

तो भी है विश्वास, नहीं हम कभी मरेंगे,
जितने दाबे जायँ और उतने उभड़ेंगे ।
ज़ालिम के हथियार सभी बेकार पड़ेंगे,
आत्मबली निश्चय पशु-बल पर विजय करेंगे।
"असहयोग का खड्ग" यह, बिना धार औ वार का;
सुगम करेगा हर तरह, पथ स्वराज्य के द्वार का ॥८॥

—कवि 'दीन' मौलवी लतीफ़ हुसेन

लिये तलवार बैठे हैं ।

दमन करने को गर रीडिंग उधर तैयार बैठे हैं ।
तो भरने जेल को हम भी इधर सरकार बैठे हैं ॥
दिखायें गर उधर धमकी मशीनगन तोप गोलों की ।
तो खोले हम इधर छाती सरे बाज़ार बैठे हैं ॥
अहिंसा व्रत लिया हमने नहीं मारेंगे हम अब तो ।
कहो, फिर वो उधर क्यों कर लिये तलवार बैठे हैं ॥
ज़बां से उफ़ न निकलेगी, लगायें गर उदू फाँसी ।
पहना दें हथकड़ी बेड़ी किये इसरार बैठे हैं ॥
क़लम क्यों कर तू लिखती है, ज़माना खुद बदलता है ।
जो थे निर्धन कभी 'भवनाथ' बन ज़रदार बैठे हैं ॥

—श्री० भवनाथ

तैयार हैं।

तैयार हैं हम जेल में चक्की चलाने के लिये ।
कटिबद्ध हैं हम मूंज की रस्सी बनाने के लिये ॥
मंजूर सुर्खी कूटना कोल्हू चलाना है हमें ।
तैयार हैं हम अधभुना दाना चबाने के लिये ॥
कम्बल बिछौना ओढ़ने से कष्टही है क्या हमें ।
तैयार हैं हम भूमि को बिस्तर बनाने के लिये ॥
निज धर्म पालन के लिये डर तोप गोले का कहां ।
तैयार हैं आनंद से हम मृत्यु पाने के लिये ॥
जब तक नहीं स्वाधीन भारत स्वर्ग में भी सुख नहीं ।
तैयार हैं हम नर्क का ही कष्ट पाने के लिये ॥

क्या है ?
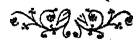
'सज़ा को जानता हूं मैं खुदा जाने ख़ता क्या है' ?
वज़ह मेरे सताने की अरे ज़ालिम ! बता क्या है ?
सबब पूछा तो वह बेदाद फिर हंस हंस के यों बोला,
अदा है, पालिसी है, चाल है तुझको पता क्या है ?
मेरा रह २ के रोना है मिसाले कुल कुले[1] मीना[2],
ग़ज़ल क्या है ! शैर क्या है ! रुबाई रेखता क्या है ?

१ शब्द २ शराब ।

जबानओ पर बंधे पिंजड़े में मैं पर फूँच कैदी हूं,
तेरे घरपर मैं मेहमां हूं सितमगर देखता क्या है ?
वतन छूटा चमन छूटा वो गुलओ गुलसितां छूटा,
कफ़स का आबोदाना और क़िस्मत में बदा है ?
शमअने खुद बखुद जलकर जलाया हाय ! परवाना,
खु.दा जाने ये खुद जलकर जलाने की अदा क्या है ?
मिसाले अश्क जब घर से ही निकले तो कहीं ठहरे,
आंख में रह चुके मिज़गां[३] पै भूले अब कबा क्या है ?
कहा यह सख्त दुश्वारी में जब आंसू नहीं निकले,
संगदिल है तेरा सीना कि या जलता तवा क्या है ?
वतन से जब हुये बाहर तो चाहे जिस जगह ठहरो,
बराये रिन्द[४] यकसां है हरम क्या ? बुतकदा क्या है ?
खुदा तौफीक दे तुझको सताना छोड़ दे ज़ालिम,
कहेंगे मरते मरते और साधू की सदा क्या है ?

—ले० 'स्वतंत्र'

"स्वतंत्र भारत"

अहा हा ! मोहन के मुख से निकला स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत।
सचेत होकर सुना सभी ने स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत॥

---

३ पलकों के बाल ४ मस्त।

समीर में नीर में गगन में वचन में तन में हरेक मन में।
बड़ी मधुर धुन समा रही है स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत॥
हरेक घर में मची हुई है स्वतंत्रता की विचित्र हलचल।
हरेक बच्चा पुकारता है स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत॥
रहा हमेशा स्वतंत्र भारत रहेगा फिर भी स्वतंत्र भारत।
दिखाई देता है स्वप्न में भी स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत॥
बना के कुटियाँ स्वतंत्रता की सपूत जेलों में रम रहे हैं।
निकल कर देखेंगे ये तपस्वी स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत॥
कुमारी हिमगिरि अटक कटक में बजेगा डंका स्वतंत्रता का।
कहेंगे तैतिस करोड़ मिलकर स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत॥

प्रतिज्ञा।
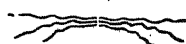
अब मैं जन्म-भूमि गुण गइहौं।
स्वार्थ-पंक में मन अपने को,
सपने में न फँसइहौं।
और न रहते स्वतन असत कह,
पातक पुंज कमइहौं॥१॥
हां हज़ूरियों की महफ़िल में,
बैठे न समय गँवइहौं।
आई सेठ को जँमुआई लख,
चुटकी नाहिं बजइहौं॥२॥

जननी-उद्धारक सेना में,
अपनो नाम लिखइहौं ।
'कर्मवीर' अध्यक्ष की आज्ञा,
सादर शीश चढ़इहौं ॥३॥
अपनी मां का देख म्लानि मुख,
खान पान तजि दइहौं ।
करूँ उसे स्वाधीन न जब लों,
तब लों शांति न लइहौं ॥४॥
संकट देख न पीछे हटकर,
माँ की कूख लजइहौं ।
वीर तनय हूँ, आगे बढ़कर,
निज पौरुष दिखलइहौं ॥५॥
ठोकर का बदला ठोकर से,
भूल न कबहुँ चुकइहौं ।
मात्र आत्म-बल-द्वारा शत्रुन,
का मद धूलि मिलइहौं ॥६॥
माँके सुत सब मान एक से,
प्रेम प्रतीति बढ़इहौं ।
उनके दुख में दुख सुख में,
सुख मानमुदितमनरइहौं ॥७॥
श्री जनता-जनार्दन सेवा,
में बस चित्त लगइहौं ।

जगफुलवारी में यों कृत कर,
कीर्ति लता लहरइहौं ॥८॥
'शर्मा' श्रीगुपाऽ कह कबहूँ,
नश्वर तन तजि दइहौं ।
अतः सोच निशि दिन 'जननी' की,
जय २ कार मनइहौं ॥६॥

—"शर्मा"

प्रोत्साहन

आओ भाई हिलमिल करके होवें माता पर बलिदान ।
लेशमात्र संकोच न होवे अर्पण कीजै तन धन प्रान ॥
बज्र पात हो चाहे विद्युत तड़ित कर अपना आवेश ।
ताड़ित हों या किसी भाँति से जावें दुःख न उर में लेश ॥
दशों दिशा पूरित आँधी से यदि हो मार्ग कंटकाकीर्ण ।
चिन्तित हों न कभी पग निश्चल क्षेत्र करें अपना विस्तीर्ण ॥
तोड़ेंगे सम्बन्ध आप से मोड़ेंगे मुख, सब दुख भोग ।
वतला दो यह शासक गण को नहीं करेंगे अब सहयोग ॥
बहुत दिनों दिखलाई हमने रक्षक के प्रति अपनी भक्ति ।
रक्षक हो यदि भक्षक हो तो नहीं सहन करने की शक्ति ॥
लेंगे पूर्ण स्वराज्य देश के मिलकर गावें गीत सहर्ष ।
गूँजित होगी यही प्रतिध्वनि जय जय जय जग भारतवर्ष ॥

—लक्ष्मीनारायण पांडेय ।

अहिंसा-संग्राम ।

हुई ललकार, वीर हो, उठो; बढ़ो लो खोल सत्य-तलवार ।
पटक दो दूर पाप की म्यान; समझ लो स्वयं ब्रह्म अवतार ॥
पाप का होता अत्याचार; बचालो हो न सृष्टि-संहार ।
हार वसुधा के बन कर खिलो; सुरभि से गूँज उठे संसार ॥

—०—

उधर है अनाचार छल-छन्द; तुम्हें करना है उसका नाश ।
पास होगा वह चकना चूर; दूर से दिखता सौम्य प्रकास ॥
वीर जिनका स्वतन्त्रता प्रेम; चल रही है जीवन की आस ।
मोह अन्तिम घड़ियों का छोड़; छोड़ जग का सारा उपहास ॥

—०—

अस्त्र से हीन दीन पुरुषत्व; लिए हैं खड़े युद्ध के बीच ।
आत्म-बल पर है विश्वास; उधर है चाल नीच से नीच ॥
वीर अर्जुन का पाकर त्राण; जिसे मोहन ने किया प्रदान ।
पहिनकर सजे अजेय अभीत; बेध सकता न शक्ति का बाण ॥

—०—

डटी उस ओर पाप की सैन्य; सैन्यपर व्यूह, व्यूह पर सैन्य ।
दिखाने को अपना आतंक; और दलने को दुखिया दैन्य ॥
इधर है बसी देश की लाज; वीर हैं बाँधे खड़े कतार ।
गूंथ कर तन मन धन के पुष्प; चढ़ाने को चरणों पर हार ॥

—०—

हो रही गोलों की बौछार; छार होते रुक रुक कर वार।
तार उनका न टूटता किन्तु; सभी हैं अड़े मौत के द्वार॥
चला वह भाला तीखा तेज; शूल सब अस्त्र शस्त्र बे जोड़।
झूलने लगे छील कर देह; ख़ून बह चला लगा कर होड़॥

—०—

हो रही है खासी नरमेध; खड़े हैं बलिवेदी पर वीर।
घोर गिरि से ध्रुव से गंभीर; भीर को चीर चले ज्यों तीर॥
भीष्मसे दृढ़ प्रतिज्ञ, सुखसाज; त्याग कर चले भरतसा राज।
सभी उत्सुक हैं पहले कौन; भाग्य से आता उनके काज॥

—०—

प्रेम से मतवाले रणधीर; देख उठती अरि की तलवार।
झुका देते हैं बढ़ कर शीश; नहीं बदला लेने का खार॥
वीर सब सत्य अहिंसा वृती; सहन करते हैं रिपु के वार।
और हँसते पाकर बे करार; चौंकता मन्दोमत्त संसार॥

—०—

अहिंसा का अद्भुत संग्राम; छिड़ा है भू-मण्डल पर आज।
निरस्त्रों की यह क्षमता देख; घृणा से मुंह ढकलेती लाज॥
ताज हिंसा का है लुट रहा; लक्ष्मी लिए खड़ी जयमाल।
चूमने को उत्सुक हो रही; अहिंसा के सैनिक का भाल॥

—मंगलप्रसाद विश्वकर्मा

अदब सिखाने खड़े हुये हैं।

जिन्हें पिलाया था दूध हमने कपाल मिसरी मिला २ कर।
वह मार बन कर हमारे आगे बड़े अदब से खड़े हुये हैं॥
अभी बचाई थी जिनकी कश्ती खुदा २ कर रहे अदम से।
वह गर्क़ करने को हाय बेड़ा हमारे पीछे पड़े हुये हैं॥
अभी जो थे अपने तिफ्ले मकतब पढ़ा था हमसे कलाम अव्वल।
बने हैं उस्ताद आज अपने अदब सिखाने खड़े हुये हैं॥
अभी २ कुछ हमारे घर के इधर उधर से उठा के रोड़े।
वह डेढ़ ईंटों की अपनी मस्जिद जुदी बनाने खड़े हुये हैं॥
जला हुआ है यह सोज़े दिल है नहीं फ़लक़ को किसीसे यारी।
यहां है मेहमां वो एक शब के जो मिस्ल तारे जड़े हुये हैं॥
है चर्ख़ यह मिस्ल चर्ख़ दुनियां खड़े २ हम भी झूलते हैं।
कभी तो ऊंचे चढ़ेंगे हम भी जो आज नीचे पड़े हुये हैं॥
हमारे हक़ में यही है न्यामत मिले जो आज़ाद हो के रोटी।
नहीं ज़लालत के ज़र्द चावल जो ख़ूब घी में मड़े हुये हैं॥
ख़राब ख़स्ता है वह ख़राबा यहां तकब्बुर का काम क्या है।
हिलाल यह भी हुये हैं आख़िर हिलाल मह जो बड़े हुये हैं॥
है बागे दुनियां को जाये-इब्रत निशात किसका यहां है दम भर।
बढ़ा रहा है वह दस्त गुलचीं यह गुल जो फूले खड़े हुये हैं॥

ज़मीकामहवर यहां का जबसे मिसाल कज़द्रुम हुआ है दम भर।
किसी की रातें हुई हैं छोटी किसी के दिन जो बड़े हुये हैं ॥
मिसाल माहो महर क़फ़स में पड़ा है शब को तो एक दिन को।
अज़ल के मुख में पड़ेंगे वह भी हज़ार तारे जड़े हुये हैं ॥
सहर के पहले वह गुल जो चुपके ज़रा हंसा था कि रोके निकला।
सुबह जो देखा मिसाले शबनम रुखों पै आंसू पड़े हुये हैं ॥
मिसाल बुलबुल जो उनकी उंगली पै नाचते थे फुदक २ कर
नहीं हैं आज़ाद आज यह भी उसी क़फ़स में पड़े हुये हैं ॥

तेरी दम के लिए ।

ज़बान खुल भी न पाई बयाने ग़म के लिये ।
कि तेग़ उसने उठाई उधर सितम के लिये ॥
फ़िज़ूल जाया न कर तू ये जुल्म बाक़ी रख ।
ख़ुदा के रूबरू कुछ हश्र में क़सम के लिये ॥
किया था पस्त जर्मनी को ये वही दम है ।
निसार दम है ये हरवक़् तेरी दम के लिये ॥
मिटा दे हो सके जिस तरह जल्द ही ज़ालिम ।
न वक़् दे तू असीराने चश्मेनम के लिये ॥
यहाँ तो मुफ़्त शहीदों का ख़ून मिलता है ।
बुझा ले तिश्नगी काफ़ी है तेग़े ख़म के लिये ॥

ख़ुदा के बन्दे हैं हम भी तो कैसा यह इन्साफ़।
कि जामे शीरांपिय आप हम हों सम के लिये॥
रुका जो क़त्ल से क़ातिल तो बोला यूं शीतल।
उठा न रख खड़े मुस्ताक़ हैं करम के लिये॥

—शीतलाप्रसाद विशनोई
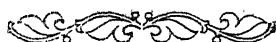
बजे डंका अहिंसा का।
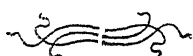
मचा संग्राम है जग में अहिंसा और हिंसा का।
बजेगा जीत का डंका अहिंसा का न हिंसा का॥
हज़ारों वार हों तो हों चलेंगे सीना फैलाये।
उड़ावेंगे जगत भर में विमल झंडा अहिंसा का॥
डरें क्या अस्त्र शस्त्रों से छुवें क्या अस्त्र शस्त्रों को।
हमारा राष्ट्र ही जब है स्वयं सेवक अहिंसा का॥
बिना जीते महा रण के न जीते जी टलेंगे हम।
तजेंगे त्यों न तिल भर को कभी रस्ता अहिंसा का॥
भले पालेसियां चल चल हमें कोई भुलावे दें।
भुलावे में न आवेंगे दिखा विक्रम अहिंसा का॥
न हम नापाक खूनों से रंगेंगे पाक हाथों को।
हमारा ख़ून हो तो हो समर होगा अहिंसा का॥

कभी धीरज न छोड़ेंगे जहां में शान्ति भर देंगे।
सिखावेंगे सबक सब को अहिंसा का न हिंसा का॥
हमारे दुश्मने जानी भी होंगे दोस्त कल आके।
कहेंगे सर झुकाके यों बता दो गुर अहिंसा का॥
तमन्ना है न दुनिया में निशां भी हो गुलामी का।
सभी आज़ाद हों क़ौमें बजे डंका अहिंसा का॥

—गिरधर शर्मा

क़िस्मत का आख़िर यही फैसला है।

गिरफ़्तारियों का उन्हें हौसिला है।
तो हमको भी उनका नहीं कुछ गिला है॥
जोशे जुनूंका ये एक बलवला है।
न तब कुछ मिला था न अब कुछ मिला है॥
सताते रहे जुल्म ढाते रहे वो।
सितमगर के सितमों का अब गुल खिला है॥
उड़ाते वे मौजें रिआया है भूखी।
उन्हें क्या पड़ी है कि कैसा बला है॥
कहा कुछ तो बोले-'ज़ुबां बन्द करलो'।
हुकूमत का उनका ये क्या सिलसिला है॥
इकट्ठा किए हरसू आफ़त के सामां।
मुसीबत में हर दिल हुआ मुब्तिला है॥

जब आते हैं मिटने के दिन देख पड़ता—
जो अच्छा बुरा है बुरा वो भला है ॥
फ़ौजों की तोपों की धमकी से क्या हो।
यां तो अहिंसा का बांधा क़िला है ॥
न होगा असर कुछ मशीनगन का बमका।
अमर आतमा को वो बख्तर मिला है ॥
मिटाओगे हमको तो ख़ुद ही मिटोगे।
क़िस्मत का आख़िर यही फैसला है ॥

—रमाशंकर शुक्ल

सत्याग्रह-संग्राम ठने।

सत्याग्रह की रणस्थली में वीरों को अब जाने दो;
पर ज़ालिम पर तनिक चोट भी जीते जी मत आने दो।
उधर तोप तलवार बम्ब हों जंजीरें हतकड़ियाँ हों;
इधर प्रेम हो क्षमा-खड्ग हो, फूलों ही की झड़ियाँ हों ॥
उधर जेल का द्वार खुला हो, मन में भय मत आने दो;
कृष्ण-सदन मानो तुम उसको, भली भांति भर जानेदो।
स्वतंत्रता तो तभी मिलेगी, भारत सच्चा जेल बने;
सत्य, अहिंसा पूर्ण हमारा, सत्याग्रह-संग्राम ठने ॥
स्वतंत्रता देवी का भारत सच्चा पूजक बीर बने;
आज़ादी के लिए भले ही ज़ालिम हम पर शस्त्र हने।

कायर क्रोध हृदय में लाकर, नामर्दी मत आने दो;
बीरो ! बीर उपासक बन कर, मनको मत मुर्झाने दो ॥
निर्वासन हो भले देश से शूली पर भी चढ़वादें;
लेश नहीं हम आह करेंगे, भीतों में भी चुनवा दें ।
नेताओं की घोर तपस्या व्यर्थ नहीं हो पवेगी;
शस्य श्यामला भारत-माता, पूर्ण स्वतंत्र कहावेगी ॥
मातृ भूमि से दमन-दासता जल्दी मार भगाने दो;
भारत की प्राचीन प्रभा को फिर से हमें जगाने दो ।
पूजनीय श्री गांधी जी को ले स्वराज्य छुड़वाने दो,
रामराज्यफिर सेभारत में। वैभवयुतछा जाने दो ॥

—विद्यार्थी

काल चक्र ।
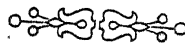
समय ने है पल्टा खाया, रंग अब भारत भी लाया ।
चले ना छलियों की माया, जिन्होंने अब लौं भरमाया ॥१॥
देश के लाल बिचरते हैं, सभायें दर दर करते हैं ।
फुदक कर बुलबुल ने गाया, समय ने है पल्टा खाया ॥२॥
विरोधी टाँग अड़ाते हैं, उलट कर मुँह की खाते हैं ।
रक्त भारत का गरमाया, समय ने है पल्टा खाया ॥३॥

जिन्हें सब नीच समझते थे, लात से ख़ूब कुचलते थे।
उन्होंने धोली है काया, समय ने है पल्टा खाया ॥४॥

सिंह सोते से जाग उठा, झुण्ड भेड़ों का काँप उठा।
गरज से जंगल थर्राया, समय ने है पल्टा खाया ॥५॥

देशहित जेल इन्द्रपुर है, रत्न आभूषण बेड़ी है।
मुक्ति का द्वार मृत्यु पाया, समय ने है पल्टा खाया ॥६॥

भले दिन आने वाले हैं, बुरे दिन जाने वाले हैं।
हुई है ईश्वर की दाया, समय ने है पल्टा खाया ॥७॥

मित्रवर! ख़ूब सँभल जाना, नाम भारत का चमकाना।
कहे पाठक क्यों घबराया, समय ने है पल्टा खाया ॥८॥

—विजय नारायण शर्मा

पाप का घड़ा।

पथिक होकर आया तू द्वार, हर्ष से स्वागत हमने किया।
लगाया विमल-हृदय सस्नेह, बैठने को फिर आसन दिया॥
क्षुधा से पीड़ित व्याकुल देख, अशन दे कठिन कष्ट हर लिया।
भटकता आश्रय बिना निहार, ठिकाने ठौर ठहरने दिया॥
मिला उसका प्रतिफल प्रतिकार।
गया तन धन का सब अधिकार॥

समझ में आई लेकिन आज ।
दग़ा तेरा था वह महराज ॥
हमें क्या उसकी है परवाह, समझता धर्म-दण्ड सिर पड़ा ।
धर्म है मेरा जीवन प्राण, धर्म-पथ पर हूं निर्भय अड़ा ॥
धर्म की होगी निश्चय जीत, रत्न गीता यह भी है पढ़ा ।
मिलेगा तुझे कर्म-फल शीघ्र, फूट अब चला पाप का घड़ा ॥

—विमल

चेतावनी ।

(ग़ज़ल)

दमन की तेग़ अगर आपने चलाई है ।
खुशी से हम भी मिटेंगे, यही है ठान लिया ॥
क़ैद करने में हो राज़ी तो शौक़ से करिये ।
हमने भी जेल को आरामगाह मान लिया ॥
न्याय के मद में पगे न्याय से होकर बाहर ।
हम ग़रीबों को सताया, ये बुरा है काम किया ॥
मिटाओ जितना मिटा सकते हो हमें साहब ।
हम भी अब मिट के मिटायेंगे यही ठान लिया ॥
बिना स्वराज्य लिये अब न हटेंगे 'बर्मन' ।
मार्ग लेने का इसे, हमने है पहचान लिया ॥

—लक्ष्मीनारायण 'बर्मन'

स्वातन्त्र मूर्ति ।

मातृ भूमि पर जिस मनुष्य का लगा ध्यान है,
स्वाभिमान पर मर जाने का जगा मान है।
जिसमें सच्चा त्याग और बलिदान भरा है,
जिसके गुण से गौरवमय यह वसुन्धरा है ॥
वह पारस मणि विश्व का स्वर्ग दून सदृश लगे।
जिसको छूले वह तुरत हेमवर्ण बन जगमगे ॥१॥
आत्मशक्ति का अनल हृदय मंदिर में धधके,
दमन ववंडर लड़े अतः अधिकाधिक भभके।
पड़े न पीछे पैर हिमालय सम दृढ़ता हो,
किन्तु लक्ष्य की ओर बीर क्षण क्षण बढ़ता हो ॥
वागडोर इस विश्व की ले सकता है हाथ में।
अन्यायी पीछे रहें परछाईं के साथ में ॥२॥
गहे रहे शमशेर सदा स्वातंत्र्य आन की,
जिसमें होवे चढ़ी शान धन धाम प्राण की।
कर दधीचि सा त्याग घोर झनकार सुना दें,
साथी करके सजग शत्रु को बधिर बना दें ॥
अपने एक प्रहार से रिपु कुम्भस्थल फोड़ दे।
मुक्ता लड़ी बिखेर के मद मय मुख को मोड़ दे ॥३॥

— चन्द्रभान 'विभव' (लखनऊ ज़िला जेल से)

मैक्स्विनी का अन्तिम सन्देश।
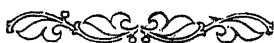
(१)

कष्टों को दहलाने वाले, निष्ठुर, क्रूर, कँपानेवाले।
आवें और सतावें हमको, हम कष्टों के ही हैं पाले॥
तंग करें मनमाने ढँग से, जुल्मी पापी दिल के काले।
अटल रहेंगे सहलेवेंगे, हम दुःखों के तीखे भाले॥

(२)

पराधीन बन्दी रहकर हम, अन्न न मुँह में डालेंगे।
प्राणों पर प्रमुदित खेलेंगे प्रण को पूरा पालेंगे॥
सात्विक बल से सहनशक्ति से, भूमण्डल दहलावेंगे।
मातृभूमि पर मरमिटकर हम, अमर वीर कहलावेंगे॥

(३)

प्रभु के पदपद्मों पर सादर, उनकी वस्तु समर्पित है।
अचरज यह ईश्वर को अबतक, क्योंनभेंटयह स्वीकृतहै
संभव है अन्यायी दल को, समय दयामय देते हैं।
नटवर उनके वज्र हृदय की, कठिन परिक्षा लेते हैं॥

(४)

इंग्लैण्ड प्रजा इन्सान बनेगी, इस हत्या को टालेगी।
स्वेच्छाचारदबावेगी निज, प्रभु की आज्ञा पालेगी॥
यदि कहीं फँसी उनके चंगुल, वहनिजनाममिटावेगी।
निज गौरव को सिंहासन से, भू पर चित्त लिटावेगी॥

(५)

जो हो, यदि वह नहीं रुकेगी, तो मैं हूं तैयार खड़ा।
मरने को प्रस्तुत हूँ प्रमुदित, प्रभु पदपर है शीश पड़ा॥
बड़े भाग्य से मातृभूमि पर, बलि होने को मिलता है।
ऐसे बड़भागी का जग में,यश सरसिज नित खिलता है॥

—श्रीयुत नृसिंह

उत्साह दान।

बढ़े चलो भारत के पुत्रो, नेक न अब विश्राम करो।
भारत माता की वेदी पर, तन अपना बलिदान करो॥
विकट परीक्षा का अवसर है, बतला दो सारे जग को।
तय करते हैं किस साहस में, कांटों से पूरित मग को॥
हम भारत के बीर पुत्र हैं, भारत पर दे देंगे जान।
स्वतंत्रता के तुमुल युद्ध में, हो जायेंगे सब कुर्बान॥
विश्व कँपा देवेंगे अपनी, बज्र नाद हुंकारों से।
कर देंगे परास्त दुश्मन को, अहिंसा की मारों से॥
भारत के झंडे के नीचे, मिलकर हम भारतवासी।
विचरेंगे स्वतंत्र भारत में, भारत के अब अधिवासी॥

—प्रेमिक

अकाली सिक्खों की वीरता।

(अहिंसात्मक युद्ध का सच्चा दृश्य)

बने हैं तख़्ते मुश्क़े सितम अकाली सिख।
गुरु के बाग़ से जाते हैं कोतवाली सिख॥
गुरु के बाग़ में किस तरह ग़ैर को देखें।
जब उसके मालिक वारिस हैं और वाली सिख।
गुरु के बाग़ में है ये मुख़ालफ़त कैसी।
न काट डालें कहीं आके ख़ुश्क डाली सिख॥
उन्होंने ख़ून से उसकी ज़मीन सींची है।
कमाल रखते हैं अपने हुनर में माली सिख॥
ज़फ़ाएँ झेल रहे हैं कमाल करते हैं।
सुने न ये कभी पंजाब में कमाली सिख॥
गुरु का बाग़ ने लेकिन ये कर दिया साबित।
के तरफ़ रखते हैं बेशको शुबह आली सिख॥
बहादुरी में वो यकता हैं साथ ही लेकिन।
नहीं हैं क़ूवते बरदाश्त से भी ख़ाली सिख॥
पुलिस ने ख़ूब ही मोटे लठों से कूटा है।
ये बात क्या है वने आदमी से शाली सिख॥
पुरअमन तर्केमवालात का ये है ऐजाज़।
वगरन चूकनेवाले न थे अकाली सिख॥

गुरु की इश्क की मय रखती हैं अजब तासीर।
पिये हुये हैं इसीकी तो एक प्याली सिख ॥

—मौलाना वजाहतहुसेन साहब

आबरू सरकार की ।

जङ्गे जर्मन में जिन्होंने ज़र व जान निसार की ।
फिर उन्हीं पञ्जाबियों पर ज़ुल्म की बौछार की ॥१॥
धर्म पर जो जान देने के लिये तैयार थे ।
उन अकाली भाइयों पर मार की भरमार की ॥२॥
शान्तिमय सिक्खों के ऊपर लट्ठ बरसाये गये ।
लेखनी थर्रा रही लिखते दशा गुरुद्वार की ॥३॥
घायलों पर हाय घुड़दौड़ें भी करवाई गईं ।
हो गई हद ! हो गई हद ! पाशविक व्यवहार की ॥४॥
एक तरफ़ तो सत्य पर क़ायम अकाली बीर हैं ।
एक तरफ़ सरकार ने बे-ग़ैरती अख़त्यार की ॥५॥
या हिफ़ाज़त करके रक्खें या मिलायें ख़ाक में ।
हाकिमों के हाथ में है आबरू सरकार की ॥६॥
मान म्लेक्षों का मिटा कर धर्म की रक्षा करें ।
अब ज़रूरत है गुरुगोविन्द के अवतार की ॥७॥

घायलों के मुंह से आती है यही 'सरयू' सदा।
कुछ दिनों में डूबती है आबरू सरकार की ॥८॥

— सरयूप्रसाद शुक्ल
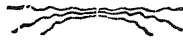
सैय्याद।

हो सके जितना हमें ख़ूब दबा ले सैय्याद।
जितना जी चाहे हमें और सता ले सैय्याद॥
आग हरगिज़ न बुझेगी यह वतन की दिल से।
जिस तरह चाहे उसे खूब बुझा ले सय्याद॥
खोल कर दिल तू मशीनगन भी चला ले हम पर।
बे परों बाजुओं पर बम भी गिरा ले सैय्याद॥
यों न क़ाबू में न हम आयेंगे तेरे हरगिज़।
अब भी डायर को ज़रा और बुला ले सय्याद॥
अल्टीमेटम तुझे देते है यह मरदों को तरह।
बेगुनाहों का लहू ख़ूब बहा ले सय्याद॥
खौफ़ मुतलक नहीं अब हमको गिरफ़्तारी का।
जितने जी चाहे क़फ़स और बना ले सय्याद॥
डूबने ही को है अब तेरा घड़ा पापों का।
ताले मुँह पर मेरे तो और लगा ले सय्याद॥
क़ैद तो कर लिया गंगा को मगर जब जानूं।
कब्ज़ा आज़ादिये दिल पर भी जमा ले सय्याद॥

—गंगा

श्रीकृष्ण आवाहन

—o—

आजा आजा ऐ मेरे कृष्ण पियारे! आजा।
राधिका नाथ यशोदा के दुलारे आजा॥
जान बसुदेव की भारत के सहारे आजा।
जगमगाते हुए आकाश के तारे आजा॥
मुन्तज़िर तेरे हैं ऐ मोर मुकुट वाले! हम।
कब तलक बैठे रहें मुँह को दिये ताले हम॥
क्या सुनाएँ भला इस तरह से फ़रयाद तुझे।
आ! दिखलायें ज़रा ख़ानए बरबाद तुझे॥
है कुरक्षेत्र के भी अपने बचन याद तुझे।
आ! अगर रखनी है अब धर्म की मर्याद तुझे॥
धर्म की ग्लानि हुई दीन हुये पामाल।
आजा! आजा! तुझी पर है नज़र दीन दयाल॥
कौरवों का महा अभिमान उतारा तूने।
कंस, सिसुपाल, जरासिंधु को मारा तूने॥
ग्राह के फंद से गजराज को उबारा तूने।
ध्यान से भक्त बिदुर को न बिसारा तूने॥
रंक से तूने सुदामा को बनाया राजा।
इक नज़र मिहर की इस ओर भी करदे, आजा॥
धर्म की जंग शुरू हिन्द में फिर आज हुई।
चीर बस खिंच चुका भारत-धरा बे लाज हुई॥

क़ौम बरबाद हुई, मिट गई, मुहताज़ हुई !
हाय ! अरजुन की यह सन्तान 'महाराज' हुई ॥
"मुज़तरिब" है यह सुना दो ज़रा गीता इसको।
हाथ फिर पकड़ो अगर रखना है जीता इसको ॥

—मुज़तरिब

प्यारा वतन।

—:o:—

गर न कोई गुल खिला बीरां चमन हो जायगा।
पाकदामन ख़ून में काला कफ़न हो जायगा ॥

* * * *

हिन्द के गुलशन को सींचा गर जो अपने ख़ून से।
ग़म नहीं कुछ जो मेरा छलनी बदन हो जायगा ॥

* * * *

शान इंग्लिस्तान क़ायम ज़ुल्म से होगी नहीं।
लाल छींटों से तेरा मैला गगन हो जायगा ॥

* * * *

हिन्द के पौदे क़लम जो ज़ुल्म के ख़ञ्जर से हों।
चन्द दिन में फिर यही बाग़े अदन हो जायगा ॥

* * * *

आबरू आख़िर मिलेगी इस ज़माने में उसे।
केसरी बाने में जो शैदा वतन हो जायगा ॥

* * * *

जो हुये 'प्रेमी' फ़िदा अपने वतन की आनपर।
शक नहीं इस कशमकश में फिर अमन हो जायगा ॥

—पं० प्रियव्रत जी विद्यालंकार

लेनिन का हिमायती।
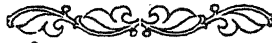
जो हम सर है कभी अपना
झुका वह सर नहीं सकता।
फ़िदाये मुल्क, ज़ालिम!
ख़्वाब में भी डर नहीं सकता॥
ख़याल आज़ाद ज़ुल्मों से
कभी हो सर नहीं सकता।
जिसे रखता खुदा है
कोई कुछ भी कर नहीं सकता॥
दग़ाबाज़ो! दग़ाबाज़ी से लेनिन मर नहीं सकता!
अमर होता है मर कर
देशहित नरवर जो मरता है।
जो आता काम है जग के
सदा जग में बिचरता है॥
तपाने से वह सोने की
तरह सुन्दर निखरता है।
ज़फा से सूरमा वह सांस
ठंढी भर नहीं सकता॥
दग़ाबाज़ो! दग़ाबाज़ी से लेनिन मर नहीं सकता!
मरा ईसा मगर अब तक
कहो वह क्या न बाक़ी है?

मुहम्मद भी मरा, उसका
मगर ईमान बाक़ी है ।
चढ़ा मंसूर सूली पर
पर उसकी शान बाक़ी है ।
मिटाने से कभी मिट
कुदरती जौहर नहीं सकता ॥
दग़ाबाज़ो ! दग़ाबाज़ी से लेनिन मर नहीं सकता !
मरेंगे यह नहीं हर्गिज़
हो 'गाँधी' या के हो 'लेनिन' ।
इन्हें पानी डुबाये या,
जलाये आग कब मुमकिन ॥
नज़ारा देख लेना आप
भी प्रहलाद का इकदिन ।
बसाता है जिसे मौला
उजड़ वह घर नहीं सकता ॥
दग़ाबाज़ो ! दग़ाबाज़ी से लेनिन मर नहीं सकता !
अगर हैं राम गांधी तो
लखन लेनिन, ये भाई हैं ।
ग़ुलामी सुपनखा की
जानते अच्छी दवाई हैं ॥
'बहादुर' इक से इक हैं
वाक़िफ़े रम्ज़े ख़ुदाई है ।

कोई कपटी मुनी हनुमान
को अब छर नहीं सकता ॥
दगाबाज़ो! दग़ाबाज़ी से लेनिन मर नहीं सकता!

—"बहादुर"

—०—

स्वर्ग-सदन।

बस समझ लो कि हमें जेल में जाना होगा।
गांधी-आदेश से चरखे को चलाना होगा ॥१॥
हिन्द में क़ौम के दुश्मन हुये जहाँ तक हैं।
उनकी करनी का मज़ा उनको चखाना होगा ॥२॥
तीर, तलवार हमारा न बिगाड़ेंगे कुछ।
वन्देमातरम की फ़क़त ढाल बनाना होगा ॥३॥
क़ैदखाने की किसी और को धमकी देना।
कृष्णघर में तो हमें आप ही जाना होगा ॥४॥
'सर' की पदवी को बगल अपनी में दबा लो तुम।
हमें गान्धी का चलन चलना चलाना होगा ॥५॥
नीचतर नीच वही देश से जो मुंह मोड़े।
'पुष्प' क्या सोचते हो देश पै मर जाना होगा ॥६॥

—बेणीप्रसाद श्रीवास्तव

—:—

परदेशी-व्यवसाय-नीति सब पूँजी हाय पचावेगी।
ते जननी बेचारी अपनी कैसे लाज बचावेगी॥

(४)

पेट रगड़कर हाय विवश हो डरडर करचलने वालो!
स्वाभिमान सम्मान ज्ञान-गौरव खोकर गलने वालो!
बल-वैभव विहीन होकर जठरानल में जलने वालो!
पराधीनता पिशाचिनी की गोदी में पलने वालो!
परतन्त्रता पेट काटेगी पाटम्बर पहनावेगी
ते जननी बेचारी अपनी कैसे लाज बचावेगी॥

(५)

धोखे से इस बिकट विदेशी-कीचड़ में धंसने वालो!
वन्दी बनकर इसी कोट से अपना तन कसने वालो!
वचो खलों के कठिन फंद में बुरी तरह फँसनेवालो!
अपनी कृति परलोक हँसाकर व्यर्थ हँसी हँसने वालो!
विलासिता सज-धज कर तुमको जो यों बधू बनावेगा।
तो जननी बेचारी अपनी कैसे लाज बचावेगी

(६)

यही ठीक है,चलो इसी पर मुक्ति मार्ग चुनने वालो!
करुणा-क्रन्दन और भयंकर कोलाहल सुनने वालो!
धुनो धैर्य से रुई व्यथित हो व्यर्थ शीश धुननेवालो!
बुनो स्वदेशी-वस्त्र विकल हो उधेड़ने बुनने वालो!
यदि स्वेच्छाचारिता थिरक कर भीषण रूप दिखावे गी
तो जननी बेचारी अपनी कैसे लाज बचावेगी

(७)

टूटी फूटी नाव, दूसरों के बल पर खेने वालो !
देकर निज पतवार, स्वयं आपत्ति मोल लेने वालो !
सब अपना व्यवसाय विदेशी हाथों में देने वालो !
अपने ही पय से सहर्ष इन व्यालों को सेने वालो !
सुकुमारता, सदा यदि लंदन से साड़ियाँ मँगावेगी।
तो जननी बेचारी अपनी कैसे लाज बचावेगी ॥

(८)

तनिक सूत के लिये, सदा औरों का मुख तकने वालो!
एक लँगोटी या लँगोट से अपना तन ढकने वालो !
मृगतृष्णा में दौड़ दौड़ कर सारा दिन थकने वालो!
पाकर झिड़की मार और अपशब्दों से छलने वालो!
निर्बलता जाकर विदेश में कब तक गाँठ कटावेगी।
तो जननी बेचारी अपनी कैसे लाज बचावेगी ॥

—'एक राष्ट्रीय आत्मा'

* इस कविता पर श्री वेणीमाधव खन्ना की तरफ़ से ४१) रुपया पुरस्कार दिया गया है।

स्वराज्य-साधन ।

पहन स्वदेशी बनो स्वदेशी झट स्वराज्य मिल जायेगा ।
भारत के सौभाग्य-सूर्य से, विश्व-कमल खिल जायेगा ॥
छोड़ विदेशी वस्त्र सभी नित खद्दर का व्यवहार करो,
घर घर चरखा चला, कातकर सूत, देश उद्धार करो ।
अपने पैरों आप खड़े हो, भ्रातृभाव में रँग जाओ,
रक्खो राम-भरोसा केवल, भारत का नित गुण गाओ ।
गान्धी के आज्ञा-पालन से मैञ्चेष्टर घबड़ायेगा ।
लंकाशायर लंका-गढ़ सा धधक धधक जल जायेगा ॥
विलासिता है दुख की सीढ़ी उस पर अब चढ़ना छोड़ो,
धर्म कर्म सब खो देती है, झट उससे नाता तोड़ो ।
पराधीनता पाश गले में मत डालो पड़ कर छल में,
स्वतन्त्रता के बनो उपासक, शीघ्र मिलो गान्धी दल में ।
करो प्रतिज्ञा मन में धारण, शत्रु-हृदय हिल जायेगा ।
सदियों का मुरझाया भारत दम भर में खिल जायेगा ॥
जननी जन्मभूमि-हित कितने वीर पड़े हैं जेलों में,
उठो सहो जो सङ्कट आवे फँसो न व्यर्थ झमेलों में ।
साठ करोड़ देश के रुपये भारत ही में रह जावें,
बहिष्कार कर दें ऐसा जब हम सपूत तब कहलावें ।

कोड़ों से पिट कर पीठों का चमड़ा जब छिल जायेगा।
तब भी पहनेंगे खद्दर ही बस स्वराज्य मिल जायेगा॥
खादी की सादी पोशाकें शादी में भी बनवाओ,
बरबादी को बिदा करो अब आज़ादी को बुलवाओ।
देख त्याग बीरत्व देश का ईश्वर का दिल आयेगा,
रोक नहीं सकता कोई, तब झट स्वराज्य मिल जायेगा।

—ला० हरमुखराम छावछरिया

आँखों का सितारा चरखा।

चर्ख़ चक्कर में पड़ा देख हमारा चरखा।
होश गैरों के उड़े ज्योंही सँभारा चरखा॥
मानचेस्टर को इसे देख रुलाई आई।
चीख कर उसने कहा, हा-मुझे मारा चरखा॥
भूख से इसने बचाये हैं हज़ारों मरते।
दीन दुखियों का बना आज सहारा चरखा॥
इसके चलते ही खुलीं ख़ूब हमारी आंखें।
बन गया हिन्द की आंखों क सितारा चरखा॥
'लाल' की बात सुनी झूंठ न इसको समझो।
'हमको आज़ाद बनायेगा पियारा चरखा'॥

—:-:—

—'लाल'

जग उठा जग में नव वर्ष है।

(१)

प्रकृति है प्रतिभा प्रकटावती, लहलही लतिका लहरावती।
हुलसता हिय में अति हर्ष है, जग उठा जग में नव वर्ष है॥

(२)

भुवन में भुवि भारत भव्य है, लुट रहा मुद मंगल द्रव्य है।
उमगता उठता उत्कर्ष है, जग उठा जग में नव वर्ष है॥

(३)

कलुषिता कुटिला कुलतन्त्रता; परम पातकिनी परतन्त्रता।
मर मिटीं, निघटा अपकर्ष है, जग उठा जग में नव वर्ष है॥

(४)

चल रहा चहुंधा यह मन्त्र ही, सफल हों शुचि सभ्य स्वतंत्रहीं।
बढ़ रहा बहु व्यग्र विकर्ष है, जग उठा जग में नव वर्ष है॥

(५)

अमित 'अभ्युदयी' ध्रुव 'धर्म' का, सफल साधक श्री शुभकर्म का।
यह "सुपुत्र" पुनीत प्रदर्श है, जग उठा जग में नव वर्ष है॥

(६)

बढ़ रहा बलसे 'त्रय' सालसे, चहुं दिशा चलता द्रुत चालसे।
बह रहा नवजीवन दर्श है, जग उठा जग में नव वर्ष है॥

(७)

असहयोग किये प्रति पाप से-कर सुयोग सुकर्म कलाप से।
यह बढ़े, नित नूतन हर्ष है, जग उठा जग में नव वर्ष है॥

(८)

जगपते! तव चरण सुपर्श है, सदय हो करुणा उत्कर्ष है।
तव कृपा सुस्वराज्य प्रकर्ष है, जग उठा जग में नव वर्ष है॥

—रामनारायण मिश्र

—:०:—

प्रार्थना

मोहन! सुधि लेवहु अब आन।
आरत भारत के कष्टों का करहु शीघ्र अवसान॥
दमन-घटायें घुमड़ रही हैं उमड़ा सब उद्यान।
बन्दर देय घुड़कियां हमको करहि देश अपमान॥
मोती, अली लाजपति, किचलू गांधी दास महान।
सहते दुख पड़े जेलों में कर्मवीर सन्तान॥
शिक्षित बनें युवक भारत के होवे देशोत्थान।
प्रेम पियूष पियें मिल भाई हों सब एक समान॥
करहिं बिनय 'भवनाथ' त्रिलोकी दीजे यह बरदान।
हों स्वाधीन; स्वत्व के रक्षक, हो स्वदेश अभिमान॥

—'भवनाथ'

सत की आह।

—:०:—

डिग चुकी है नीव निश्चय स्वर्ण के गढ़ सार की।
जान ले रावण गई सम्पति तेरे घर बार की॥
साहिबी तेरी सदा हरगिज़ नहीं रहने की यह।
है फ़क़त कहने को अब तो चांदनी दिन चार की॥
कर सितम करने हैं जो जो बेकसों पर धाप कर।
पावेगा तू भी सज़ा फिर अपने अत्याचार की॥
खींच कर शमशीर वह जालिम सितमगर बे हया।
क्या दिखाता है मुझे धमकी तेरे तलवार की॥
आह मेरी पुरअसर है तेरे खंजर से न कम।
काट कर छोड़ेगी बेशक नाक तुझ बदकार की॥
आबरू तो मुझ सती की क्या बिगाड़ेगा अधम।
कुछ दिनों में डूबती है आबरू सरकार की॥

पुष्प की अभिलाषा।

चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं।
चाह नहीं प्रेमी माला में बिन्ध्य प्यारी को ललचाऊं॥
चाह नहीं सम्राटों के शव परहे हरि डाला जाऊं।
चाह नहीं देवी के शिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊं॥
मुझे तोड़ लेना बनमाली उस पथ में देना तू फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिसपथ जावे वीर अनेक॥

असहयोग।

(१)

कठिन है परीक्षा न रहने कसर दो;
न अन्याय के आगे तुम झुकने सर दो।
गँवाओ न गौरव नये भाव भर दो;
हुई जाति बे-पर है तुम इसको परदो।
असहयोग करदो असहयोग कर दो॥

(२)

मनाते हो घर घर ख़िलाफ़त का मातम;
अभी दिल में ताज़ा है पंजाब का ग़म।
तुम्हें देखता है ख़ुदा और आलम;
यहां ऐसे जख्मों का है एक मरहम।
असहयोग कर दो असहयोग कर दो॥

(३)

किसी से तुम्हारी जो पटती नहीं है;
उधर नींद उसकी उचटती नहीं है।
अहम्मन्यता उसकी घटती नहीं है;
रुदन सुन के भी छाती फटती नहीं है।
असहयोग कर दो असहयोग कर दो॥

(४)

बड़े नाज़ों से जिनको माओं ने पाला ;
बनाये गये मौत के वे निवाला।
नहीं याद क्या बाग़े जलियानवाला ;
गये भूल क्या दाग़े जलियानवाला ?
असहयोग कर दो असहयोग कर दो ॥

(५)

गुलामी में क्यों वक़्त खो रहे हो ;
ज़माना जगा हाय तुम सो रहे हो।
कभी क्या थे पर आज क्या हो रहे हो ;
वही बेल हरबार क्यों बो रहे हो।
असहयोग कर दो असहयोग कर दो ॥

(६)

हृदय-चोट खाये दबाओगे कब तक ;
बने नीच यों मार खाओगे कब तक।
तुम्हीं नाज़ बेजा उठाओगे कब तक ;
बँधे बन्दगी यों बजाओगे कब तक।
असहयोग कर दो असहयोग कर दो ॥

(७)

न ज़ुमी से पूछो न आलिम से पूछो ;
रिहाई का रस्ता न क़ातिल से पूछो।

ये है अक्ल की बात आकिल से पूछो ;
"तुम्हें क्या मुनासिब है" खुद दिल से पूछो ।
असहयोग कर दो असहयोग कर दो ॥

(८)

ज़ियादा न ज़िल्लत गवारा करो तुम ;
ठहर जाओ अब वारा न्यारा करो तुम ।
न शह दो, न कोई सहारा करो तुम ;
फँसो पाप में मत किनारा करो तुम ।
असहयोग कर दो असहयोग कर दो ॥

(९)

दिखाओ सुपथ जो बुरा हाल देखो ;
न पीछे चलो जो बुरी चाल देखो ।
कृपा कुञ्ज में जो छिपा काल देखो ;
भरा मित्र में भी कपट-जाल देखो ।
असहयोग कर दो असहयोग कर दो ॥

(१०)

सगा बन्धु है या तुम्हारा सखा है ;
मगर देश का वह गला रेतता है ।
बुराई को सहना बहुत ही बुरा है ;
इसी में हमारा तुम्हारा भला है ।
असहयोग कर दो असहयोग कर दो ॥

(११)

धराधीश हो या कि धनवान कोई ;
महाज्ञान हो या कि विद्वान कोई।
उसे हो न यदि राष्ट्र का ध्यान कोई ;
कभी तुम न दो उसको सम्मान कोई।
असहयोग कर दो असहयोग कर दो॥

(१२)

अगर देश-ध्वनि पर नहीं कान देता ;
समय की प्रगति पर नहीं ध्यान देता।
वतन को भुला सारे एहसान देता ;
बना भूमि का भार ही जान देता।
असहयोग कर दो असहयोग कर दो॥

(१३)

उठा दो उसे तुम भी नज़रों से अपनी ;
छिपा दो उसे तुम भी नज़रों से अपनी।
गिरा दो उसे तुम भी नज़रों से अपनी ;
हटा दो उसे तुम भी नज़रों से अपनी।
असहयोग कर दो असहयोग कर दो॥

(१४)

न कुछ शोर-गुल है मचाने से मतलब ;
किसीको न आंखें दिखाने से मतलब।

किसी पर न त्यौरी चढ़ाने से मतलब ;
हमें मान अपना बचाने से मतलब ।
असहयोग कर दो असहयोग कर दो ॥

(१५)

कहाँ तक कुटिल क्रूर होकर रहेगा ;
न कुटिलत्व क्या दूर होकर रहेगा ।
असत सत में सत शूर होकर रहेगा ;
प्रबल पाप भी चूर होकर रहेगा ।
असहयोग कर दो असहयोग कर दो ॥

(१६)

भुला पूर्वजों का न गुणगाथ देना ;
उचित पाप-पथ में नहीं साथ देना ।
न अन्याय में भूल कर हाथ देना ;
न विष-बेलि में प्रीति का पाथ देना ।
असहयोग कर दो असहयोग कर दो ॥

(१७)

न उतरे कभी देश का ध्यान मन से ;
उठाओ इसे कर्म से मन बचन से ।
न जलना पड़े हीनता की जलन में ;
वतन का पतन है तुम्हारे पतन से ।
असहयोग कर दो असहयोग कर दो ॥

(१८)

डरो मत नहीं साथ कोई हमारे;
करो कर्म तुम आप अपने सहारे ।
बहुत होंगे साथी सहायक तुम्हारे;
जहाँ तुमने प्रिय देश पर प्राण वारे ।
असहयोग कर दो असहयोग कर दो ॥

(१९)

प्रबल हो तुम्हीं सत्य का बल अगर है;
उधर गर है शैतान ईश्वर इधर है ।
मसल है कि अभिमान का नीचा सर है;
नहीं सत्य की राह में कुछ ख़तर है ।
असहयोग कर दो असहयोग कर दो ॥

(२०)

अगर देश को है उठाने की इच्छा;
विजय घोष जग को सुनाने की इच्छा ।
कृती होके कुछ कर दिखाने की इच्छा;
व्रती बन के व्रत को निभाने की इच्छा ।
असहयोग कर दो असहयोग कर दो ॥

(२१)

अगर चाहते हो कि स्वाधीन हों हम;
न हर बात में यों पराधीन हों हम ।

रहें दासता में न अब दीन हों हम;
न मनुजत्व के तत्व से हीन हों हम।
असहयोग कर दो असहयोग कर दो॥

(२२)

न भोगा किसी ने भी दुख भोग ऐसा;
न छूटा लगा दास्य का रोग ऐसा।
मिले हिन्दु-मुसलिम लगा योग ऐसा;
हुआ मुद्दतों में है संयोग ऐसा।
असहयोग कर दो असहयोग कर दो॥

(२३)

नहीं त्याग इतना भी जो कर सकोगे;
नदी मोह की जो नहीं तर सकोगे।
अमर हो के जो तुम नहीं मर सकोगे;
तो फिर देश के क्लेश क्या हर सकोगे।
असहयोग कर दो असहयोग कर दो॥

—श्री० 'त्रिसूल'

लोहे के चने।

किया है पक्का इरादा दिल में, स्वराज लेंगे स्वराज लेंगे।
क़दम न पीछे हटेंगे बढ़ कर, ख़ुशी ख़ुशी से ये जान देंगे॥
क़सम ख़ुदा की तुझे है ज़ालिम, सताले हमको तू जितना चाहे।
निहत्थे दुश्मन भी हम सरीखे, तुझे न दुनियाँ में फिर मिलेंगे॥
रहे न अरमान तेरे बाक़ी, खड़े हैं चुप चाप क़त्ल करदे।
न बदला लेंगे, न चीं करेंगे, डटे रहेंगे, न 'हाँ' कहेंगे॥
दिया है सीना ये खोल हमने, लगा दी बाज़ी है जिन्दगी से।
चला दे सैयाद गोलियाँ तू, वतन की ख़ातिर ही मर मिटेंगे॥
नुकीले भालों से छेद दे ये, हमारे बच्चे भी दुधमुंहे, तू।
तड़पना उनका भी देख करके, न अपने वादे से हम टलेंगे॥
गले में पहना दे तौक़ चाहे, या डाल पैरों में बेड़ियाँ भी।
लगा दे ताला ज़ुबान में भी, न तेरे पैरों पै हम गिरेंगे॥
चढ़ा दे सूली पै या दफ़न कर, हमें तू जिन्दा ही आज क़ातिल।
कहेंगी लेकिन ये हड्डियां भी, स्वराज लेंगे स्वराज लेंगे॥
कुचल दे पैरों से छोटे छोटे, हमारे पौदे ये गुल चमन के।
हलाल कर डाल बुलबुलें पर, समझ ले फिरभी ये गुल खिलेंगे॥
मिली नसीहत ये तेरे सँग से, करें न इतबार अब किसी पर।
फंसेंगे लालच में अब नहीं हम, किसी की हां में न हां भरेंगे॥
हज़ारों वादा ख़िलाफियाँ कर, उठाया दुनिया से इन्साफ़ तूने।
पता भी नीयत का दे चुका तू, न तेरी बातों में अब पड़ेंगे॥

सदा न तेरी चलेगी ज़ालिम, सितारा आख़िर को डूबना है ।
हमारी आहों की क़द्र अब भी, न की, तुझे लोग क्या कहेंगे ॥
फ़िकर किसीकी नहीं है ख़ुद ही, जला दिया है मकान अपना ।
उजाड़ बस्ती, मिटा के हस्ती, हुए हैं फक्कड़ न अब हटेंगे ॥
तरके ताल्लुक का है छिड़ा जंग, तू नहीं है कि हम नहीं हैं ।
रहेगी रिआया खुदा की या तो, या सिर्फ़ काफ़िर ही अब रहेंगे ॥
हमारा मुंसिफ़ रहीम अल्लाह, मिहर औ इन्साफ़ ही करेगा ।
किसी की परवा न खौफ़ हमको, उसीके आगे ये सर झुकेंगे ॥
उठा के चरखे का पाक झंडा, भरेंगे जेलों को हँसते हँसते ।
औ मरते मरते यही रटेंगे, स्वराज लेंगे स्वराज लेंगे ॥

—भवानीप्रसाद गुप्त

क़दम न मोड़ेंगे खूं बहाले ।

(गज़ल)

कठिन है मंज़िल ठहर न रहवर ।
उदू है शमशीर ख़म निकाले ॥
तुझे ये साबित है कर दिखाना ।
क़दम न मोड़ेंगे खूं बहाले ॥
खड़ी हैं हथियार बन्द फौजें ।
लगे हैं तोपों के शिस्त तुझ पर ॥
बिछे हैं कांटे वे आज बनकर ।
ख़ुशामदी जर कमाने वाले

न धमकियों से न गोलियों से।
मगर ये रफ्तार में कमी हो॥
बहा दें ज़ालिम नहीं है परवाह।
हमारे खूं के नदी व नाले॥
सुरूर आँखों में हों ख़िलाफ़त का।
दिल पे पंजाब की मुहर हो॥
हो तर्के ताल्लुक की तेग बस फिर।
बढ़े चलो शेरे दिल सम्भाले॥
नहीं ख़बरदार लब हिलाना।
न दिल दुखाना न खूं बहाना॥
मिटाना चाहें मिटायें हमको।
खुदाई ख़िलकत मिटाने वाले॥
रज़ील रौलट ने दिल दुखाया।
ज़लील डायर ने खूं बहाया॥
हों और अरमान जिसके दिल में।
तो सर हैं हाज़िर उसे कटाले॥
बस अब तो इस पर ही फ़ैसला है।
स्वराज लेंगे स्वराज लेंगे॥
न चैन "माधो" को होगा तब तक।
न हम हैं खामोश रहने वाले॥

—पं० माधव शुक्ल

एक शैदाये वतन का तराना ।

अल्लाह गर मुझे कभी, जेवर का शौक़ हो ।
हाथों में हथकड़ी हों, गले में भी तौक़ हो ॥ १ ॥
लग़ज़िश न खाऊँ ज़िस्म पै, आफ़त हज़ार हो ।
ख़िदमत में क़ौम की मेरा, ये सरनिसार हो ॥ २ ॥
इज़्ज़त की ख़्वाहिश दिल में न ज़िनहार हो मुझे ।
चढ़जाऊं वतन के लिये, गर दार हो मुझे ॥ ३ ॥
धुन में वतन की हरघड़ी, करता सफ़र रहूं ।
जाने के लिये जेल में, सीना सिपर रहूं ॥ ४ ॥
हाकिम की बयां लिखने से, जब क़लम बन्द हो ।
इज़हार हो मेरा यही आज़ाद हिन्द हो ॥ ५ ॥
ताक़त दे ख़ुदा हिन्द का, आज़ाद करा दूं ।
या दुश्मनों के जेल को, आबाद करा दूं ॥ ६ ॥
फ़रहाद क़ैस का मुझे दर्जा नसीब हो ।
मेरा वतन ही बस ख़ुदा मेरा हबीब हो ॥ ७ ॥
दुश्मन की गोलियों का हो सीने पै निशाना ।
गाता हो "इन्द्र" तब भी, वतन का ही तराना ॥ ८ ॥

—इन्द्र

प्रोत्साहन।

ऐ निज सदन की देवियां हो शक्ति सम्पन्ना सभी।
निज देश हित के ध्यान को त्यागा नहीं तुमने कभी॥
शुभगे समय वह आ गया अब भाग लेना चाहिये।
हां कर्मवीरों का तुम्हें बस साथ देना चाहिये॥
आपके पति जेल जायें घर में तुम बैठी रहो।
सोचिये तो क्या उचित है आपही दिलसे कहो॥
प्रिय कार्य पति का पाणि में लेकर उसे पूरा करो।
निज मातृ-भू की दीनता अपकीरता सत्वर हरो॥
फिर भी सुयश की लालिमा संसार में प्रस्तार हो।
कवि 'लाल' भारत का अतः कर शीघ्र ही उद्धार हो॥

—"लाल"

स्वाधीनता।

श्री प्रताप जो रहे जन्म भर जिसके हामी।
नामी श्री शिवराज रहे जिसके अनुगामी॥
जिसके बिना समृद्धि स्वर्ग का राज्य हेय है।
जो भारत का परम लक्ष्य है, परम ध्येय है॥
लोकमान्य ने जन्म भर जिसकी की आराधना।
कष्ट उठा कर रहे गान्धी जिसकी साधना॥

जो जीवट की ज्योति जगाती है जीवन में।
भरती जो उत्साह-उत्स भावन के मन में॥
होते उच्चविचार जगत में जिसके द्वारा।
मनस्वियों ने सदा प्राण मन जिस पर वारा॥
जिसके होते हृदय की हर जाती है हीनता।
स्वयं सिद्ध संसार का स्वत्व वही स्वाधीनता॥
जो मुर्दे को मर्द बनाती है पल भर में।
जिसके, बिना न मान, रहे बाहर या घर में॥

रूस, रूम, जापान और अमरीका वाले।
जिस पर हैं अनुरक्त, भक्त हैं गोरे काले॥
दूर करे जो भक्त की पराधीनता, दीनता।
वह देवी है स्वर्ग की अटल शक्ति स्वाधीनता॥
बर्बर जन भी जिसे जान से बढ़ कर जानें।
पशु-पक्षी भी जिसे स्वत्व प्रिय अपना मानें॥
है यह रत्न अमूल्य यत्न से इसको रखना।
सरकर जाना अगर, वहाँ यह बात परखना॥
होता शेर शृगाल सा ऐसी अधम अधीनता।
जीना मरने से बुरा अगर न हो स्वाधीनता॥
पर न अपव्यवहार कभी तुम इसका करना।
न्याय-नियम को मान अनय से हरदम डरना॥
उच्छृङ्खलता परम निन्द्य है बहुत बुरी है।
हो कैसर या ज़ार सभी के लिये छुरी है॥
हो प्रेमी स्वातन्त्र्य का ग्रहण करे न अधीनता।
पराधीन को मुक्ति दे यह सच्ची स्वाधीनता॥

—श्री रूपनारायण पान्डेय कविरत्न।

हमारा चमन ।

फ़स्ले बहार में था यक दिन चमन हमारा ।
सैय्याद ने उजाड़ा प्यारा वतन हमारा ॥ १ ॥
देता है हाय ! ज़ालिम क़ैदे क़फ़स की धमकी ।
फ़रियाद के लिये जो खुलता दहन हमारा ॥२॥
आज़ाद हो रहेंगे, जाँबाज़ हो चुके हैं ।
अब क्या करेगा कोई वादा शिकन हमारा ॥३॥
वादे वतन की अपने तन पर है यह निशानी ।
प्यारा है जानो दिल से ख़ुद पैरहन हमारा ॥४॥
वक्ते निज़ा हो लबपे हुब्बेवतन का नग़मा ।
हो वादे मर्ग तन पे देशी क़फ़न हमारा ॥५॥

—देवीचरण गुप्त मुनीम

असहयोग ।

नहीं मेरी उनको परवाह,
हमें फिर क्यों हो उनकी चाह ?
हम आबाद उन्हें करते हैं वे हमको बरबाद ।
हमीं से हैं वे मालामाल,
हमीं को आँख दिखाते लाल ।
इस पर भी यह सितम नहीं करने देते फ़रियाद ॥

दिनों दिन बढ़ते अत्याचार,
छोड़ कर न्यायान्याय विचार।
विकट वेदना वश यदि मुख से कढ़ जाती है आह!
तो बस हुआ समझिए ग़ज़ब,
ढंग है अजब, रंग है अजब।
जला करे घर हम न बुझावें यह है भारी दाह ॥
करें क्यों हम उनसे सहयोग,
बढ़ाता है कोई क्या रोग?
रख सकता है मेल चन्द्र से भला कभी अरविन्द?
शशि का रजतोपम प्रकाश है,
किन्तु कमल उससे निराश है।
चम्पक का दर्शन तक देखो करता नहीं मलिन्द ॥
प्रकृति का है जब ऐसा ढंग,
हमीं पर फिर क्यों चढ़े न रंग।
सब को उन्नति प्रिय होती है, सब को निज सम्मान।
परतन्त्रता किसे है प्यारी?
सब हैं उन्नति के अधिकारी।
सब स्वतन्त्रता देवी का ही करते हैं आह्वान ॥
हमें जगत को दिखलाना है,
स्वर्णाक्षर में लिखवाना है।
'असहयोग से ही भारत ने है पाया अपना स्वत्व।'
सब पाशविक रीति से लेते,
तलवारों से नया खेते।
आत्मत्याग है अस्त्र हमारा यही विजय का तत्व ॥

—श्रीयुत 'रत्न'

असहयोग।

तब्दील गवर्नमेंट की रफ़्तार न होगी,
गर क़ौम असहयोग पर तैयार न होगी ॥ १ ॥
बन जायेंगे हर शहर में जलियान वाले बाग़,
इस मुल्क से गर दूर यह सरकार न होगी ॥ २ ॥
दुश्मन को असहयोग से हम ज़ेर करेंगे,
इन हाथों में बन्दूक़ या तलवार न होगी ॥ ३ ॥
यह जेलख़ाने टूट कर अब, और बनेंगे,
इनमें तमाम क़ौम गिरफ़्तार न होगी ॥ ४ ॥
वह कौन असीरे वतन होगा भला जिके,-
हँस हँस के फ़िदा जेल की दीवार न होगी ॥ ५ ॥
सौदाई हैं हम, हमको दो लोहे की बेड़ियाँ,
सोने के ज़ेवरों में यह झनकार न होगी ॥ ६ ॥
जब तक कि, इसे ख़ून से सींचेंगे नहीं हम -
खेती वतन की दोस्तो गुलज़ार न होगी ॥ ७ ॥
कुछ मिल गये हैं ऐसे मुसलमान औ हिन्दू,
अब बस तमीज़े तसबी हो जुन्नार न होगी ॥ ८ ॥
हम ऐसी हुकूमत को मिटा देंगे "मुज़तरीब,"
ग़म में जो हमारे कभी ग़मख्वार न होगी ॥ ९ ॥

—असहयोगी—कृष्ण

तैयार हो जाओ।

नहीं मालूम क्या क्या बलबले उठते हैं इस दिल में,
कि, दरिया मौज ज़न हो जिस तरह आग़ोशे साहिल में।
चले हैं आज मक़तल को हथेली पर है सर अपना,
ये देखेंगे कि, ताक़त किस क़दर है दस्ते क़ातिल में॥
बस अब तैयार हो जाओ अगर शौक़े शहादत है,
उठो ख़ञ्जर बकफ़ सैयाद आ पहुँचा मुक़ाबिल में।
तेरे ही दिल के परदों में तेरो लैला है ऐ मजनूं,
अबस क्यों ढूँढ़ता फिरता है फिर तू उसको महमिल में॥
हमारे दिल को वह लुत्फ़े ख़लिश आया है ए हमदम,
कि, सुनकर नाम भी सेहत का डर जाते हैं हम दिल में।
दबाते हैं हमें जितना हम उतने ही उभरते हैं,
पड़े हैं ज़िम्मेदाराने हुकूमत सख़्त मुश्किल में॥
नहीं आसान करना क़त्ल एक तूफ़ां उठाना है,
छुपा है एक महशर इज़्तराबे रक़्मे बिस्मिल में।
पहुँच जाते कभी के मंजिले मक़सूद पर लेकिन,
हमारी पस्तिये हिम्मत है सद्दे राह मंजिल में॥
"ज़मरुद" आज वह ख़ञ्जर वकफ़ बैठे हैं चल तू भी,
मुरादें दिल की बर आ जायें शायद कूए क़ातिल में॥

—लाला रतनलाल 'ज़मरुद' सिकन्दराबादी

सहयोग मत करो।

सहयोग मत करो तुम, चाहे प्राण तन से निकले।
मुतलिक़ नहीं डरो तुम, चाहे प्राण तन से निकले॥
पंजाब का वह फोटो, आँखों में झूलता है।
जख़्मों को जा भरो तुम, चाहे प्राण तन से निकले॥
डायर ने बेकसूरों पर जो किये हैं फ़ायर।
कायर उसे गिना दो, चाहे प्राण तन से निकले॥
एक् जान जाने से घर बलवान हो चुका है।
आज़ाद हो वतन अब, चाहे प्राण तन से निकले॥
लालच से मुंह को मोड़ो, आपस में दिल को जोड़ो।
'सहयोग' इन से तोड़ो, चाहे प्राण तन से निकले॥
हिन्दू मुसलमाँ मिलकर भारत का मान रख लो।
अपना भी हक़ जमाओ, चाहे प्राण तन से निकले॥
बस, "मौज" की विनय यह, गाँधी के साथ हो लो।
आज्ञा उन्हीं की मानों, चाहे प्राण तन से निकले॥

—भवानी प्रसाद गुप्त
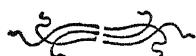
हथेली पर सर।

ज़ुल्मे ज़ालिम का नहीं ख़ौफ़ो ख़तर रखते हैं,
दिल को हर ग़म के लिये सीना सिपर रखते हैं।
हौसला क़त्ल का वह दिल में अगर रखते हैं,
हम भी तो शौक़ शहादत का इधर रखते हैं।
जो कि इस जंग के जाँबाज़ जवाँ बनते हैं,
दिल को मज़बूत वो पत्थर का जिगर रखते हैं।
फ़िक्र कब क़त्ल की करते हैं वतन के शैदा,
वह तो हर वक़्त हथेली ही पै सर रखते हैं।
लाख बेकस हैं निहत्थे हैं मगर हाँ तो भी,
नालये ग़म में क़यामत का असर रखते हैं।
लुत्फ़ आज़ादी की हो क्यों न तमन्ना 'शीतल'
हम भी इन्सान हैं दिल रखते जिगर रखते हैं।

—शीतल प्रसाद विश्नोई

सत्याग्रह-गीत।

मैं अमर हूं मौत से डरता नहीं।
सत्य हूं, मिथ्या डरा सकती नहीं॥
मैं निडर हूं, शस्त्र का क्या काम है?
मैं अहिंसक हूं, न कोई शत्रु है॥

२

शस्त्र लेना निर्बलों का काम है

सत्य का तो शस्त्र केवल प्रेम है ॥

प्रेम से मैं भूमि स्वर्ग समुद्र को—

एक कर दूंगा हृदय के रूप में ॥

३

पीस लो दुख में, पिसूँगा तो सही,

किन्तु अंजन आँख का बन जाऊंगा ॥

दृष्टि होगी सौगुनी संसार की।

तुम कहाँ पाओगे छिपने की जगह!!

४

चाहते हो खाक़ करना ही मुझे।

आग में धर कर तपा कर देख लो ॥

शुद्ध सोना सा कढ़ूंगा जब कभी;

दाम पहले से बहुत बढ़ जायगा ॥

५

काट लो सिर, दर्द सिरका लो मिटा।

भार कंधे का हमारा भी हटे ॥

हूं दिये की लौ, इसे मत भूलना।

फिर उजाला और भी हो जायगा ॥

६

सत्य कहने से न रुकती जीभ है।

काँपते क्यों हो? इसे ही काट लो ॥

मैं कलम हूं, एक मेरी जीभ से,

क्या करोगे, जब बढ़ेंगी सैकड़ों॥

७

खूब चारों ओर काँटे दो बिछा।

मर मिटूं मैं, काढ़ लो जी की कसक॥

किन्तु आकर देख जाना एक दिन।

मैं मिलूंगा फूल सा हँसता हुआ॥

८

क्रोध ने जीता तुम्हें है सब तरह।

क़ैद में तुम क्रोध की हो हर घड़ी॥

किन्तु मैं जीते हुये हूं क्रोध को।

तब कहो मैं किस लिये तुमसे डरूं?

९

कौन हो तुम? मौत का मैं दूत हूं।

क्या करोगे? मौत से दूंगा मिला॥

है कहाँ वह जन्म भर की संगिनी!

मित्र! लो तुम प्राण यह उपहार में॥

—रामनरेश त्रिपाठी।

सत्याग्रही पपीहा ।

१

नहीं त्यागना कभी टेव को,
होना नहीं हताश पपीहा ।
डटे रहो कर्तव्य मार्ग पर,
जब तक अन्तिम सांस पपीहा ।

२

ध्येय त्याग कर जीवन धारण,
करना है धिक्कार पपीहा ।
"हो कर्मण्य ! कर्म-वादी हो !!"
गीता रही पुकार पपीहा ।

३

हो निष्णात् कर्म वाद का,
कर दो आत्मोत्सर्ग पपीहा ।
तब करतलगत हो जावेंगे,
स्वर्गादिक अपवर्ग पपीहा ।

४

हो नत शीश लोक-त्रय तेरे,
सम्मुख होंगे खड़े पपीहा ।
बड़े बड़े अत्याचारी भी,
होंगे पग पर पड़े पपीहा ।

५

जीवन धाम, पुत्र परिजन को,

प्रथम मान लें 'नहीं' पपीहा।

लक्ष्योद्देशसिद्धि सम्मुख रख,

होजा "सत्याग्रही पपीहा"।

—मोहन लाल महतो, गयावाल (वियोगी)

छेड़ दो।

छेड़ दो सत्याग्रह संग्राम!
भारत से अत्याचारों का शीघ्र मिटा दो नाम॥
सत्य मार्ग पर डटना होगा पीछे पैर न रखना होगा,
सत्य हितार्थ लुटाना होगा, तुम्हें धरा, धन, धाम॥छेड़ दो०॥
विशद गेह मिटते देखोगे बच्चों को पिटते देखोगे;
अन्न, वस्त्र, पशु आदिक हो जायेंगे कुड़क तमाम॥छेड़ दो०॥
यदि तुम परवा नहीं करोगे कष्ट शांति से शीश धरोगे,
रिपु तन मस्तक हो जायेगा पाय पाप परिणाम॥छेड़ दो०॥
शुभ स्वतन्त्रता सूर्य उगेगा पारतन्त्र्य तम दूर भगेगा,
फहरायेगा फिर स्वराज्य का झन्डा ललित ललाम॥छेड़ दो०॥

—धनीराम "प्रेम" (जेल में)

कब तक।

ख़ाली हो जायगा सैयाद से गुलशन कब तक।
ऐ ख़ुदा दिल में रहेगी मेरे उलझन कब तक॥
आहें सोज़ाँ से जलेगा मेरा सैयाद अब हाथ।
थामे बैठा ही रहेगा मेरा दामन कब तक॥
अपने नालों से अभी हश्र बपा कर देंगे।
देखें बचते हैं सही औरभी दुश्मन कब तक॥
ज़र लिया, माल लिया सब तो लिया कुछ न रहा।
और लूटेंगे सरे राह ये रहज़न कब तक॥
धज्जियां उड़ने लगीं अपने गरेबानों की।
ख़म रहे यह मेरी ख़ंजर तले गर्दन कब तक॥
धमकियां देते हैं कब तक ये भला लायड जार्ज।
और उगलेंगे ज़हर बज़्म में कर्ज़न कब तक॥

—"कलन्दर"

क्या देर हो रही है ?

वह युग कहाँ गया, जब अवतार धारते थे ?
अनुरक्त भक्त सुख से जय जय पुकारते थे।
वे शर कहाँ गये ! जो खल-दल विदारते थे !
लंकेश के नशे को पल में उतारते थे।
सोये हुये तुम्हीं हो ? या शक्ति सो रही है ?
भगवान ! अब विजय में क्या देर हो रही है ?

प्रति वर्ष वह दशहरा उत्कर्ष है दिखाता ;
विचलित हुये हृदय में आशा नई बँधाता।
पर एक फुलझड़ी बन क्षण में चमक मिटाता !
आतंक ज़ालिमों पर कुछ भी नहीं जमाता !!
दुर्नीति बीज विष का हर ओर बो रही है ;
भगवान ! अब विजय में क्या देर हो रही है ?

सेवक सजग हुये हैं सब साज सज चुका है ;
जागृत-समय ग़ुलामी का साथ तज चुका है।
साहस भरा सुरीला नव शंख बज चुका है ;
बस आप की प्रतीक्षा में कार्य कुछ रुका है।
कैसी कृपा, कृपानिधि ! जो धैर्य खो रही है !
भगवान ! अब विजय में क्या देर हो रही है ?

'रसिकेन्द्र'

बलिदान का मूल्य।

किस प्रकार मिनटें गिनता हूं, दिन के बरस बनाता हूं।
खान-पान की ध्यान-ज्ञान की धूनी यहाँ रमाता हूं॥

* * * * * *

तुमको आया जान वायु में बाहों को फैलाता हूं।
चरण समझते हुये सीकचों पर मैं शीश झुकाता हूं॥

* * * * * *

सुध बुधि खोने लगे, कहो क्या पूरी नहीं सुनोगे तान।
होता हूं कुर्बान, बताओ किस क़ीमत में लोगे जान॥

—"भारतीय आत्मा"

विजया-वंदना।

विजये! विजय-माल पहना दे!
आजा! दिव्य दरशदरसा जा, शान्ति-सुधा-रस को बरसा जा,
मुरझित हृदय पड़ा सरसा जा, आकर शुभ आगमन जना दे!
विजये! विजय-माल पहना दे!
भारत जन बहु दुःख उठाये, हैं तुझ पर ही नैन लगाये,
मही बनेगा अब भरमाये, सुन्दर-सौम्य-वितान तना दे!
विजये! विजय-माल पहना दे!

भारत माता-सीता-व्याकुल, गाँधी हनूमान से चंचल,
होकर बैठी, सागर-अंचल, पड़ा अवसर यह काम बना दे !
विजये ! विजय-माल पहना दे !
आओ, विजये ! आओ, आओ, अकर चारु-छटा छिटकाओ,
'विपिन' देश को रुचिर बनाओ, दैव हैं रूठे, उन्हें मना दे !
विजये ! विजय-माल पहना दे !

—'विपिन'

विजय दशमी ।

रघुकुल तिलक ! तव विजय दशमी का दिवस शुभ आज है,
हा, इस दिवस को भी यहाँ तो शोक का ही राज है ।
है त्रसित अपमानित सभी विधि आज यह माता—मही,
गुण, शील, विद्या, विभव धन से निधन हा ! हा ! हो रही ।
बध दानवों का कर, किया जिस भूमि का उपकार था,
दुख-सिन्धु से तुमने किया जिस मातृ-भू को पार था ।
हे राघवेन्द्र ! वह कर्मशीला भूमि फिर परतंत्र है,
उद्धार का उसके न हमको ज्ञात कोई मंत्र है ।।
परतंत्रता की बेड़ियों का भार दुख दायक महा,
बहु काल तक हमने बराबर बज्र बन करके सहा ।

पर सहन है होता नहीं दुख भार यह अब तो अहो!
रौरव नरक हो प्राप्त, पर परतन्त्र जन जग में न हो॥
निज मात-भू की भव्यता जब याद आती है हमें,
अविरल सलिल धारा नयन की तुरत नहलाती हमें।
पर शान्त दुख ज्वाला हृदय की तनिक भी होती नहीं,
हम शांति पाना चाहते पर प्राप्त वह होती नहीं॥
जिस भूमि पर कर्तव्य का था ज्ञान सिखलाया हमें,
ले जन्म जिस पर त्याग का आदर्श दिखलाया हमें।
उस भूमि पर आकर पुनः निज सुहृदता दिखलाइये,
हे राम पुरुषोत्तम! यहाँ पुनि आइये पुनि आइये॥
सब जानते हो हृदय की हवि,अब अधिक हम क्या कहें,
दो शक्ति ऐसी हृदय को कर्त्तव्य पथ पर दृढ़ रहें।
विख्यात विजय स्मृति तुम्हारी देव! यह शुभ कारिणी,
इस तुच्छ जीवन-युद्ध में हो सर्वथा दुखहारिणी॥

—गायत्री देवी

विजया दशमी।
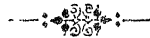
विमले विजये! विह्वल वदना श्री-हत हो क्यों आती है?
पापाचारों का नाशक वह राम नहीं क्या पाती है?
रक्त-रंजिता भरत-भूमि की आकुलता अकुलाती है?
या दुखियों की आहों से तू जलती है बिललाती है?

विजये ! आओ साहस धर कर, धैर्य्य नहीं अपना खोवो।
उस दानव दश-मुख के नाशक वीर राम का मुख जोओ॥
वह अवतीर्ण हुआ धरिणी पर धर कर गाँधी जी का वेश।
तपो भूमि में बैठा करता योग सिद्ध हरने को क्लेश॥
तीस कोटि बलि होंगे उस पर पावेगी मैया आराम।
शाही स्वेच्छाचारों का फिर हो जावेगा काम तमाम॥
सात्विकता के सिंहघोष के साथ अहिंसा का अधिकार—
होगा प्यारी विजये ! होगा अनाचार इक दम संहार॥
टूटेंगे बन्धन स्वदेश के घूमेगा 'मोहन' निश्शङ्क।
भारत-लक्ष्मी फिर आवेगी भारत नहीं रहेगा रंक॥
सत्याग्रह-संग्राम विजयिनी विजये ! होगा तेरा नाम।
सुख-समता के स्रोत बहेंगे विजयी होगा गाँधी-राम॥

—'नृसिंह'
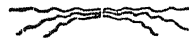
विजय-दशमी।

लोकपाल दिग्पाल किये वश, की मन-चाही;
ऋषियों तक से रुधिर लिया मच गई तबाही।
काँपे अवनी गगन देख कर रावण शाही;
हरी सुन्दरी सुरी, नरी ब्याही, बिन-ब्याही।
टाले टला न दुष्ट फिर जहाँ काल सा अड़ गया।
बढ़ा पाप का भार जब, काम राम से पड़ गया॥

भारत-लक्ष्मी जनक-नंदिनी को छल-बल से ;
हर कर वह ले गया कमलिनी को ज्यों जल से ।
वन-बासी थे राम पर नहीं बैठे कल से ;
रहते हैं वर-वीर विपद् में धीर अचल से ।
समय देख संग्राम का और हौसले बढ़ गये ।
आई विजया देख कर लंक-विजय को चढ़ गये ॥
एक एक से धीर धुरन्धर थे उसके भट ;
एक एक कर किये राम—सेना ने चौपट !
माना फिर भी नहीं दुष्ट ऐसा था नट—खट ;
सज्जित होकर स्वयं समर में आया झट-पट ।
बोये काँटे आपही और उन्हीं में गड़ गया ।
राम—बाण वर्षा हुई मूढ़ उसी में सड़ गया ॥
बचा न कोई दुष्ट घाव सब के थे गहरे ;
विजयी थे श्री राम विजय के उड़े फरहरे ।
दिया विभीषण को स्वराज्य फिर वहाँ न ठहरे ;
धन्य पुण्य तिथि धन्य धन्य है धन्य दशहरे !
उन्हीं राम के वंशधर हैं आफ़त में जान है ।
एक बार साहस वही भर दे यह अरमान है ॥
मिले बंधु से बंधु सबल फिर अपना दल हो ;
रामचन्द्र की भाँति सुयश जग में निर्मल हो ।
आत्म-शक्ति हो कहीं कपट हो और न छल हो ;
सब के स्वत्व समान बली हो या निर्बल हो ।
निर्भय होकर हम सभी सत्य—शरासन तान दें ।
हो स्वतन्त्र स्वाधीन सब या फिर अपनी जान दें ॥

—'त्रिसूल'

(५)

पर्वाह नहीं हो जेल, भले गोलों की वर्षा भी होवे।
भारतीय हो, लाज बचाओ, लाली नष्ट नहीं होवे॥
करो विश्वकल्याण-कामना-हेतु विजय की यात्रा आज।
हो स्वाधीन देश यह जिससे, माता के सर पर हो ताज॥
—शिव

क़लामे त्रिशूल।

उठा है आहों से इतना धुआं आहिस्ता आहिस्ता;
बना है आसमां पर आसमां आहिस्ता आहिस्ता।
नतीजा यह कि नौबत पहुंची है तर्के तअल्लुक़ की;
हुआ दिल उनसे ऐसा बदगुमां आहिस्ता आहिस्ता।
असीराने क़फ़स के मुंह किये हैं बन्द अब उसने;
अजब क्या काट ले ज़ालिम ज़ुबां आहिस्ता आहिस्ता।
वतन के लाड़ले हैं यह बड़े नाज़ों के पाले हैं;
पिन्हा जल्लाद इनको बेड़ियाँ आहिस्ता आहिस्ता।
चिकन, तनज़ेब, मलमल पर जो अब भी जान देते हैं;
वो पहनेंगे यक़ीनन चूड़ियाँ आहिस्ता आहिस्ता।
वः दिन आते हैं जब कुल बीवियाँ चर्ख़ा चलायेंगी,
बुनेंगे बैठ कर खद्दर मियाँ आहिस्ता आहिस्ता

मिटीं ग़फ़लत की नींदें अब नज़र है अपनी हालत पर;
सँभालता जाता है हिन्दोस्ताँ आहिस्ता आहिस्ता ।
नहीं बच्चे हो कुछ अब तो वतन का हक़ अदा कर दो ;
हुये नामे .खुदा अब तो जवां आहिस्ता आहिस्ता ।
कलेजे पर कभी नश्तर कभी छुरियाँ चुभाती हैं
वो लेते हैं ग़ज़ब की चुटकियाँ आहिस्ता आहिस्ता
नज़रपड़ते ही "खुफ़िया" पर लगा क्यों दम खफ़ा होने ;
चले महफ़िल से उठकर तुम कहाँ आहिस्ता आहिस्ता।
उड़ा दे होश दुश्मन के विजय-दशमी 'त्रिशूल' आई ;
उठा ले तू अब तीरोकमां आहिस्ता आहिस्ता ।

—'त्रिशूल'

किश्ती लबे साहिल में है

ओ सितमगर ! जुल्म की गर तूने ठानी दिल में है ।
याँ दिले ईज़ा तलक भी सीनए बिस्मिल में है ॥
हर नफस से मेरे निकलेगी सदाये हुव्वे क़ौम ।
सांस बाकी जब तलक ज़ालिम तेने बिस्मिल में है ॥
हमने माना हद नहीं है ज़ुल्म की पर सोच लो ।
ज़ब्त की भी इन्तिहा आख़िर किसी के दिल में है ॥

दे रहे हो क्यों फ़िदायत वतन को धमकियाँ ।
क्या समझते हो कि ख़ौफ़े जेल उनके दिल में है ॥
दब नहीं सकता सितम से तीर से तलवार से ।
जोश वो जो यक फिदाकारे वतन का दिल में है ॥
वो फ़िदाये जुल्म है तो मैं फिदाये क़ौम हूं ।
मेरा सिर हाज़िर है गर खंजर कफे कातिल में है ॥
यक तुफाने जहाँ की कुछ नहीं परवा मुझे ।
मैं समझता हूं कि अब किश्ती लबे शाहिल में है ॥

—सुदर्शन नारायण पाण्डे

हसरत की तबीयत ।

—:०:—

है मश्क सखु़न जारी चक्की की मशक्कत भी ।
यक तुर्फा तमाशा है हसरत की तबीयत भी ॥
जो चाहो सज़ा देलो, तुम और भी खुल खेलो ।
पर हमसे क़सम लेलो हो लब पे शिकायत भी ॥
हक़ से यह उज़्र मसलहत वक्त पर जो करे गुरेज़ ।
उसको न पेशवा समझ उस पै न एतबार करें ॥
देखिये शौक़े शहादत में झुकी है गरदन ।
आप इस वक्त ज़रा पास हमारी न करें ॥

दिले वहशी का किसी तरह तक़ाज़ा तो मिटे।
क्या करे सर को जो आमादये सौदा न करें॥
ज़ोर पर ज़ोर जफ़ाओं पे जफ़ाएँ देखें।
हौसला अपनी मोहब्बत में हमारा देखो॥
जान क्या चीज़ है रक्खेंगे जिसे तुमसे दरेग़।
हो न बावर तो किसी दिन उसे आज़मा देखो॥
गर वफ़ादारिये अग़ियार के ग़ोग़ा है यही।
जान से हम भी गुज़र जायंगे सोचा है यही॥

—मौलाना हसरत मोहानी

मस्ताना जोगी।
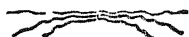
हाथ छिलते हैं बटाई इस क़दर बानों की है,
उफ़ सितम ज़ालिम! यहाँ क्या क़द्र मेहमानों की है?
जाइये हज़रत यहाँ से, क्यों? कहा मैंने कि, बस—
अब तो रुसवाई ही बाक़ी ऐसे मेहमानों की है।
मैं जिधर निकला उठाते हैं मुझी पर उँगलियाँ,
कुछ नज़र मेरी तरफ़ तिरछी निगहबानों की है।
आये थे करने तिजारत बन गये हाकिम हुज़ूर,
मक्र की यह चाल है या चाल मर्दानों की है।
है किया गाँधी ने अब रोशन चिराग़े जेलको,
इसलिये अब शम्म पर भी भीड़ परवानों की है।

सैंकड़ों वादे किये पर वक़्त पर ठुकरा दिया,
चाल बाज़ी अब भी बाक़ी तेरे फ़रमानों की है।
दार पर चढ़ कर 'अनलहक़' ही कहा मंसूर ने,
मरते हैं यों ही यही रफ़्तार मस्तानों की है!

—मस्ताना जोगी

दर्दे-वतन।

(१)

करें ज़ुल्मो-सितम हम पर, सतालें जिस क़दर चाहें;
गनों से या बमों आज़मालें जिस क़दर चाहें;
सहें हम शौक़ से सब ज़ुल्म, लें जानो-जिगर चाहें;
मरें हम क़ौम की ख़िदमत में—आज़ादी मगर चाहें;
रहे सीना सिपर मेरा सदा फ़ौलाद के आगे।
करें हरगिज़ नहीं 'उफ़' सर गिरे जल्लाद के आगे॥

(२)

उन्हें फूलों का विस्तर हो, हमें कांटे मुबारक हों;
महल उनको, हमें जेलों की दीवारें मुबारक हों;
उन्हें आराम, इज़्ज़त, ऐशो-इशरत ही मुबारक हों;
हमें फ़ाकहकशी, ज़िल्लत, मुसीबत ही मुबारक हों;
मुसीबत से न घबरा कर हम उसको सर झुकायेंगे।
मुसीबत-मुब्तिला होकर—मुसीबत को मिटायेंगे॥

(३)

हमारी आह को मत बे-असर, ख़ाली हवा समझो ;
इसे तुम पुर-असर, माकूल दर्दे ला—दवा समझो ;
सताने, दिल जलाने, जानलेने से सिवा समझो ;
बलासमझो, गिलासमझो, सज़ासमझो, कज़ासमझो ;
जभी दिल पर गिरेंगी बिजलियाँ, टुकड़ा जिगर होगा।
तभी बेकस की आहों का भी तुझ पर कुछ असर होगा॥

(४)

हम अपनी हालते-दिल जब कभी उनको सुनाते हैं ;
हमेशा क़ैद से या तेग़ से हम को डराते हैं ;
कभी शर्मो हया से वो न मुतलक़ बाज आते हैं ;
ग़रज़ अपनी निकलने पर हमें चरके बताते हैं ;
उमीदो ना-उमीदी का असर वो ही बशर जाने—
बहर में डूबने वाले की क़िस्मत का हशर जाने॥

(५)

हम उनको, फिर भी, अपना दोस्त, दस्तोपा समझते हैं;
वह हमको ग़ैर, बाग़ी और जाने क्या समझते हैं ;
ज़रा मुँह खोलने पर वार वह हरबार करते हैं ;
तमाशा है, वो हम से वायदा कर, अब मुकरते हैं !
इस हिन्दुस्तान ही में सर कटे ईमान के ख़ातिर—
हक़ीक़त में हक़ीक़त मर मिटे ईमान के ख़ातिर॥

(६)

हम उनको इब्तिदा से अपना ही मेहमाँ समझते हैं ;
वो हम पर इन्तिहा करने में अपनी शाँ समझते हैं ;
कटा कर चोटियाँ हमको महज़ हैवाँ समझते हैं ;
इसे वो दिल्लगी, हम मज़हबो ईमाँ समझते हैं ;
बदी का रास्ता बद है, मगर नेकी का बेहतर है।
न इठला कर तू चल मग़रूर ! शामत तेरे सर पर है॥

(७)

हमारी बेहतरी का रास्ता जिसने दिखाया है ;
उसी की यक सदा ने आज भारत को जगाया है ;
स्वदेशी को जहाँ में अब सभी ने सर झुकाया है ;
मगर कुछ बे-हमामों ने बिदेशी फिर मँगाया है ;
इन्हीं झगड़ों के बाइस से गये हैं जेलख़ाने में—
जवाहरलाल, देबीदास पिकटिङ्ग के ज़माने में॥

(८)

स्वदेशी की हवा अब मुल्क में चलती है, चलने दो ;
स्वदेशी के लिये घर-बार ज़र लुटता है, लुटने दो ;
जो सीधे रास्ते से अब बहकते हैं, बहकने दो ;
वतन के वास्ते गर आज सर कटता है, कटने दो ;
स्वदेशी ही ख़रीदो—जर्मनी, जापान के बदले।
विदेशी को जला दो छूत के सामान के बदले॥

(९)

अब अपने माडरेटों की भी हालत कुछ सुनाते हैं ;
हमारे रास्तों के राह में रोड़े विछाते हैं ;
मस्ल तर्के तअल्लुक से वो अपने को बचाते हैं ;
निकलते हैं, कभीगर, सामने से, रुख़ छिपाते हैं ;
वतन के दर्द को सुन कर पड़ोसी भी भरें आहें।
मगर घर के बिरादर विस्तरों ही से सुनें आहें ॥

(१०)

हमें तो अव्वलन आपस के झगड़ों को मिटाना है ;
मुस्लिमों हिन्दुओं को आज आपस में मिलाना है ;
अहिंसा के सबक़ को सीखना है, औ सिखाना है ;
हमें खुद मुल्क पर कुरबान हो करके दिखाना है ;
जमीं पर ज़लज़ला आए, बला, मैशीनगन आये।
मगर क़ुर्बान होने पर न चेहरे पर शिकन आये ॥

(११)

अब आओ, भाइयो! फैशन, चलन अपना स्वदेशी हो ;
वज़ा अपनी स्वदेशी हो, मिशन अपना स्वदेशी हो ;
अदालत देश की हो, अञ्जुमन अपना स्वदेशी हो ;
रहन अपना स्वदेशी हो, सहन अपना स्वदेशी हो—
बदन पर यह सखुन होगा; स्वदेशी का कफ़न होगा ;
गुज़रते वक्त भी दिल में मेरे दर्दे—वतन होगा ॥

—श्री० वैद्यनाथ मिश्र, 'विह्वल'

शाबाश ऐ अकाली !
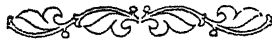
शाबाश ऐ अकाली ! —शाबाश ऐ अकाली !
हिम्मत है तेरी आली।
हिम्मत है तेरी आली—पत क़ौम की बचाली,
शाबाश ऐ अकाली !
कितना ही पिट चुका तू-जख़्मी बहुत हुआ तू,
लेकिन उठा रहा तू,
पोलिस की लाठी डंडा—हरचंद ख़ूब बरसा,
पर तू कभी न चलका,
शाबाश ऐ अकाली—शाबाश ऐ अकाली !
पत क़ौम की बचाली।
था तू तो ला उबाली—पर मुंह से दी न गाली,
और ख़ूब मार खाली,
हिम्मत के तेरी सदके—ताक़त के तेरी सदके,
खसलत के तेरी सदके,
शाबाश ऐ अकाली—शाबाश ऐ अकाली !
हिम्मत है तेरी आली।
पत क़ौम की बचाली ॥

(बन्देमातरम से)

सिक्खों की शांति मय वीरता।

गुरू के बाग़ में जुरअत दिखाई वीर सिक्खों ने।
बढ़ाई शांतिमय की ख़ूब ही तौक़ीर सिक्खों ने॥
डटे मैदान में ऐसे न मुंह मोड़ा मुसावक से।
सहे सीने में बढ़ बढ़ कर जफ़ा के तीर सिक्खों ने॥
गिरफ़्तारी का डर है कुछ न खौफ़े जेल है उनको।
समझ रक्खा है जेवर हथकड़ी जंजीर सिक्खों ने॥
क़दम पीछे हटायी और न बाज़ आये इरादे से।
ख़ुशी से शौक़ से मंजूर की ताजीर सिक्खों ने॥
सिरों पर लाठियाँ खाकर गुरू का नाम लेते हैं।
जहाँ में शान सिक्खों की है कीं तशहीर सिक्खों ने॥
हिफाजत गुरू द्वारा की उन्हें मुतलूब है हरदम।
इसी मतलब को लेकर की हर एक तकरीर सिक्खों ने॥
सबक़ मज़हब की खातिर मरने का सब देखकर सीखें।
हर एक के आगे रख दी खींच कर तस्वीर सिक्खों ने॥
इमारत शांतिमय की हिन्द में हो जायगी पुख़्ता।
है कर दी इसकी अपने ख़ून से तामीर सिक्खों ने॥
गुरू के बाग़ में मौक़ूफ़ क्या है इन्तदायी से।
किये क़ुर्बान मज़हब पर जवां और पीर सिक्खों ने॥
है दुश्मन भी सना ख़्वं आज तो इनके तहे दिल से।
चलाई सब्र इस्तकलाल की शमसीर सिक्खों ने॥
जताई हिन्द को गांधी जीने जो कामयाबी की।
है 'आजिज' आजमाई पहले वह तदबीर सिक्खों ने॥

—'आजिज'

दमन कैसा ! अमन कैसा !!

खुशी से चहकते बुलबुल क़फ़स में फिर "दमन" कैसा !
अजी ! नाबालग़ों पर। पड़ रहे डण्डे "अमन" कैसा !!
बुलाने से भी पहले जो चले जाते हैं जेलों में ;
भला उनके लिए वारण्ट खुफ़िया औ "समन" कैसा !!
फ़ना को कर नहीं सकते, खुदाई चीज़—रूहों को ;
इधर भी ठान बैठे हैं—मशीनगन का "दमन" कैसा !!
सभी पहलू से बिल्कुल साफ़ हैं अंजाम सब जिनका ;
उन्हीं के साथ चुपचुपका हमेशा यह "ग़बन" कैसा !!
तपे हैं "लाल" जो गुर्बत—तबाहे—आग—तापिशमें ;
उन्हें फिर जेल जाने का महज़ अदना "तपन" कैसा !!
"करालो काम छोटा भी करूंगा मैं" जो कहते हैं ;
उन्हें तनहा व चक्की की सज़ा का यह, "चलन कैसा !!
सरे बाज़ार हम तो बस यही कह कर पुकारेंगे ;
उठो, वीरो ! कहो तुम भी "दमन" कैसा ! "अमन" कैसा !!

"चक्र"—(प्रताप से)

कुर्बानी ।

'जेल बन्द' का खौफ़ हमें क्या,
मरने से कब डरते हैं ।
ज़ालिम जल्दी उठे यहां से यत,
यही नित करते हैं ॥

पकड़ो, ठूंसो, जेल समझते,

करते हो तुम मिहमानी।

याँ तो हँसते आज़ादी पर,

करते निज की कुर्बानी॥

ख़ून जो बरसा हमारा व्यर्थ में नहिं जायगा।

सैयाद उसकी धार में तू शीघ्र ही बह जायगा॥

—वीरात्मा (रा० के०)

अभिशाप।

दिल में रहेगा तेरे यह दिल का दाग़ होकर।

नज़रों में छा रहेगा वह ख़ूनी बाग़ होकर॥

कैसे छिपा सकेगा करतूत कालिमा को।

कह देगी शक्ल तेरी रौशन चिराग़ होकर॥

लाचार बेकसों पर यों ज़ुल्म यों सितम क्यों!

कर देगी ख़ाक तुझको ये आहें आग होकर॥

कब तक रहेगा बचकर सय्याद मौत से तू।

डस लेगा पाप तेरा आताने नाग होकर॥

नाले बलन्द होंगे तेरी मुख़ालिफ़त के।

छायेंगे हर "हृदय" में राष्ट्रीय राग होकर॥

—हृदय।

सत्याग्रह-समीक्षा।

(१)

आकर जब जब घिरी घटायें काली काली ;
गरजा कठिन असत्य, कँपा डालीं सब डाली।
जग में हाहाकार मचा गति देख समय की ;
'क्या होगा भगवान !' उठी ध्वनि भीषण भय की।
सत्याग्रह की वायु ने, तब तक आ झोंका दिया ;
एक निराली शक्ति ने, सारा जग चौंका दिया।

(२)

किसे नहीं है ज्ञात बात प्रहलाद बाल की ?
और पिता की दमन नीति दारुण कराल की।
उधर दुराग्रह भरा हुआ था पूरा पूरा ;
और इधर प्रहलाद भी नथा व्रती अधूरा।
अग्नि, सर्प, गज, खड्ग, विष, कर न सके कुछ भक्त का ;
आख़िर उद्यापन हुआ, दुराग्रही के रक्त का।

(३)

भूली तन की व्यथा सत्य की प्रथा न भूली ;
धन्य व्रती मन्सूर ख़ुशी से सह ली सूली।
मरियम का प्रिय पुत्र न ईसा डिगा धर्म से ;
गर्वित हैं अंग्रेज आज भी उसी मर्म से।
खाल खिंची तब्रेज़ की, पर न ज़रा भी आह की ;
'सोलन, स्टीफ़न' ने न त्यों, प्राणों की परवाह की।

(४)

भारत का तो मुख्य यही उद्देश्य रहा है;
बहु वीरों का सत्य-धर्म हित रक्त बहा है।
छोटे छोटे शिशु तक दृढ़ता रहे दिखाते;
श्रुति, पुराण, सद्ग्रन्थ इसी का पाठ पढ़ाते।
यद्यपि वह भारत नहीं; पर, तब भी ख़ाली नहीं;
श्री गाँधी के भाल में, अब भी क्या लाली नहीं?

(५)

ट्रान्सवाल में उदाहरण प्रत्यक्ष दिखाया;
कैसे २ कष्ट सहे पर व्रत न डिगाया।
खेड़े में भी बात इसी की रही सवाई;
बङ्ग ज़िले में हार दमन-सत्ता ने खाई।
भारत के हर ओर से, शोर उठा अब है यही;
सत्याग्रही सपूत ही, चाह रही भारत मही।

(६)

प्रमदाओं को भी इसमें अधिकार प्राप्त है;
मीरावाई का यश अब तक जगत व्याप्त है;
सत्य पंथ था, किन्तु दोष राना ने माना;
भ्रम में पड़कर चाहा उसने इसे सताना।
पर न डिगी विष आदि से, काला अहि भी रुक गया;
विजय सत्य ही की हुई, राना ख़ुद ही झुक गया।

(७)

तरल विजलियाँ क्रूर हृत्घनों से आ चमकीं;
शिथिल हुईं, फिर अग्नि रूप भी बनकर दमकीं।
देवी जोन परन्तु न इससे भी दहलाई;
सत्याग्रह के सत्यमूर्ति की छटा दिखाई।
देह जली तो क्या हुआ, नाम अमर तो हो गया;
सत्य तेज से मद सकल, विपक्षियों का खो गया।

(८)

भरा हुआ है धर्म-तत्व भी सत्याग्रह में,
और मर्म—युत कर्म स्वत्त्व भी, सत्याग्रह में।
श्रेष्ठ पूर्वजों का महत्व भी, सत्याग्रह में;
और बन्धुओं का ममत्व भी, सत्याग्रह में।
स्वर्गधाम का द्वार है, सत्याग्रह का मंत्र ही;
करता पतितोद्धार है, सत्याग्रह का मंत्र ही।

(९)

सत्याग्रह का व्रती किस लिये दुख भरता है;
है जग का कल्याण, इसी पर तो मरता है।
होकर वह निःस्वार्थ देश-सेवा करता है;
रख ऊँचा उद्देश्य, अनीतों को हरता है।
तब तो उसकी जगत में, ज्योति चमकती है खरी;
स्वर्गात्मा की छवि छटा, दिव्य ज्योति में है भरी।

(१०)

सत्याग्रह का पंथ विषम है, कंटक मय है;
विविध भाँति के क्रूर रूप दिखलाता भय है।
डर जाता है देख उसे जो भीरु हृदय है;
होता सच्चा व्रती उसी की निश्चय जय है।
त्रासित कर कर भय स्वयं, थक जाता है आप ही;
शीतलता करता प्रकट, कठिन अग्नि की ताप ही।

(११)

सत्याग्रह का है यह ही आदेश समुज्ज्वल;
पालन वह ही करे हृदय जो रखता निश्चल।
सहन करे दुख, दूर रहे विद्वेषानल से;
अन्यायों का जोर हटावे आत्मिक बल से।
सत्य, ईश—आदेश है, यह न न्याय-प्रतिकूल है;
कहें राज-विद्रोह जो, उनकी भारी भूल है।

(१२)

निःशक्तों के लिये अस्त्र है यह ही बाँका;
ग्रहण बंधुओ! करो, हरो दुख भारत माँ का।
दमन नीति खा भीति भगेगी, हाथ मलेगी;
वीर-व्रती की टेक न टाले कभी टलेगी।
सत्याग्रह के क्षेत्र में, स्वतंत्रता का बास है,
होना दृढ़ विश्वास तो, परमेश्वर भी पास है।

(१३)

सत्याग्रह के विमल मंत्र में करामात है ;
इस पर देना प्राण नहीं कुछ बुरी बात है ।
रक्ताक्षर से लिखा नाम जग में चमकेगा ;
अमर रहेगा सदा तेज हर दम दमकेगा ।
ईश्वर के प्रति-रूप का, जब कि सहारा साथ है ;
तो निश्चय हो बन्धुओ ! विजय तुम्हारे हाथ है ॥

—श्रीयुत 'अभिलाषी'

व्यर्थ प्रयास

अब क्यों व्यर्थ सताते हो ?
दूर देश से आकर अच्छा मत अपना फैलाते हो !!
साधु हो ? वह साधना भी जानली ;
विज्ञ हो ? हाँ कल्पना भी मान ली ।
सिद्ध हो ? अब सिद्धता पहिचान ली ;
राख धूनी की तुम्हारी छान ली ॥
शुभ्र सन्त का वेश बनाकर विकट जाल फैलाते हो !
अब क्यों व्यर्थ सताते हो ?
शान्ति सुख में तुम अलौकिक भक्त हो ;
दिव्य फल दाता मही में व्यक्त हो ।

क्या हमारे लाभ पर अनुरक्त हो ?
स्वार्थ परता-छिः-न-आप बिरक्त हो ।
मीठी मीठी बातों द्वारा छल से गला दबाते हो!
अब क्यों व्यर्थ सताते हो ?

ध्यान दूँगा-धन्य हो ध्यानी बड़े ;
ज्ञान दूंगा-वाह-बिज्ञानी बड़े !
मान दूंगा-ठीक हो मानी बड़े ;
दान दूंगा-आप-बरदानी बड़े !
चमत्कार से भरी हुई सब गुण की सिद्धि दिखातेहो ?
अब क्यों व्यर्थ सताते हो ?

"बिश्व हितकारी हमारा नाम है ;
सर्व सुखदायो हमारा काम है ।
सत्यतामय नीति रीति ललाम है ;
कीर्ति प्रतिभा कान्तिकुल अभिमान है ॥"
इस प्रकार गुणसागर बन कर-मोती लुटा फँसाते हो ?
अब क्यों व्यर्थ सताते हो ?

—एक राष्ट्रीय आत्मा

भारतीय नरेशों को चेतावनी ।

नरपतियों अब दिन थोड़े हैं !

वह पेरिस का सम्राट मिटा, हंगरी का साम्राज्य मिटा।
वे जार रूस के नष्ट हुये, जर्मन केसर पद-भ्रष्ट हुये॥
मत समझो इन्हें गपोड़े हैं !

अब छोड़ दीजिये मनमानी, यदि चाहो इज़्ज़त रखवानी।
वे गये जमाने खेलों के, मौज़ों के सुन्दर मेलों के॥
चौगान है न अब घोड़े हैं !

अब बड़ी बात बकना छोड़ो, पर दारायें तकना छोड़ो।
अब राक्षसी युग बीत चला, अब बदल चला सारा अमला॥
जिस पथ में देखो राड़े हैं !

मत भूलो पोली घातों में, बगुला भक्तों की बातों में।
वे तुमको मूर्ख बना देंगे, देखो मझधार डुबा देंगे॥
ये दाखे नहीं लसोड़े हैं !

अब सीधे हो या पेन्शन लो, अथवा कोई रास्ता देखो।
असिवल से बहुत बढ़े बाबू, अब आया युग गर्दन नापू॥
अब सब के कर क्रांति कोड़े हैं !

क्या आशा सद्व्यवहारों की, आत्मीय प्रेम की धारों की।
जब ख़ुद न किसी के भले रहे, सब पर ले डंडा पिले रहे॥
क्या दुर्गुण तुमने छोड़े हैं !

वे अवसर देख रहे सारे, जो मिटकर तुम से हारे।
जिनको तुमने पथ भ्रष्ट किया, पतिव्रत जिनका नष्ट किया॥
जिनके कर, पद, रवतोड़े हैं!
वे दुर्दिन आ पहुँचे हैं अब, हँसते हँसा रोने हैं जब।
तस्कर निजधन खोते हैं जब, सब बड़े बड़ों के अब या तब॥
अघ के घट जिनने फोड़े हैं!
क्या उससे बचने की आशा, जिसने रावण तक को फाँसा।
पाले अब उसके पड़े मियाँ, जिसने सुरपति को हिला दिया॥
जिसने हरि के प्रण तोड़े हैं।
नरपतियों अब दिन थोड़े हैं!

—कवि "निरंकुश"

कायापलट।

यह सृष्टि परिवर्तित स्वयं होती चली आई सदा,
स्थिति एक ही मन में किसी को भी नहीं भाई सदा।
यह काल-वश काया पलटती है कभी रुकती नहीं,
इच्छा हुई इसकी जहाँ अति वेग से झुकती नहीं॥

(२)

वह स्थिर रहेगा क्यों भला संसार जिसका नाम है,
बहुरूपियों का भूप बनना नित्य जिसका काम है।
वह भीरु बनता है कभी वह वीर बनता है कभी,
वह मूढ़ बनता है कभी मति-धीर बनता है कभी॥

(३)

रहता पराये हाथ वह स्वाधीन रहता है कभी,
धनवान रहता है कभी धनहीन रहता है कभी।
वह नींद में रहता कभी जाग्रत—अवस्था में कभी,
सहता सभी कुछ मौन हो वह दुर्व्यवस्था में कभी॥

(४)

वह दुर्जनों को भी सुजन-सम मान लेता है कभी,
होता दुखी निज भूल पर जब ध्यान देता है कभी।
तब दुःख दूना है उठाता दुख घटाने के लिये,
बन्धन हटाने के लिये अपयश मिटाने के लिये॥

(५)

नव नीति सा उसका हृदय तब वज्र सा हो जायगा,
सुख दुःख सम हो जायँगे, भय चित्त से खो जायगा।
उन्मत्त सा होगा निछावर देश के ऊपर स्वयम्,
उसका रहेगा बोल बाला सत्वमय भूपर स्वयम्॥

(६)

अपकीर्ति थी जिससे उसी से कीर्ति होवेगी उसे,
शोकाश्रु-धारा ही सुधा बन कर भिगोवेगी उसे।
बन्धन उसे हो जायगा आनन्द प्रद उन्मुक्ति से,
तन हो विवश उसका न मन परवश रहेगा युक्ति से॥

(७)

शाले दुशालों से अधिक होंगे सुखद कंबल उसे,
होगा समुन्नति-मार्ग का केवल स्वबल संबल* उसे।
नव पुष्प-शय्या सी उसे हो जायगी कंकड़—मही,
जिसने न निज कर जल लिया चक्रा चलावेगा वही॥

(८)

तनज़ेब सा तनजेब देगा मोटिया खद्दर उसे,
शव के लिये उपयुक्त होगी मोटिया चद्दर उसे।
जो फ्रांस से था वस्त्र धुलवा कर मंगाता भूल से,
वर्दी उसे भा जायगी जो धूसरित है धूल से॥

(९)

ऋणिया हुआ जो मूढ़ कुरसी तोड़ने के वास्ते,
होगा वही अति व्यग्र कुरसी छोड़ने के वास्ते।
धन धाम जिसका चुक चला था नाम लेने के लिये,
देगा वही सर्वस्व दैशिक काम लेने के लिये॥

(१०)

छूता विधर्मी की नहीं था छाँह तक जो द्रोह से,
मिल कर वही सब से रहेगा मोह से या छोह से।
मत के झमेले में फँसा जो मर रहा था भूल कर;
उसका स्वदेशी व्रत रहेगा सब मतों को भूल कर॥

---

*संबल पाथेय कलेवा

(११)

प्रति वर्ष जो लाखों कमा कर भी अघाता था नहीं,
सुख-भोग के उपयोग का कुछ अंत पाता था नहीं।
बन कर असहयोगी वही योगीन्द्र-सम हो जायगा,
पहने लँगोटी शान्ति-दायक शाक सत्तू खायगा॥

(१२)

परदेशियों की चाल भाषा भी जिसे भाती रहीं,
खल-दासता ही की क्रिया केवल जिसे आती रहीं।
होगा विभूषित देश—भाषा—वेश—भूषा से वही,
स्वच्छन्द हो होगा सुखी व्यापार-पूजा से वही॥

(१३)

करके अदालत की दलाली जेब था जो भर रहा,
धिक पेट था जो भर रहा विषयान्ध हो था मर रहा।
कृषि कर्म या दूकानदारी को लगा करने वही,
दुष्कर्म से हट कर लगा निज धर्म पर मरने वही॥

(१४)

जो था हुज़ूरों को हज़ूरी में मजूरे सा खड़ा,
वह आत्म-बल का ज्ञान पाकर अग्रसर अब हो पड़ा।
जो पार्टियों पर पार्टियाँ देने लगा था चाव से,
वह दीन दुखियों पर दया करने लगा सद्भाव से॥

(१५)

आतुर हुआ था आतुरों की चातुरी से जो वृथा,
पीता सुरा था नित्य ही मति आसुरी से जो वृथा।
वह शान्ति संयम से जितेन्द्रिय हो गया अब देखिये,
वह ही फलाहारी स्वयं सेवक बना सब के लिये॥

(१६)

कोरी जुलाहे सर्वदा जिस काम को करते रहे,
करके परिश्रम कष्ट से निज पेट को भरते रहे
पर कौन ऐसी जाति है जो वस्त्र अब बुनती नहीं,
सोती रही चिरकाल से अब जग गई मानों मही॥

— रामचरित उपाध्याय

स्वाधीनता क्या है ?

(१)

कुदरत दिखा रही है जिसका स्वयं तमाशा,
प्रत्येक तत्व में है जिससे स्वकर्म पैदा।
जिसके नियम नियम में है पूर्ण-पूर्ण सुविधा,
प्रत्यक्ष फल बनी है जो ईश की दया का॥
स्वाधीनता वही है स्वाधीनता वही है।

(२)

जो है सुविज्ञ मन में आश्चर्य कर दिखाती,
जो बद्ध जीव को यों स्वच्छन्द है बनाती।
जो इष्ट लक्ष्य को है क्रमशः समीप लाती,
जो मुक्ति के नियम को है इस तरह बनाती॥
स्वाधीनता वही है स्वाधीनता वही है।

(३)

जिसके लिये सदा ही आधार धर्म का है,
जिसका विकास पाना विस्तार धर्म का है।
जिसको गृहीत करना सत्कार धर्म का है,
जिसकी यथार्थता में बस सार धर्म का है॥
स्वाधीनता वही है स्वाधीनता वही है।

(४)

है न्यायशील रक्षक जो सर्व स्वत्व गण की,
ब्योहार-साम्य ही है जिसकी खरी कसौटी।
सञ्चार सभ्यता का है जो सदैव करती,
है आत्म-संयमन को जिसमें प्रभाव काफी॥
स्वाधीनता वही है स्वाधीनता वही है।

(५)

सुख और शान्ति का है जिसमें प्रकट समन्वय,
अर्थात् प्रेम मय है जिसका महान आशय।

जिसके असीम थल का होता नहीं कभी क्षय,
यों अन्त में विजय है जिसकी नितान्त निश्चय॥
स्वाधीनता वही है स्वाधीनता वही है।

(६)

बस आत्म शुद्धि में है हरदम निवास जिसका,
या है सहिष्णुता से पूरा विकास जिसका।
सच्ची उदारता है गुण ख़ास-ख़ास जिसका,
सत्कार्य के लिये है अविरल प्रयास जिसका॥
स्वाधीनता वही है स्वाधीनता वही है।

(७)

होता अवश्य जिससे ऐसा समर्थ जीवन,
मिटता नहीं स्वयं ही करके अनर्थ जीवन।
सार्थक प्रधानतः है केवल तदर्थ जीवन,
जिसके बिना जगत में है व्यर्थ--व्यर्थ जीवन॥
स्वाधीनता वही है स्वाधीनता वही है।

(८)

पक्षी जिसे ग्रहण कर हैं व्योम में विचरते,
पशु विद्यमानता में जिसकी कुलेल करते।
पथ-पर मनुष्य जिसके हैं शौक़ से गुज़रते,
दम जीव मात्र जिसका हर दम सहर्ष भरते॥
स्वाधीनता वही है स्वाधीनता वही है।

(९)

सारा जहान जिसका अब ध्यान धर रहा है,
हाँ जीवनार्थ जिस पर दिन-रात मर रहा है।
जिसके निमित्त क्या क्या दुष्कृत्य कर रहा है,
जिसके लिये बिगड़कर, कुछ कुछ संवर रहा है॥
स्वाधीनता वही है स्वाधीनता वही है।

(१०)

स्वयमेव हिन्द जिससे है आज लौ लगाये,
पर निज पवित्रता को निज लक्ष्य हैं बनाये।
धारण किये अहिंसा विद्वेष को हटाये,
हैं कष्ट-भार शिर पर जिसके लिये उठाये॥
स्वाधीनता वही है स्वाधीनता वही है।

—इक़बाल वर्मा "सेहर"

बलिवेदी का सन्देश।

(१)

नवयुवको! नवयुग की प्यारी नव कौमुदी बिछाना होगा।
नव जीवन सञ्चार हृदय में जगतीतल हुलसाना होगा॥
क्षुद्र प्राप्त गति किन्तु तुम्हें अब रुद्र शक्ति दिखलाना होगा।
आंसू की नर्मदा बहा कर वसुधा को नहलाना—होगा॥
ऊँचे शृङ्गों पर झटपट चढ़ ऐक्य स्नेह सिखलाना होगा।
पूज्य पिता भारत-चरणों पर जीवन पुष्प चढ़ाना होगा॥

(२)

"शासन, उच्चासन जगती में भारत मुकुट तुम्हारा होगा।
भारत प्यारा नयनों का प्रिय उज्वल चाँद सितारा होगा॥
मा बहिनों ने मिल कर इसको फिर स्वच्छन्द सँवारा होगा।
इसकी आन-बान के सन्मुख विश्व मात्र फिर हारा होगा॥
बच्चे बच्चे सँभल पड़ेंगे," गीत सुरों को गाना होगा।
पूज्य पिता-भारत चरणों पर जीवन पुष्प चढ़ाना होगा॥

(३)

"गली गली में अली अली" की टेर मधुर गुँजवाना होगा।
"बन्दे हो जननी स्वच्छन्दे" राग यही अलपाना होगा॥
"अल्लाहो अकबर जयनटवर" बिजयी तान उड़ाना होगा।
"सत्याग्रह व्रत पालन करना" हृदयोद्देश बनाना होगा॥
मथुरा मक्के में किञ्चित भी भेद न तुमको पाना होगा।
पूज्य पिता-भारत चरणों पर जीवन पुष्प चढ़ाना होगा॥

(४)

ऊँचे चढ़ना, आगे बढ़ना, लड़कों को सिखलाना होगा।
उस स्वच्छंद मातृ-मूरति को वसुधा राज्य दिलाना होगा॥
भय। विघ्नों के वार सहन कर फूल हार बतलाना होगा।
हाँथ-पाँव बाँधे जावेंगे इतना नहीं डुलाना होगा।
बन्दी गृह में जाना उसको देव-स्थान बताना होगा।
पूज्य पिता-भारत चरणों पर जीवन पुष्प चढ़ाना होगा॥

(५)

पृथ्विराज, वरबीर शिवा जी, बनना काम तुम्हारा होगा।
अर्जुन, भीम, युधिष्ठिर, पांडव होना काम तुम्हारा होगा॥
दिल्ली अरु चित्तौर, सिंहगढ़, स्वर्ग स्वदेश तुम्हारा होगा।
पानीपत, हल्दीघाटी, रण, वह कुरु-क्षेत्र तुम्हारा होगा॥
सुजला सुफला शस्य मही पर कीर्ति कलित भर जाना होगा।
पूज्य पिता-भारत चरणों पर जीवन पुष्प चढ़ाना होगा॥

(६)

देशभक्ति की भस्म रमाकर योगी बन मस्ताना होगा।
कर्मयोग की टेर लगा कर स्वार्थत्याग डट जाना होगा॥
हँसते हुये हलाहल की भी घूँटे हाँ, पी जाना होगा।
दे हुङ्कार विजय की अपनी अपना देश जगाना होगा॥
राष्ट्रीय-झंडा फहराना—विजयी दिवस दिखाना होगा।
पूज्य पिता-भारत चरणों पर जीवन पुष्प चढ़ाना होगा॥

(७)

चर्खे की प्यारी आवाजें घर घर तुम्हें सुनाना होगा।
गाढ़े के पीताम्बर बुन कर माधव को पहिनाना होगा॥
तीस कोटि ऋषि संतानों को भारत भक्त बनाना होगा।
युग युग रहें दमकते जीते ऐसे मंत्र सिखाना होगा॥
सुर होकर फिर तुम्हें स्वर्ग से सुधा स्रोत बरसाना होगा।
पूज्य पिता-भारत चरणों पर जीवन पुष्प चढ़ाना होगा॥

—श्री० 'गुलाब'

महात्मा गांधी का मन्त्र।

आ गया है कर्म युग कुछ कर्म करना सीख लो।
देश पर अरु जाति पर हँस हँस के मरना सीख लो॥
मारने का नाम मत लो आप मरना सीख लो।
मिस्ल आयर्लैंड दब कर फिर उभरना सीख लो॥
पार यदि होना तुम्हें परतंत्रता दुख सिंधु से।
तैर कर तो रक्त सागर से उतरना सीख लो॥
तीर्थयात्रा के लिये दिन रात उत्साहित रहो।
कृष्ण जन्म स्थान में निर्भय विचरना सीख लो॥
देखना है दृश्य भारतवर्ष में यदि स्वर्ग का।
देश का तो प्राण प्रण से दुख हरना सीख लो॥

मेरी ख़्वाहिश।

ख़्वाहिश है मेरी जान वतन पर निसार हो।
या रब! हर एक दिल में स्वदेशी का प्यार हो॥
उठ कर सुबह जो गायें स्वदेशी तराने हम।
हाथों में हमारे प्रभो! देशी सितार हो॥
उबले हमारा ख़ून भी देशी के जोश में।
कानों में गूंजती सदा देशी पुकार हो॥

सेहरा की जगह पाग स्वदेशी बँधायें हम।
शादी में शाद हों जो स्वदेशी प्रचार हो॥
परवाना बन के शम्म वतन पर शहीद हों।
खद्दर का कफ़न लाये कोई इन्तज़ार हो॥
हम ख़ादिमों की हस्ती रहे या न रहे लेक—
दुनियाँ के सामने बचा क़ौमी वक़ार हो॥
भारत की शान रक्खेंगे अपने को मेट कर।
ज़ालिम की तेग़ सर पै चढ़े बार बार हो॥
हुब्बेवतन के भय से भरा कासये गुरूर।
साक़ी की नज़र यों फिरे महफ़िल में यार हो॥
रोता फिरे ज़माना में अब मैनचेस्टर।
चरख़े का चक्र लेके अब भारत तयार हो॥
हम हों हमारे देश में देशी हों मुन्तज़िम।
ग़ैरों के हाथ दम न घुटे सोगवार हो॥
खद्दर के तार तार में अटका है जब स्वराज्य।
"सत्येन्द्र" क्यों न दिल से कहो एतबार हो॥

—'सत्येन्द्र'

खद्दर से स्वराज्य।
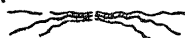
खुदा का हुक्म है सीने से लगायें खद्दर।
हुक्म हाकिम का है पहने न पिन्हायें खद्दर ॥१॥
हमको लाज़िम है कि हर काम में लायें खद्दर।
भूल कर भी न कभी दिल से भुलायें खद्दर ॥२॥
मुल्के भारत की है तक़दीर हाथ खद्दर के।
हाथ जोड़े हुये दौलत है साथ खद्दर के ॥३॥
क़ौमे नाशाद को फिर शाद करेगा खद्दर।
गुलाम मुल्क को आज़ाद करेगा खद्दर ॥४॥
ज़ालिमों ! जुल्म को बर्बाद करेगा खद्दर।
गुल्शने हिन्द को आबाद करेगा खद्दर ॥५॥
जिस तरह साफ़ है दिल साफ़ करेगा खद्दर।
रूबरू जुल्म के इन्साफ़ करेगा खद्दर ॥६॥
अँधेरे हिन्द में कर देगा उजाला खद्दर।
मानचेस्टर का निकालेगा दिवाला खद्दर ॥७॥
तीर तलवार से है तेज़ धार खद्दर की।
तोप बन्दूक़ से बढ़कर है मार खद्दर की ॥८॥
बढ़ाये प्यार जो सारा समाज खद्दर से।
मिलेगा हिन्द को पूरा स्वराज्य खद्दर से ॥९॥

—सरयूनारायण शुक्ल।

स्वदेशी-व्रत

(१)

पले हैं देश में हम हैं हमारा तन बदन देशी,
मरें हम देश पर जी से बनायें प्राण मन देशी।
जियें जब तक सदा धारण करें भोजन बसन देशी;
मिले मिट्टी में मिट्टी जब मिले हमको कफ़न देशी॥
न भूले देश अपना, ध्यान हरदम हो स्वदेशी का।
न हों अज्ञान, ऐसा ज्ञान हरदम हो स्वदेशी का॥

(२)

मधुर मधु मान कर बहुधा, विषम विष घूट लेते हैं;
ग़ज़ब है यह सर आँखों पर, बिदेशी बूट लेते हैं।
बना देते हैं वह रेशम, जो हम से जूट लेते हैं;
किसी हिकमत से वह, आभा बनाकर लूट लेते हैं।
लुटायें घर ग़रीबी में, ये क्या है आपही समझें।
बिदेशी वस्तु का व्यवहार, करना पाप ही समझें॥

(३)

बिदेशी लूट कर हमको, हैं माला माल बन बैठे;
यही करनी हमारी थी, कि हम कंगाल बन बैठे।
कृपा की ओट में कैसे, कुटिल-उन काल बन बैठे;
रहें हम बदनसीबी में, वो बा-अक़बाल बन बैठे।
फले हैं जिसमें विषफल यह, हमारी बेल बोई है
ये किश्ती हाय हमने अपने हाथों से डुबोई है॥

(४)

ग़नीमत है जो अब भी होश लोगों ने सँभाला है;
ये समझे हैं विदेशी 'रम' नहीं है विष का प्याला है।
पिला कर दूध हमने आज तक काले को पाला है;
वही फुफकारता है आस्तीं में, डसने वाला है।
सुलाना मोह निद्रा में, ग़ज़ब है क़हर है इसका;
स्वदेशी के सिवा मंतर, नहीं वह जह्र है इसका॥

(५)

ऐ केंचुक झाड़ने वाले, ये केंचुल से भी बदतर है;
जिसे तू नैनसुख कहता है, वह तो दुःख का घर है।
हम उतने पाँव फैलायेंगे, जितनी लंबी चादर है;
हमारे वास्ते अब बढ़ के, मखमल से भी खद्दर है॥
गुलामी की अलामत हम, बदन पर रख नहीं सकते।
कभी हम हर्फ़ गाँधी के, बचन पर रख नहीं सकते॥

(६)

भरोसा हो स्वदेशी का विदेशी का सहारा क्या?
गुज़ारा देश से होगा, हमारा क्या तुम्हारा क्या?
विचारो तो ज़रा मन में, बिगाड़ा क्या सँवारा क्या?
नहीं क्या तुम स्वदेशी हो, नहीं है देश प्यारा क्या?
नहीं स्वाधीनता की भी सनेही! चाह क्या तुमको;
स्वदेशी पर मिटे कितने, नहीं है आह क्या तुमको॥

—ले० 'त्रिसूल'

इस कविता पर लेखक को श्री० बेनीमाधव जी खन्ना की ओर से ४१) रुपया पुरस्कार दिया गया।

चर्खे से लाभ।

सुनो जी चर्खे की मृदुतान।

चूं चूं कर भारत गुण गाता, तन्तु मिला कर सूत बनाता।
एक्य पाठ है हमें पढ़ाता, है यह गुणी महान॥ सुनो०॥

द्रव्य बहुत विदेश में जावे, यह हमरे कुछ काम न आवे।
चर्खा इसे देश में लावे, गुण लो इसके जान॥ सुनो०॥

बेवाओं को काम मिलेगा, शिल्प-कला का मान मिलेगा।
सकल विश्व हैरान रहेगा, होगा देशोत्थान॥ सुनो०॥

अपने पैरों आप खड़े हो, निद्रा में क्यों पड़े हुये हो।
पर आशा क्यों गहे हुये हो, स्वत्व समर लो ठान॥ सुनो०॥

सभी से मेरी यही बिनय है, कातो चरखा मंगलमय है।
सब का रक्षक करुणामय है, होओ मत हैरान॥ सुनो०॥

—ले० कन्हैयालाल

चर्खा।

अगर हर बशर, हाँ! चलायेगा चर्खा।
तो दोज़ख को जन्नत बनायेगा चर्खा॥१॥

हमें हरबला से बचायेगा चर्खा।
मुसीबत में भी काम आयेगा चर्खा॥२॥

निशाँ ज़ालिमों का मिटायेगा चर्खा।
सदाक़त का सिक्का बिठायेगा चर्खा॥३॥

मिलेगा इसी से स्वराज्य हिन्दियों को ।
सितम, ग़म, अलम से छुड़ा देगा चर्ख़ा ॥४॥
करेगा ये नाशाद को शाद यक दिन ।
हमें हक़ हमारे दिलाये चर्ख़ा ॥५॥
जिन्हें आज कल है खुदाई का दावा ।
उन्हीं को ये नीचा दिखायेगा चर्ख़ा ॥६॥
जो मोहसिन से अपने दग़ा कर रहे हैं ।
ये मिट्टी में उनको मिलायेगा चर्ख़ा ॥७॥
अभी क्या हुआ, देखना चन्द दिन में ।
विदेशी के धुर्रे उड़ायेगा चर्ख़ा ॥८॥
करेंगे जो चर्ख़े की नाक़द्र—दानी ।
बला बन के उनको सतायेगा चर्ख़ा ॥९॥
सखुन है ये "सरयू" का दुश्मन के सर पर ।
भनन भन भनन, भन भनायेगा चर्ख़ा ॥१०॥
—सरयूनारायण शुक्ल

चरखे का मंत्र ।

गाँधी बाबा ने भारत जगाय दिया है ।
हमें चरख़े का मन्तर बताय दिया है ॥ गांधी बाबा० ॥
शैर—जब से घर घर में ये चरख़े का चलाना छूटा ।
बस उसी रोज़ से भारत का नसीबा फूटा ॥

आके अंगरेज़ों ने मन माना खसोटा लूटा ।
धर्म छूटा सभी इन्सान का पौरुष टूटा ॥
आंखों से पट्टी हटा कर गुलामी की—
मारग पुराना दिखाय दिया है ॥ गांधी बाबा० ॥१॥
शैर—कौन सा घर था जहाँ चरख़े नहीं चलते थे ।
लाखों मन सूत इन्हीं चरख़ों से निकलते थे ॥
मोटे औ कपड़े मिहीं सब तरह के बनते थे ।
शुद्ध मज़बूत थे सुख से उन्हें पहनते थे ॥
बाहर से आके राज जमा के—
हाय,गोरों नेवहसुखनसाय दिया है ॥ गांधी बाबा० ॥२॥
शैर—ब्याह शादी में था दहेज़ में चरख़े का चलन ।
नारियां हिन्दू औ मुसलिम की समझती थी सुगन ॥
नेम से नित्य वे चरख़े सदा चलाती थीं ।
अब की मानिन्द नहीं बैठ दिन बिताती थीं ॥
हिन्द की वे ही अवलाओं ने—
अब तो पापों में मन को लगाय दिया है ॥ गांधी बाबा० ॥३॥
शैर—देख कर ढाके की मल मल व शर्बती वैसी ।
हाय, अंगरेज़ों के सीने में समाई ऐसी ॥
हाथ कटवा, लिये भारत के उन जुलाहों का ।
कर दिया ठीकरा हम सबको आज राहों का ॥
वनिज औ व्यौपार मिटा कर—
हाय,मिट्टी में हमको मिलाय दिया है ॥ गांधी बाबा०॥४॥

स्वदेशी।

मंगल का शुभ मूल मंत्र है स्वावलम्ब का यन्त्र स्वदेशी।
तेरे ही द्वारा अब होगा भारत शीघ्र स्वतन्त्र स्वदेशी॥
कर विचार सब भाँति परस्पर लख सुख सम्पति सार स्वदेशी।
हिल मिल हिन्दू-यवन समझते अपना प्राणाधार स्वदेशी॥
आत्म-युद्ध के लिये कवच हैं सुन्दर खद्दर वस्त्र स्वदेशी।
चर्खा चक्र सुदर्शन है बस केवल सच्चा शस्त्र स्वदेशी॥
जिन लोगों ने कूट चाल से हरा हमारा सर्व स्वदेशी।
ईश-कृपा से चूर्ण कर रहा उनका सारा गर्व स्वदेशी॥
विविध वेष धर वस्तु विदेशी आई दलने दर्प स्वदेशी।
हो अब सजग डस रहा उनको बनकर विषधर सर्प स्वदेशी॥
धारण किया भारतीयों ने असहयोग वैराग्य स्वदेशी।
उदय हो रहा है वह देखो! भारत का सौभाग्य स्वदेशी॥
हा! स्वदेश में ही स्वजनों से सहसह कर अपमान स्वदेशी।
बस अतिसय खो चुकी जात-निज गौरव ज्ञान, गुमान स्वदेशी॥
दैव दया से शुभ दिन आये हुआ सुविधि सम्मान स्वदेशी।
निश्चय ही अब पूर्ण करेगा भारत का भगवान स्वदेशी॥
कामदार कश्मीर दुशाले ढाका मलमल थान स्वदेशी।
फिर बनारसी वस्त्र बनेंगे पहने सब सुख मान स्वदेशी॥
गाढ़ा—प्रेम बढ़ा गाढ़ा से खद्दर प्रथम प्रचार स्वदेशी।
राष्ट्र बनाकर करें समुन्नत फिर निज कारोबार स्वदेशी॥

पहले कष्ट सहन कर व्रत से रहें एक मत लोग स्वदेशी।
होगा प्राप्त पूर्ण सत्वर है फिर स्वराज्य सुख भोग स्वदेशी॥
भारतीय राष्ट्रीय भवन की गहरी निश्चित नींव स्वदेशी।
दुनियाँ के सन्मुख भारत की उच्च करेगा ग्रीव स्वदेशी॥
चख घर घर चल चक्र धर! कतै अपरमित सूत स्वदेशी।
सभी जुलाहे कोरा फिर से बुनें वस्त्र मज़बूत स्वदेशी॥
केवल कपड़ों तक नहिं होगी उन्नति के इति अस्तु स्वदेशी।
कला कुशल जन यहीं रचेंगे सब व्यवहारिक वस्तु स्वदेशी॥
जागृत हों फिर सभी कला में भारतीय प्राचीन स्वदेशी।
तथा सीख पश्चिमी कलायें उनको करें नवीन स्वदेशी॥
प्रभो हमें बल बुद्धि दीजिये, हो न कभी बलहीन स्वदेशी।
इसी वर्ष निज आत्म शक्ति से भारत हो स्वाधीन स्वदेशी॥

—रामनारायण मिश्र

चरखा।

(१)

सखा तू गुणियों में गुणवान।
स्वतंत्रता के सुखद सूत्र का सूत्रधार बलवान
ऐसी अनुपम युक्ति चला दे,
मञ्जु मुक्ति से शीघ्र मिला दे।
अपनी चरचर चाक चाल से काल-चक्र के चरण हिला दे।

और स्वदेशी शक्ति जिला दे,
भ्रम से सकुचे सुमन खिला दे।
गृह गृह में गृहियों की गृहणी करतीं तेरा ध्यान।
सखा तू गुणियों में गुणवान॥

(२)

वसन हमारे लटे-फटे हैं,
हाथों के अंगुष्ठ कटे हैं।
अर्द्ध नग्न या पूर्ण नग्न हैं, तन-तन्त्री के तार घटे हैं।
बचे विदेशी वस्त्र छटे हैं।
किन्तु समर में आज डटे हैं।
ऐसे कठिन समय में तेरा करते हैं आह्वान।
सखा तू गुणियों में गुणवान॥

(३)

सकल कलों का है नायक तू,
दिव्य दान द्युति का दायक तू।
इस पीड़ित परतन्त्र देश-प्रति पूर्ण प्रेम का परित्रायक तू,
असहायों का सु-सहायक तू,
है गन्धर्व सदृश गायक तू।
दे संगीत प्रेम का परिचय छेड़ सुरीली तान।
सखा तू गुणियों में गुणवान॥

(४)

बाँका वीर व्रती विजयी है,
पर आज्ञाकारी विनयी है।
तोप तीर तलवार आदि से तुझ में क्या कुछ शक्ति नयी है?
अब दुख-दोषा बीत गयी है,
महिमा तेरी बीत गयी है।
करते हैं गुणवान गर्व से नित गान्धी भगवान्।
सखा तू गुणियों में गुणवान॥

(५)

बल हीनों का वायु वान तू,
है वर वोहित के समान तू;
चमका दे व्यवसाय विश्व में विश्रुत व्यवसायी महान तू।
है भूतल पर भाग्यवान तू,
फिर झटपट पट कर प्रदान तू।
असहयोगियों की आत्मा को तुझ पर है अभिमान।
सखा तू गुणियों में गुणवान॥

—'एक राष्ट्रीय आत्मा'

दीप-मालिका ।

दीपावलि ! दुख दूर भगाओ !

दीन दुखी सब दुर्बल तन हैं, चिन्ता से चिन्तित निर्धन हैं,
बुझे हुये दीपक के मन हैं, उनमें जीवन जोति जगाओ ।
दीपावलि ! दुख दूर भगाओ ॥१॥

कोई नहीं किसी से कम हैं, न हम नीच अरु वे उत्तम हैं,
सभी मनुज आपस में सम हैं, समता का संदेश सुनाओ ।
दीपावलि ! दुख दूर भगाओ ॥२॥

अन्धकार अज्ञान यहाँ है, क्लेशों की भर मार यहाँ है,
ऐसी हालत और कहाँ है ? फिर से ज्ञान-भानु चमकाओ ।
दीपावलि ! दुख दूर भगाओ ॥३॥

दिव्ये ! शान्ति सौख्य विस्तारो, शिल्प-कला विज्ञान प्रचारो,
भीषण दास्य दैन्य दुख टारो सुख समृद्धि घर घर फैलाओ ।
दीपावलि ! दुख दूर भगाओ ॥४॥

सम विकाश का अवसर पायें, गोरे कालों को न दबायें,
पक्षपात अन्याय मिटायें, ऐसा बल हममें उपजाओ ।
दीपावलि ! दुख दूर भगाओ ॥५॥

रँगे एक रँग देश हमारा, बहे प्रेम की उज्ज्वल धारा,
बाधायें सब करें किनारा, माता ! भ्रम-भय—भूत नशाओ ।
दीपावलि ! दुख दूर भगाओ ॥६॥

हिन्दू मुस्लिम जैन पारसी, सब ही हैं भारत के वासी,
सब उसके हित के अभिलाषी-बनें यही शुचि पाठ पढ़ाओ ।
दीपावलि ! दुख दूर भगाओ ॥७॥
सत्य स्वदेशी व्रत हो प्यारा, हिन्दू हिन्दी हिन्द दुलारा ।
गूंजे असहयोग जयकारा, सुख स्वराज्य सत्वर दरशाओ ॥
दीपावलि ! दुख दूर भगाओ ॥८॥
—हरिश्चन्द्रदेव विद्यार्थी
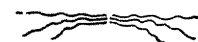
जातीयता ।

प्राणि मात्र में प्रेम ब्रह्म की तरह समाया;
घट घट में है देख पड़ रही इसकी माया ।
इसमें मधु-माधुर्य्य मक्खियों तक ने पाया;
मनुजों ने तो इसे प्राण ही सा अपनाया ॥
इसने इस मर-लोक में, सदा अमृत की वृष्टि की ।
कुल कुटुम्ब की, जाति की, इसने जग में सृष्टि की ॥

——

कुल मिलकर जब बंधे एकता के बंधन में;
लगे विचरने भाव एक से मानव मन में ।
हुई एक सी प्रीति धर्म में या वह धन में;
भव्य भवन बन गये बसे पुर बीहड़ बन में ॥
जन्मी यों जातीयता, पलने में पलने लगी ।
विद्युतगति से यह चली, जब पैरों चलने लगी ॥

विपद् समय में कभी प्रेम में फँस कर आयी,
कभी धरणि-धन-लोभ धर्म में धँस कर आयी ।
कभी विजय-लालसा लोल में लस कर आयी;
रही हँसाती, रही जब तलक हँस कर आयी ॥
निखरी इसकी सुघर छवि, दूना हुआ जमाल है ।
अब तो जातीयता का, जग में यौवन-काल है ॥

रही एकता तोड़ धर्म-बन्धन को डाला;
उर में है स्वातन्त्र्य-भाव धर लिया निराला ।
हुआ देश से प्रेम उसी का जपती माला;
जिसने देखा, हुआ उसी का मन मतवाला ॥
योद्धाओं की जान भी, इस पर बलि जाने लगी ।
दृश्य स्वर्ग का मर्त्य में, यह है दिखलाने लगी ॥

बनी जातियाँ राष्ट्र-शक्ति निज-केन्द्रित करके;
राज्य देश के प्रेम, एकता से भर भर के ।
भेद-भाव मिट चले घाट के रहे न घर के;
अगर हुए राष्ट्रीय—समर में योद्धा मर के ॥
प्रतिबन्धक जितने मिले, उनके सिर तोड़े गये ।
नाते स्वाधीनता से, राष्ट्रों के जोड़े गये ॥

ऐक्य, राज्य, स्वातन्त्र्य यही तो राष्ट्र-अङ्ग हैं;
सिर, धड़, टाँगों सदृश जुड़े हैं, सङ्ग सङ्ग हैं।
सप्त रंग इव मनुज मिले हैं, एक रङ्ग हैं;
बुन्द बुन्द मिल जलधि बने, लेते तरङ्ग हैं॥
व्यक्ति, कुटुम्ब, समाज सब, मिले एक ही धार में;
मिला शान्ति-सुख राष्ट्र के, पावन पारावार में॥

यद्यपि हैं मस्तिष्क विविध, पर हृदय एक हैं;
जाति, देश, के हानि लाभ के समय एक हैं।
होकर परम सशक्त वीर हैं, अभय, एक हैं;
अस्त एक ही और सभी के उदय एक हैं॥
हुआ ऐक्य इस भांति जब, फिर क्या पौबारा हुये!
लोक विदित लोकोक्ति है—'एक एक ग्यारह हुये'॥

आँख उठाये रही, शक्ति यह किस नृप वर में;
क्या मजाल कर सके उन्हें जो कोई कर में।
सिर तोड़ें जो हाथ कहीं डाले पर घर में;
वे युग फूटे गोट कहीं मरती चौसर में॥
कड़ी कड़ी से बन गई बहुत बड़ी जंजीर है
अब गजेन्द्र को बाँधने में समर्थ है, धीर है

साम्य-भाव बन्धुत्व एकता के साधन हैं;
प्रेम-पाश में बँधे निरन्तर निर्मल मन हैं।
डाल न सकते धर्म आदि कोई अड़चन हैं;
उदाहरण के लिये स्वीस हैं, अमेरिकन हैं॥
मिले रहें मन मनों में, अभिलाषा भी एक हो।
सोना और सुगन्ध हो, जो भाषा भी एक हो॥

अंग राष्ट्र का बना हुआ प्रत्येक व्यक्ति हो;
केन्द्रित नियमित किये सभी को राज-शक्ति हो।
भरा हृदय में राष्ट्र गर्व हो, देश-भक्ति हो;
समता में अनुरक्ति, विषमता से विरक्ति हो॥
राष्ट्र-पताका पर लिखा, रहे 'न्याय—स्वाधीनता!'
पराधीनता से नहीं, बढ़ कर कोई हीनता॥

बँधते पशुवत् हाय पराई जंजीरों में;
पिसते बने गुलाम चाल वाले मीरों में।
अन्तर कुछ रह गया न उनमें, तसवीरों में;
कङ्कड़ से पड़ रहे दृष्टि, उज्वल हीरों में॥
बन्दा जब इस जगत में, बन्दे का बन्दा हुआ।
बंधे हुए जल की तरह, मलिन हुआ, गंदा हुआ॥

रहे व्यक्ति स्वाधीन; अबाधित हो उसकी गति;
हों जो निर्मित-नियम, दे सके उनमें सम्मति।
करे जाति निर्णीत स्वयं निज शासन-पद्धति;
समझे जिसको योग्य बनाये उसे राष्ट्र-पति॥
हाथ रहे हर व्यक्ति का, राज-नियम निर्धार में।
रहे राष्ट्र-स्वाधीनता, शासन में—अधिकार में॥

——

यों स्वतन्त्र जातियाँ शान्ति जनकर रहती हैं;
व्यर्थ नहीं ऐंठती, न वह तनकर रहती हैं।
मित्र राष्ट्र से मिली, शत्रु हनकर रहती हैं;
पराधीन जातियाँ व्याधि बनकर रहती हैं॥
स्वाभिमान है चित्त में, और देश का प्यार है।
तो जातीय जहाज़ को, खेओ बेड़ा पार है॥

——

उठो, युवक गण उठो, भेद का भंडा फोड़ो;
आड़े आयें अगर, रूढ़ि के बन्धन तोड़ो।
सम्मुख उन्नति पथ प्रशस्त है, इसे न छोड़ो;
राष्ट्र बनाओ और देश से नाता जोड़ो॥
जाग्रत हो जातीयता, उन भावों का ध्यान हो।
भारत के अरमान हो, तुम्हीं देश की जान हो॥

बाँधो सब को ऐक्य-सूत्र में, तुम बँध जाओ;
मुड़ो न पीछे राष्ट्र-यज्ञ में आओ, आओ ।
सोम-सुधा-स्वातन्त्र्य वीरगण, पियो—पिलाओ;
प्राण-दान दो, जाति मृतक हो रही जिलाओ ॥
बंशी बजे स्वराज्य की, होने घर घर गान दो ।
जय जय भारत की कहो, और छेड़ यह तान दो ॥

जय जय भारत राष्ट्र परम प्रिय प्राण हमारे;
सम्भव-विभव-विभूति जयति जय त्राण हमारे ।
जय रस रूप स्पर्श शब्द जय घ्राण हमारे;
तूने जाग्रत किये भाव म्रियमाण हमारे ॥
जीवन हमको दे रहा, तेरा ही जलपान है ।
तेरी ही वर वायु से, आयो हम में जान है ॥

तेरा गौरव हमें गौरवान्वित करता है;
तेरा वैभव परम दीनता दुख हरता है ।
तेरा बल बलहीन जनों में बल भरता है;
तेरा यशोमयङ्क धवलता धुर धरता है ॥
पावन तेरी वसुमती, रत्न गणों की खान है ।
भूषण है तू भुवन का, तू हम सब की जान है ॥

फेंको फेंको फूट, प्रेम-मधु भोग लगाओ;
दूर करो दासता न अब यह रोग लगाओ।
जुड़ जायें सब अङ्ग वही अब योग लगाओ;
मिलकर ऐसी लगन-लाग सब लोग लगाओ॥
एक बार संसार का, चित्त चकित हो जाय फिर।
देख प्रताप, प्रचण्ड-बल, दृष्टि थकित हो जाय फिर॥

जहाँ नहीं सर वहाँ नहीं होता सरोज वन;
जहाँ नहीं रस वहाँ नहीं जाता मलिन्द-मन।
जहाँ नहीं व्यापार वहाँ कब रहा धान्य-धन;
जहाँ नहीं सत्कार वहाँ क्यों जायें सज्जन॥
फल की आशा जड़ बिना, क्या दीवानापन नहीं।
जहाँ नहीं जातीयता, वहाँ कहीं जीवन नहीं॥

देखें, कब भगवान हमें वह दिन दिखलायें;
सकल जातियाँ देश-राष्ट्र की पदवी पायें।
क्षीर नीर की भाँति परस्पर सब मिल जायें;
वृहत राष्ट्र बन जाय, शांति-सुख सब नर पायें॥
साम्य-भाव बन्धुत्व से, पूरित आठो गाँठ हो।
फिर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का घर घर में पाठ हो॥

—श्रीयुत 'त्रिशूल'

तू और मैं।

मैं ढूंढ़ता तुझे था जब कुंज और बन में।
तू खोजता मुझे था असमर्थ के सदन में॥
तू 'आह' बन किसी की मुझ को पुकारता था।
मैं था तुझे बुलाता संगीत में, भजन में॥
मेरे लिये खड़ा था दुखियों के द्वार पर तू।
मैं बाट जोहता था तेरी किसी चमन में॥
बन कर किसी के आंसू मेरे लिये बहा तू।
मैं था तुझे निरखता माशूक़ के बदन में॥
दुख में रुला रुला कर तूने मुझे चेताया।
मैं मस्त हो रहा था तब हाय अंजुमन में॥
बाजे बजा बजा कर मैं था तुझे रिझाता।
तब तू लगा हुआ था पतितों के संगठन में॥
मैं था विरक्त तुझ से जगकी अनित्यता पर।
उत्थान भर रहा था तब तू किसी पतन में॥
बेबस गिरे हुओं के तू बीच में खड़ा था।
मैं स्वर्ग देखता था झुकता कहाँ चरन में॥
तूने दिये अनेकों अवसर न मिल सका मैं।
तू कर्म में मगन था मैं व्यस्त था कथन में॥
हरिचन्द्र और ध्रुव ने कुछ और ही बताया।
मैं तो समझ रहा था तेरा प्रताप धन में॥

मैं सोचता तुझे था रावण की लालसा में ।
पर था दधीच के तू परमार्थ रूप तन में ॥
तेरा पता सिकंदर को मैं समझ रहा था ।
पर तू बसा हुआ था फरहाद कोहकन में ॥
जीसस की 'हाय' में था करता विनोद तू ही ।
तू अंत में हँसा था महमूद के रुदन में ॥
प्रह्लाद जानता था तेरा सही ठिकाना ।
तू ही मचल रहा था मंसूर की रटन में ॥
आखिर चमक पड़ा तू गांधी की हड्डियों में ।
मैं था तुझे समझता सुहराब पीले तन में ॥
कैसे तुझे मिलूंगा, जब भेद इस क़दर है ।
हैरान होके भगवन आया हूं मैं शरन में ॥
तू आब है रतन में सौन्दर्य्य है सुमन में ।
तू ज्ञान है किरन में विस्तार है गगन में ॥
तू ज्ञान हिन्दुओं में ईमान मुस्लिमों में
विश्वास क्रिश्चियन में तू सत्य है सुजन में ॥
हे दीनबन्धु ! ऐसी प्रतिभा प्रदान कर तू ।
देखूं तुझे दृगों में मन में तथा वचन में ॥
कठिनाइयों दुखों का इतिहास ही सुयश है ।
मुझको समर्थ कर तू बस कष्ट के सहन में ॥
दुख में न हार मानूं सुख में तुझे न भूलूं ।
ऐसा प्रभाव भर दे मेरे अधीर मन में ॥

—पं० रामनरेश त्रिपाठी

ग़ज़ल।

हमारी आज़ादी के भी दुशमन हमारे भाई खड़े हुये हैं।
यही वजह है कि हिन्द वाले जहां में पीछे पड़े हुये हैं॥
खुदा ही हाफ़िज़ है इस चमन का बताए कोई बचे तो कैसे।
कि जो हैं माली वही हैं गुलचीं वही सितमगर बने हुये हैं॥
बमिस्ल तूती ज़बान सीखी खुशी २ से शुरू में हमने।
यही वजह है ज़ुबान बन कर उर्दू के मुंह में पड़े हुये हैं॥
चढ़ाया फ़ैशन का भूत हमने सिरों पै अपने हज़ार दिल से।
गले से आ कर चिपट गया है उसी के वश में पड़े हुये हैं॥

—प्रो० ईश्वर

चुप रहो।

चुप रहो! ऐ निर्बलो, हम हैं सबल,
तुम हमारे दास हो हम नाथ हैं।
मार सहने को बने हो तुम अबल,
मारने को ही हमारे हाथ हैं॥ १॥
चुप रहो! ऐ निर्धनो, हम हैं धनी,
जो करें हम श्रेय हमको है सभी।
'चंचला' दासी हमारी है बनी—
क्यों करे तुम पर दया हम सब कभी॥ २॥
चुप रहो! कृषको, हमीं भू-पति सुनो!
वे कहे सौबार बेगारी करो।

हम न देंगे ध्यान, तुम सौसिर धुनो,
'दीन' देकर, तब जियो चाहे मरो ! ॥ ३ ॥
चुप रहो ! कुलियो, लड़ो मत हर घड़ी,
देख लो पूँजी हमारी है बड़ी ।
बात तुम 'मिल-मालिकों' की मान लो,
दाम कम लेकर, करो मिहनत कड़ी ॥ ४ ॥
चुप रहो ! ऐ शासितो, तुम चुप रहो !
शासकों के मुँह कभी लगना नहीं ।
जो कहें हम, तुम उसे चुप हो सहो,
नियम पालन से कभी भगना नहीं ॥ ५ ॥
चुप रहो ! ऐ 'दीन दारो,' चुप रहो !
शक्ति के आगे न चलती 'दीन' की ।
हम न मानेंगे तुम्हारी, कुछ कहो,
नीति है यह, है न बात नवीन की ॥ ६ ॥
आदि से ही हैं बली होते बढ़े,
दुर्बलों की दाल कब गलनी कहाँ ?
'जो लिये लाठी उसी की भैंस है' ।
रिक्त-हस्तों का नहीं कुछ भी यहाँ ॥ ७ ॥

वंशी को फिर बजाओ।

[१]

वह प्रेम की कालिन्दी भारत में फिर बहाओ।
गौएँ कराहती हैं इनको तो टुक बचाओ।
निज पैर पर खड़े हो हमको यही सिखाओ।
सुखतान फिर लड़ाओ बंशी को फिर बजाओ॥

[२]

भारत के ग्वाल गणको टुक बोलना सिखाओ।
मानुष इन्हें बनाओ संसार में जिलाओ।
भारत की ये बेचारी अबला पुकारती हैं।
इनको तो सुख दिखाओ बंशीको फिर बजाओ॥

[३]

बंधन में यह पड़ा है वसुदेव नाथ भारत।
निज रूप को दिखाकर आकर इसे बचाओ।
यह फूट बाल-घातिन फिरती है पूतनासी।
प्राणों को खैंच उसके बंशी को फिर बजाओ॥

[४]

यह मातृ-भू-यशोदा फिर दर्श चाहती है।
उसको दरश दिखाकर ढाढ़स तो कुछ दिलाओ।
इस धर्म-वृन्दावन को अब नाथ, लहलहाओ।
दुखियों को फिर बचाओ बंशी को फिर बजाओ॥

[५]

लड़-लड़के मर गये हम शालीनता न आई ।
तेरे बिना कन्हैया;-अब तो हमें बचाओ ।
आनन्द प्राणदाता निज रूप को दिखाओ ।
विस्तीर्णपथ बताओ, बंशी को फिर बजाओ ॥

[६]

अब जाति लाज भारत की द्रौपदी रमा की ।
साड़ी ये एकता की आकर प्रभो! बढ़ाओ ।
आफ़त में ये पड़े हैं भारत के दीन पाण्डव ।
इनको तो अब बचाओ, बंशी को फिर बजाओ ॥

[७]

भारत का पुत्र अर्जुन काहिल य हो रहा है ।
तुम कर्म्मयोग आकर इसको ज़रा सिखाओ ।
असहाय हो युधिष्ठिर-भारत पुकारता है ।
मानसका बल दिखाओ, बंशी को फिर बजाओ ॥

[८]

जातीय मान जीवन इस देह में विराजें ।
पीछे न पग हटावें वह मन्त्र अब सिखाओ ।
भारत में हो हमारा शुभ जन्म दीनबन्धो ।
इस आसको पुराओ, बंशी को फिर बजाओ ॥

[६]

यह भेद भाव आकर भारत से अब हटाओ।

जातीय सूत्र में सब सन्तान को बँधाओ।

आलस्य दीनताको भारत से फिर हटाओ।

यह भीरुता भगाओ बंशी को फिर बजाओ॥

—जीवानन्द शर्मा

भारत की जय।

[१]

दयामय! भारत की जय हो न हमको कोई भी भय हो।

अलसता पर तन की जय हो,

चपलता पर मन की जय हो।

कृपणता पर धन की जय हो,

मरण पर जीवन की जय हो॥

पवित्रात्मा का प्रत्यय हो, दयामय! भारत की जय हो॥

[२]

हमारी असि न रुधिर रत हो,

कोई कभी हताहत न हो।

शक्ति से शक्ति न अवनत हो,

भक्तिवश जगत एकमत हो॥

वैरियों का वैरक्षय हो, दयामय भारत की जय हो॥

[३]

भीति पर प्रीति विजय पावे,
रति पर नीति विजय पावे ।
द्रोह का काम न रह जावे,
मोह का नाम न रह जावे ॥
तुम्हारा निश्चल निश्चय हो, दयामय भारत की जय हो ॥

[४]

कर्म को कभी न हम त्यागें,
धर्म में अनुरागें पागें ।
भक्ति को छोड़ न हम भागें,
मुक्ति के लिये सदा जागें ॥
हृदय निर्मल निसंशय हो, दयामय ! भारत की जय हो ॥

[५]

देह तक के हम दानी हों,
मनुजता के अभिमानी हों ।
सभी तत्वों के ज्ञानी हों,
तुम्हारे सच्चे ध्यानी हों ॥
त्याग के हित ही संचय हो, दयामय ! भारत की जय हो ॥

[६]

रहे कटि कसी पुण्य-पथ में,
बढ़े उद्योग मनोरथ में ।

न हठ हो यथातथ में ,
शान्ति इति में हो सुख अथ में ॥
सर्व्व संसार सदाशय हो, दयामय ! भारत की जय हो ॥

[७]

वृत्तियां बनी रहें बस में ,
न विष मिलने पावे रस में ।
बहे शुचि शोणित नसनस में ,
कमी हो कभी न साहस में ॥
आप अपना ही आश्रय हों, दयामय ! भारत की जय हो ॥

[८]

सफलता मिले परिश्रम में ,
न बाधा हो कार्य्यक्रम में ।
भरा उत्साह रहे हम में ,
लगे हम रहें सदुद्यम में ॥
महीपर ही स्वर्गोदय हो, दयामय ! भारत की जय हो ॥

—मैथिलीशरण गुप्त

मेरा देश ।

—:*:—

मेरा देश, देश का मैं, देश मेरा जीवन प्राण,

मेरा सम्मान मेरे देश की बड़ाई में ।

जीऊँगा स्वदेश हित, मरूँगा स्वदेश काज,

देश के लिये कभी न फसूँगा बुराई में ॥

भीषणे भयंकर प्रसंग में भी भूल के भी,

भुलूंगा न देश हित राम की दुहाई में ।

जबलों रहेगी सांस सर्वस भी लगा दूंगा,

ईश को भी झुकालूंगा देश की भलाई में॥

चर्चा जहाँ देश की हो मेरी जीभ वहीं खुले,

और नहीं खुले कहीं खुदा की खुदाई में ।

मेरे कान गान सुने सांचे देश भक्तन के,

और गान आवे कभी मेरे ना सुनाई में ॥

मेरे अङ्ग रङ्ग चढ़े एक देश प्रेम को ही,

और रङ्ग भङ्ग होके बूड़ें जा तराई में ।

मेरो मन मेरो तन मेरो धन मेरो जीव,

मेरो सब लागे प्रभु देश की भलाई में ।

—पं० गिरधर शर्मा

वीर प्रण।

न होने देंगे अत्याचार,
लड़ जायेंगे न्याय पक्ष पर करके हृदय उदार। न होने०॥
अन्यायी अन्याय करें यों हाय ! सरे बाज़ार,
और खड़े चुप देखें हम तो नयनों को धिक्कार॥ न होने०॥
प्रबल अनल में जलना हो या चलना असि की धार,
पर-पीड़न प्रतिकार हेत है हमको सब स्वीकार। न होने०॥
अत्याचारी दो यदि होंगे तो होंगे हम चार,
हमें न पग भर हटा सकेगी रण से मारा मार॥ न होने०॥
आवें दुष्ट सतावें,—आवें खायें ज़ख्म हज़ार,
पर-उद्धार हेत दीनों के, हैं हम हरदम त्यार। न होने०॥

—सनेही

गाफ़िल पड़ा हुआ है हिन्दोस्तां न समझो।

बेकार जाने वाली आहो फ़ुग़ां न समझो।
बिजली निहां है इनमें इनको धुंआ न समझो॥
अफसानये अलम है क़िस्सा है दर्दो ग़म का।
इस मेरी दास्तां को तुम दास्तां न समझो॥

धोखे कहीं न खाना मुर्गाने रहने गुलशन।
सैयाद इसको जानो तुम बागवां न समझो॥
ग़फलत की नींद से अब चौंका है चौंक उठा है।
ग़ाफिल पड़ा हुआ है हिन्दोस्तां न समझो॥
मालूम है चमन में बिजली कभी गिरेगी।
महफूज है हमारा ये आशियां न समझो॥
मुद्दत से जानता हूं बर्सों का तजुर्बा है।
नामेहरबां को हरगिज़ तुम मेहरबां न समझो॥
कुछ सोच कर समझ कर खामोश हो गया हूं।
मैं बे दहन नहीं हूं तुम बे जबां न समझो॥
"बिसमिल" है नाम मेरा मैं ख़ादिमे वतन हूं।
तड़पोगे जिन्दगी भर ऐ मेहरबां न समझो॥

—'बिसमिल' इलाहाबादी

बिना स्वाधीनता पाये।

बहुत दिन हो गये दासत्व में रहते हुए हमको।
हैं गुजरीं मुद्दतें यह आफतें सहते हुए हमको॥
भये कितने ही दिन दुख-सिन्धु में बहते हुए हमको।
हुईं सदियां दुखी हो दर्दे-दिल करते हुए हमको॥
मुसीबत पर मुसीबत आज तक सहते चले आये।
नहीं अब चैन ले सकते बिना स्वाधीनता पाये॥

हमारा मुल्क लेकर आज वह सरदार बन बैठे।
वह मालामाल बन बैठे, हम नादान बन बैठे॥
किया कंगाल भारत को उधर ज़रदार बन बैठे।
हमें मूरख बना कर ख़ूब ही हुशियार बन बैठे॥
रहे वह अब तलक धोखाधड़ी में सब को भरमाये।
नहीं अब चैन ले सकते बिना स्वाधीनता पाये॥

मिला गुरु हमको गांधी सा, है हक़को आज पहचाने।
असहयोगान्दोलन से हुए हैं ख़ूब मस्ताने॥
जो अब तक कर चुके वह अपने अत्याचार मनमाने।
यहीं तक ख़त्म है उनका, इधर हम ठान हैं ठाने॥
जिसे सुनना हो आकर के सुने, सुनता चला जाये।
नहीं अब चैन ले सकते बिना स्वाधीनता पाये॥

है उनकी बन्दरी घुड़की, हमारे पास हिम्मत है।
उन्हें तलवार, हमको आत्मिक भावों की कूवत है॥
उन्हें है मारने की लत, इधर मरने की ताक़त है।
वह सब को मारडालें, यह महज़ उनकी हिमाकत है॥
है क्या मुमकिन कि हिन्दुस्तान अब पीछे क़दमलाये।
नहीं अब चैन ले सकते, बिना स्वाधीनता पाये॥

अगर बरबाद होंगे, तो नई सृष्टी रचा देंगे।
नहीं आबाद होंगे तो विजय-डंका बजा देंगे॥
रहेंगे या मिटेंगे, हर तरह से ही मजा देंगे।
कोई दिन आयगा, जब साज हम अपना सजा देंगे॥

"बिपन"-भारत चमन होगा, दिवस दोबारके जाये।
नहीं अब चैन ले सकते बिना स्वाधीनता पाये॥

"बिपिन"

वे बन्दों से डरें क्या जो खुदा से डरने वाले हैं

कभी अहले वफा तेगे सितम से डरने वाले हैं।
निसारे मुल्क हैं अपने वतन पर मरने वाले हैं॥
मसीही दौर में अहले खुदा भी मरने वाले हैं।
पिदर के मिलने वाले कब पिसर से डरने वाले हैं॥
रहा क़ायम अगर ये जोश क़ौमी बाग़े आलम में।
गुले मक़सद से दामन हम भी अपना भरने वाले हैं॥
ज़माना चाहिये मिटने को इनके अच्छे होने को।
कहीं ये जख़्म दिल आसानियों से भरने वाले हैं॥
वतनपर क्यों न मरजायें, वतन पर क्यों न मिट जायें।
कि आख़िर एक दिन हम मिटने वाले मरने वाले हैं॥
हमारी शोरिशों पर यह समझना चाहिये उनको।
वो बन्दों से डरें क्या जो खुदा से डरने वाले हैं॥
हमारी ख़िदमतों का तो कभी चर्चा नहीं करते।
सुना है सर पै वोह इलज़ाम उल्टा धरने वाले हैं॥
वतन वालों ने बाँधी है कमर ऐ हजरते 'बिसमिल'।
नयेसर से जहाँ में नाम पैदा करने वाले हैं॥

—'बिसमिल' इलाहाबादी

पोल हमीं ने खोली है।

मित्रो आओ खेलें मिल कर सत्याग्रह की होली है।
रक्त बहे तो समझें उसको रंग लाल या रोली है॥
असहयोगियों का समूह इत उत सैनिक की टोली है।
प्रेम द्रोह सों दुहूं ओर की भरी गुलाली झोली है॥
करना समुचित नहीं स्वप्न में कुछ भी टालमटोली है।
गन की गोली खाओ सुख से समझ भंग की गोली है॥
नौकरशाही की धमकी को समझो एक ठठोली है।
गनमशीन को दिल में समझो पिचकारी इन पोलो है॥
देशभक्त के मुख में हरदम यही निकलती बोली है।
असहयोग करके सरकारी पोल हमी ने खोली है॥

—लेखक श्री 'बाब'

बलि-वेदी का सन्देश।

—:०:—

(१)

नहीं लिया हथियार हाथ में, नहीं किया कोई प्रतिकार
"अत्याचार न होने देंगे" बस, इतनी ही थी मनुहार॥
सत्याग्रह के सैनिक थे ये, सब सह कर रह कर उपवास।
वास बन्दियों में स्वीकृत था, हृदय-देशपर था विश्वास॥

(२)

मुरझा तन था, निश्छल मन था, जीवन ही केवल धन था।
मुसलमान हिन्दूपन छोड़ा, बस, निर्मल अपनापन था॥
मन्दिर में था चाँद चमकता, मसजिद में मुरली की तान।
मक्का हो, चाहे वृन्दावन, होते आपुस में कुरबान॥

(३)

सूखी रोटी दोनों खाते, पीते थे गङ्गा का जल।
मानों मन धोने को पाया, उसने अहा! उसी दिन बल॥
गुरु गोविन्द! तुम्हारे बच्चे, अब भी तन चुनवाते हैं।
"पथसे विचलित न हो" अहा! गोली से मारे जाते हैं॥

(४)

गली-गली में अली-अली की, गूँज मचाते हिलमिल कर।
मारे जाते कर न उठाते, हृदय चढ़ाते खिलखिल कर॥
कहो! करें क्या, बैठे हैं हम, सुने मस्त आवाज़ों को।
धोते हैं रावी के जल से, हम इन ताजे घावों को॥

(५)

रामचन्द्र मुखचन्द्र तुम्हारा, घातक से कब कुम्हलाया?
तुमको मारा नहीं वीर! अपने को उसने मरवाया॥
जाओ, जाओ, जाओ, प्रभु को पहुंचाओ स्वदेश-सन्देश!
गोली से मारे जाते हैं, भारतवासी हे सर्वेश!

(६)

रामचन्द्र तुम कर्मचन्द्र सुत, बन कर आ जाओ सानन्द।
बारबार मर कर दिखलाओ, आर्य्यों का आत्मिक स्वच्छन्द॥
चिन्ता है होवे न कलंकित, हिन्दूधर्म पाक इस्लाम।
गावें दोनों सुधि-बुधि खोकर, या अल्ला जय-जय घनश्याम॥

(७)

स्वागत है सब जगतीतल का, उसके अत्याचारों का।
अपनापन रख कर स्वागत है, उसकी दुर्बल मारों का॥
हिन्दू-मुस्लिम-ऐक्य बनाया, स्वागत उन उपहारों का।
मर मिटने के दिवस, रूप धर आवेंगे त्यौहारों का॥

(८)

गोली को सहजाओ जाओ! प्रिय अब्दुलकरीम जाओ!
अपनी बीती हुई खुदातक, अपने बन कर पहुंचाओ॥

* * * * *

क्यों मारा? हा! हा!! क्यों तोड़ी, ईसाकी प्यारी प्रति मूर्ति?
भारतमें कर डाली तुमने, नस-नसमें बिजली की स्फूर्ति॥

"भारतीय-आत्मा"

क्यों आये हो?

(१)

'विमल' विश्व में नहीं व्यर्थ रहने आये हो।
चलो, बढ़ो, कुछ नियत कार्य करने आये हो॥
दुख-बाधा परिताप-बात सहने आये हो।
पर निरीह हो नहीं दास होने आये हो॥
कार्य्य-क्षेत्र है यह जगत्; चलो बढ़ो कर्त्तव्यपर।
कभी हाथ पर हाथ रख अड़ो नहीं भवितव्यपर॥

(२)

कायर होकर नहीं व्यर्थ रोने आये हो।
अपना स्वत्व न आप यहाँ खोने आये हो॥
अकर्मण्य हो नहीं सिर्फ़ सोने आये हो।
कर्मवीर हो देश-दाग़ धोने आये हो॥
यत्न करो, आगे बढ़ो, धरे काल भी केश को।
अमर-सुयश भागी बनो, कर स्वतन्त्र निज देश को॥

(३)

दीन-दुखी का दुःख-शोक हरने आये हो।
उज्ज्वल ऊँचे भाव जगत् भरने आये हो॥
कर वीरोचित कार्य विजय पाने आये हो।
जन्म-भूमि के लिये वीर मरने आये हो॥

देश-कार्य में जो यहाँ हो जाते बलिदान हैं।
जीवन-फल पाते वही, धन्य-धन्य वे प्राण हैं॥

"विमल"

जातीय संगीत।

न होगी क़ौम ऐसी जो न बढ़ कर फिर घटी होगी।
कभी आगे बढ़ी होगी कभी पीछे हटी होगी॥
सुधर जायेगी हालत गर कभी दुखिया किसानों की।
तो देखोगे कि दौलत देश में घर-घर पटी होगी॥
दुशाला ओढ़ कर बैठे हैं हम जिनकी बदौलत यों।
नहीं गम हमको इसका उनकी चादर गर फटी होगी॥
कमीना उन को समझा हूं जो सीना साफ़ है बिल्कुल।
किसे मालूम था कि "मेरी समझ ऐसी लटी होगी"॥
मिलेंगे स्वत्व सब है किसका यह साहस जो रोकेगा।
चरण अंगद का बन कर क़ौम जब इस पर डटी होगी॥
जिला दे क़ौम, को यकबार फिर ला दे वही हालत।
खिला दे आके कोई क्या कहीं ऐसी बटी होगी॥
रहा अभ्यास ऐसा ही तो कुछ ही दिन में ऐ मित्रो।
अदा से लेखनी पर नाचती कविता नटी होगी॥
सनेही को ठसक वैभव की दिखलाने वो आये थे।
उसे था दीनता पर गर्व ख़ूब उससे पटी होगी॥

—"सनेही"

माधव !

—:*:—

माधव ! आप सदा के कोरे।
दीन दुखी जो तुमको यांचत सो दानिन के भोरे ॥
किन्तु बात यह तुव स्वभाव के नेकहु जानत नाहीं।
सुनि-सुनि सुयस रावरो तुवढिग आवनको ललचाहीं ॥
नाम धरै तुमको जगमोहन मोह न तुमको आवे।
करुणानिधि तुव हृदय न एकहु करुणा बुन्द समावे ॥
लेत एकको देत दूसरहिं दानी बनि जगमाहीं।
ऐसो हेर फेर फिर नूतन लाग्यो रहत सदाहीं ॥
भांति-भांति के गोपिनु के जो तुम प्रभु चीर चुराये।
अति उदारता सों लै वेही द्रोपदि को पकराये ॥
रतनाकर को मथत सुधा को कलश चारु जो पायो।
मन्द-मन्द मुसुकात मनोहर देवनुको प्यायो ॥
मत्त गयन्द कुवलिया के जो खेलि प्राण हर लीने।
बड़ी दया दरसाय दयानिधि सो गजेन्द्र को दीने ॥
करिकै निधन बालि रावन को राजपाट जो पायो।
तापे करि ऐसान विभीषण सुग्रीवहिं बैठायो ॥
पुण्डरीक को सर्वनास करि मालमता जो लीयो।
ताको विप्र सुदामाके सिर करि सनेह मढ़ि दीयो ॥
ऐसी तूमापलटी के गुन नेतिनेति श्रुति गावें।
शेष महेश सुरेश गनेशहुं सहसा पार न पावें ॥

इत माया अगाध सागर तुम डोबहु भारत नैया।
रचि महभारत कहूं लरावत अपु में भैया भैया॥
या कारण जगमें प्रसिद्ध अति 'निबटी रकम' कहाओ।
'बड़े बड़े तुम मठा धुंवारे' क्यों साँची खुलवाओ॥

—सत्यनारायण कविरत्न

शुभेच्छा।

न इच्छा स्वर्ग जाने की नहीं रुपये कमाने की।
नहीं है मौज करने की नहीं है नाम पाने की॥
नहीं महलों में रहने की नहीं मोटर पै चलने की।
नहीं है कर मिलाने की नहीं मिस्टर कहाने की॥
न डिग्री हाथ करने की, नहीं दासत्व पाने की।
नहीं जङ्गल में जाकर ईश धूनी ही रमाने की॥
फ़क़त इच्छा है ऐ माता! तेरी शुभ भक्ति करने की।
तेरे ही नाम धरने की तेरा ही ध्यान करने की॥
तेरे ही पैर पड़ने की तेरी आरत भगाने की।
करोड़ों कष्ट भी सह कर शरण तव मातु आने की॥
नहीं निज बन्धुओं को अन्य टापू में पठाने की।
नहीं निज पूर्वजों की कीर्ति को दाग़ी कराने की॥
चहे जिस भांति हो माता सुखद निज-राज्य पाने की।
मरण उपरान्त भी माता! पुनः तव गोद आने की॥

—लक्ष्मीनारायण मिश्र

स्वाधीनता ।

कोकिल बनकर स्वतन्त्रते तू, राग मुक्ति के गाती है ।
मन्द-वायु बनकर झोंके दे-देकर सुमन खिलाती है ॥
सञ्जीवनी-शक्ति है तुझमें, मृत-जातियां जिलाती है ।
हो जाते हैं वीर अमर तू ऐसे अमृत पिलाती है ॥
कर्म-क्षेत्र में डटे हुए हैं, तेरे ही आराधक हैं ।
तुझे प्राप्त करके छोड़ेंगे, देखें कितने बाधक हैं ॥ १ ॥

बच्चोंको अपनी सुन्दरता दिखला कर ललचाती है ।
मन्त्र-मुग्ध करके मर्दोंको स्वाभिमान सिखलाती है ॥
अमरों में तू अमर हुई है, असुरों में पछताती है ।
विबुधोंमें विनोद करती है, वीरोंपर बलि जाती है ॥
तेरे भक्तों पर प्रहार कर, खल जनभी छक जाते हैं ।
शेर शहीदों के शोणित में, तैर-तैर थक जाते हैं ॥ २ ॥

तू ही सुन्दर कल्प-लता है, तू चारों फल देती है ।
तूही सच्ची कामधेनु है, सुख वैभव-बल देती है ॥
तूही मञ्जु मेघ-माला है, तृषितों को जल देती है ।
तू चन्द्रिका सदृश शीतल है, विकलोंको कल देती है ॥
हिम-गिरपर अपनीमहिमासे, धवल ध्वजाफहराने दे ।
[illegible], भरने दे, लहराने दे ॥ ३ ॥

विचलित होंगे कभी नहीं जो, फक्त कारागारों से।
जंजीरों से, हथकड़ियों से, गोलों की बौछारों से॥
दमन-नीति-दावानल-दुख से, दारुण अत्याचारों से।
कूट-नीति से, भेदभाव से, पशुबल के व्यवहारों से॥
जिन्हें त्याग-बलिदान रुचा है, भय के भाव विलीन हुए।
स्वाधीनते! तुझे पाकर वे, सभी भांति स्वाधीन हुए॥ ४॥

तेरी सेवा से मानव-गण, यदि न यहाँ वञ्चित होवें।
सबकी उन्नति के विकाश के, तो साधन सञ्चित होवें॥
पराधीनता के पञ्जे में, वे न फँसे किञ्चित होवें।
विश्व-बन्धु बनकर सज्जनासे, स्नेह-सलिल सिञ्चित होवें॥
बस अपने-अपने हृदयों पर, अपना ही शासन होवे॥
मन-मन्दिर में सौम्य-रूप से, तेरा सिंहासन होवे॥ ५॥

—एक राष्ट्रीय आत्मा

शुभे ! स्वागत।

देवी स्वाधीनते ! पधारो।
कोटि-कोटि हत्-कमल बिछेहैं, उनपर अपना आसन धारो।

(१)

दर्शन की उत्कंठा धारे, तरस रहे हैं भक्त तुम्हारे।
तन, मन, धन अर्पण करने को, माता प्रस्तुत हैं सुत सारे॥
छूनेको पद-पंकज प्यारे, खड़े हुए हैं हाथ पसारे।
क्षण-क्षण कल्प समान बीतता, अब तो अपना रोष बिसारो॥
देवी स्वाधीनते ! पधारो।

(२)

भारतको क्यों भूल रही हो ? हो इतना प्रतिकूल रही हो !
क्या पश्चिम ऐसा प्यारा है ? जिसमें भूलेभूल रही हो॥
फहरा वहीं दुकूल रही हो ! गौर-वर्णपर फूल रही हो।
किन्तु; पूर्व तो जन्म-भूमि है, यह तो मनमें ज़रा विचारो॥
देवी स्वाधीनते ! पधारो।

(३)

जबसे तुमने किया किनारा, दुःशासन ने तम बिस्तारा।
नग्न कर दिया, हत भारतको, हीर निकाला, चीर उतारा॥
और बहा ज़ुल्मोंकी धारा, मन-माना आतङ्क प्रचारा।
अब यह सब असह्य है, माता ! भीम-शक्ति बन कष्ट निवारो॥
देवी स्वाधीनते ! पधारो।

(४)

अब अनुकूल वायु बदली है; हिन्द-बाटिका सुफल फली है।
कुम्हलाई थी आशालतिका, उसमें मुकुलित हुई कली है॥
शक्ति फूटकी टूट चली है; हुई परिष्कृत शान्ति-गली है।
बलि-वेदी परि-पूर्ण हो चुकी आकर मंगलमस्तु, उचारो॥
देवी स्वाधीनते! पधारो।

(५)

तपी तुम्हारा ध्यान धर रहे; तपो-भूमिमें भक्ति भर रहे।
अगणित हाय! कलेवर कोमल, सहन मानसिक कष्ट कर रहे॥
आत्म-त्यागका सिन्धु तर रहे; और देशका ताप हर रहे।
गोते भँवर दे रहे उनको, तूफ़ानोंसे शीघ्र उबारो॥
देवी स्वाधीनते! पधारो।

(६)

यदि, अब भी न दया उर आई; रही निठुरता यों ही छाई।
तो निश्चय भारतकी हिम्मत, टूट जायगी बँधी बँधाई॥
फिर न बनेगी बात बनाई; सहनी होगी तुम्हें हँसाई।
इससे कृपा करो करुणा-मयि! अभी समय है दशा सुधारो॥
देवी स्वाधीनते! पधारो।

(७)

जयति स्वर्गकी प्यारी, आओ, नन्दन बनकी क्यारी आओ।
दीन जनों की दुःख-नाशिनी, कृषकोंकी फुलवारी आओ॥

(५)

जय जय वेद चतुर्मुख, अखिल-भेद ज्ञाता।
सु-विमल-शान्ति-सुधानिधि, मुद मंगल-दाता॥

(६)

विलसति कण्ठ-विहारिनि, पावनि, श्री गंगा।
उपवन-विपिन-अलंकृत शोभित शुचि अंगा॥

(७)

उमँगत अगम पयोनिधि, चरन-कमल सेवी।
सुलभ सुहाग सजावति प्रनत प्रकृति देवी॥

(८)

सु जल, सु-व्योम सु-वारिद सु-विमल जल सरिता।
सुपवन, अवनि मनोहर बल वैभव-भरिता॥

(९)

जय जय विश्व विदाम्बर, जय विश्रुत नामी।
जय जय धर्म-धुरन्धर, जय श्रुति पथ-गामी॥

(१०)

अजित अजेय अलौकिक, अतुलित-बल-धामा।
पूरन प्रेम-पयोनिधि, शुभ-गुन-गन ग्रामा॥

(११)

हे प्रिय, पूज्य परम मम, नमो नमो देवा।
बिनवत तीस कोटि जन, ग्रहन करहु सेवा॥

(१२)

श्री भारत-शुचि आरति, जग-मंगल करनी।
मंजुल-मधुर-पद-ध्वनि, बुध-जन-मन हरनी॥

(१३)

पुनि पुनि प्रेम समन्वित, जो कोई गावै।
सुलभ, स्वदेश-सहायक, शुभमति गति पावै॥

—श्रीधर पाठक